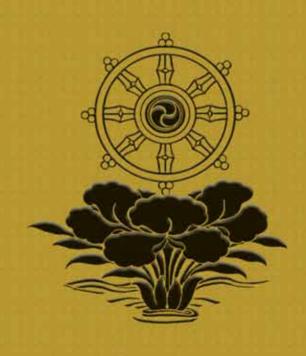
第写'题 |

अहाँ नृप्यन्ते स्था अहाँ नृप्य निष् ज्ञन नृज्य सम्बद्धा



अद्गायाया अक्षेत्रसम्बद्धान्यसम्बद्धान

ন্শুন:ভগ নাব্ৰু:ব্নু:বা

सर्केन् पर निर्देन केन निर्मा पर निर्मा निर्	2
कें अ'सरें द'र'न्ट्'सरें द्'न १५'म।	10
न्वे अर्भर्त्राष्ट्रम् लिटार्स्रेम् स्थाम् शुर्भास्य सुनामा	17
বপ্দ:ম:দ্র্রাদ্:মা	26
রবা.বহপ.রবা.গু৴.য়৾৵.ব৴.ব৵৴.ব৷	27
दर्भ:अ.चेश.केश.सर.य.चेट.स	30
दर्भ:चेश:क्रेश:सर:चन्द्राः।	38
বাব্ৰ-শ্	40
श्रेट्यी:इस्य:य्ट्या	43
स्रावस्य क्रें सके दाक्ष या माना विष्य	46
न्नरःसॅं ख्र.चन्न्रन्।	48
र्देवःखःचन्पदःम्।	49
रेगा हो राख्य सायक राया	56
वरःषःनेदेः मुःदतुरः च नवरः च	60

न्गान:ळग

या चिया या या या या विष्ठा स्वेट । विष्ठा या भी । या के न	
নপ্স:শা	64
इसम्वेशःग्रीःस्टार्सेःद्रःश्लीःसकेट्राद्राप्तस्याग्रीःइसायरः	
নৰ্শ'শ্।	70
सर्दरःवसुरुषः संदेः देव।	74
বিষশ্বসংখন বিষ্ট্রেশ্য শ্বা	76
মর্ক্রব:हेट्-नङ्ग्रव:न।	77
শ্ৰদ্ধান্থ	81
र्गि:देव:देव:दा	86
ने नावम त्या श्रुमाना	95
বিষশ্বাশ্বর হ্বাশ্বর হ্বাশ্বর হা	102
বশ্বর র্টের নে র্যুবাশ ন নে না	102
हेंग्। নতমানু র্ট্রন্ নতমান্য র্মান্য বিষ্কার্ম র	
ম্ব'দ্রী	108
র্মিন্ ষ'নত্ম'থ'র্মিন্ম'ন'থু।	111

न्गारःळग

तुरःनःगशुस्राग्रीःक्सायदेःस्नःपृत्री	116
इशन्दर्भ्दर्भंग्रायायाया	119
सर्वेट.क्रेट.ज.श्र्यायात्र.संत्र.संत्र.संत्र.संत्र.संत्र.संत्र.	127
क्ष'न'न्र'क्ष'भेव'ग्री'र्न'न्रो	129
ন্ট্ৰ'ট্ৰাম'ন্ৰ্ম'ন্-'ন্ত্ৰ'ন'অ'ৰ্ম্ম'ন্নাম্য্ৰ	
797.71	139
বাব্ধাবাইশ্বাধান্বন্ধের বা	
<u> </u>	142
न्नर सॅदि ज्ञर अ रे अ न १ न ।	147
<u> </u>	150
इस'मदे'न्हे'न'नभू	152
<u> </u>	161
নর্মার্'ব্'ব্বা'ব্বর্'র্মার্স্র্রা	164
<u> </u>	168
৫5ৢয়৾৽ঢ়ৢয়৾৽য়ৣ৾৽ড়ৢ৾য়৽য়ৼ৽য়ঀৢঀ৽য়	176

न्गान:ळग

নার্নাশ তব শ্রী শ্লী জ্বান প্র না	181
নার্নাশ তব মাণ্ডির মেই শ্বের উনা শ্রী ক্রেনা	186
য়ড়ৢ৾৾৾৾ৼ৵৻য়৾৾ঽ৾৻য়৾৾৵৻য়৾৾ৼ৻য়৾৵ঀ৾৾৾৻৻য়৾	187
इश्र-प्र- विष्या श्रित् । विष्या ।	188
प्रथम:र्ट.भषु:क्रम:स्याविया:मा	192
इसक्रामारमी वर्षिर, द्वार वर्ष्य रामा	192
মীয়য়৾৾য়ৢ৾য়য়ৼয়ঀৼয়	193
न्वो नदे स्थास्य न्वन्या	197
हें व : बेंद्र श : के व : वेंदि : श : यद : च : व द : च !	200
श्ची'नवे'श्चारम्बर्मा	201
हेंब्रहेंद्रश्रःकुट्र-दुदेश्यःसट्य	202
व्रायास्यारेयाम्बर्गा	203
श्रेश्वश्चादाची विद्याद्वाद्वादा स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप	
নপ্স'না	204
वर् नःक्षःतुवे सेससःवर्द्धाः वी वित्रस्य नित्रम्	211

न्गारःळग

श्रेश्रश्राध्यात्र वृद्दानी श्रीतानी क्राम्यत्र मान्यत्र मा	215
सर्दुरमःथ्रुत्रसःधितःमःकुरुःसरःन्निनःम।	217
র্ষ্রন্মানপ্র্না	219
ম'র্ছ্রব'ন'নপ্র্'না	229
भूतःसहस्रान्त्रन्ता	235
दर्-वेश-सेर्-च-च-वर्-च।	237
तर्-वेशःसेर्-परे-र्स्नेसशःवह्ना-नवर्-पा	239
বর্ম্বান্ত্র শ্রুষ্ক্রমন্তর্বান্ত্রপূর্ণা	241
র্ম্রবা'নী'ব্নব'র্ম'নপ্ব'মা	254
सळ्द हेट्-च-95-म	257
श्चेट्राची र्स्कृत्या स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्थ	262
क्रॅशःग्रीः विद्रायम् निष्ठाः प्रतिः श्रीं त्रशः देवः वसुः वा	264
ক্রু:ক্রুব:বর্ষ:ব্র:ব্দ:নভশ:ন:নপ্দ:ন।	266
बेर्कुःन्वर्ग	268
শ্বৰ ন্ত্ৰ বা দেখু হ' ক্ৰু নে প্ৰ হ' মা	269

न्गारःळग

শ্বন্মন্য মন্ত্র ক্রি. ব্রপ্ব না	279
মঞ্চম্প্র শ্রী ক্রু নপ্দ শা	284
गीच.पज्रुष्टु.की.चलट.हा	284
इयासराङ्कीयासदे कुं प्रभाता	285
वर्ष्य,यी.य.बर्.या	287
ক্রীব্যব্দপূর্ণ	294
ক্রীব:ক্রুশ্বেম্বপ্র্যা	295
मुंव-मुंश-वन्नश-नु-भुंद-संदे-कृवा	305
কু বি ক্টেব্ ব্ট ব্যা দ্য ব্যব্দ বি ব্য	310
दे'स'वग'क्तेद'क्तुर्भ'सर'न्यप्	312
श्रेश्व,यंवर्या	324
শ্রমশ্বত্ত বার্ট্র শাস্ত্র দ্বিদ্ধ বিশ্বস্থা	327

ब्रम्ह्रियसर्वे र प्रवितानि स्त्रिर इस्त्राचित्र प्रवितानि स्त्रियस्त्र स्वाप्त प्रवित्त स्वाप्त स्

बेरःब्लुन्द्यरःदह्यःन्चुन्यःचर्बेन्व्ययःग्रीया

व्हरान्ययाम्बिन तुराग्चरायाध्यायळवावे॥ व्हरान्ययाम्बिन तुराग्चरायाध्यायळवावे॥

२ चीवाबाक्चिम् | निबाद्याम् स्वाविष्ण स्वावि

स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त-स्त्र-स

য়ড়ৢয়য়৻৻ৼয়৻৴ঀ৻৸৻৴ঀৼয়

त्रवायः स्वर्त्त्रः स्वर्त्त्रः स्वर्त्तः स्वर्तः स्वर्त्तः स्वर्तः स्वरः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वरः स्वर्तः स्वर्

अर्केन्यर पर्हेन् छेट प्रमृत्यर न्या पठत पा

ग्रवशन्दःर्भे विस्रशन्द्रवःग

नेयादयादेव:प्रमूद्राचर्ड्यावातुवायाययाययस्य स्मूद्राव्द्रयार्वेवाययाद्राच्ययाद्राची द्वीया यन्ते वर्षा केत्र प्रेत्र प्रे के'नदे'नन्ग'हेन्'नेश'यर'ग्रु'नदे'ग्रेर'ने'य'र्थेद'न्द्र'नहेंन्य'र्सेद'न्'दर्शेद'न्द्र'विवायकेया नः ईसः संबेशः नुःनः नृः नृःगाः यथः सुनाः वर्षः नः ईसः यः नेः नरः नेः नर्से नः वस्याः सुनाः नरेः धेरॱर्रे वेश ग्रुप्त प्राप्त क्राप्त विवा हुन्त्र प्राप्त इस्र श्रुप्त हुन्य स्वर् रवातुःवसूत्रायदेः ध्रीराते। द्रायात्त्रायाः श्रीदायां त्रे यादेतायर वर्षेतायर वर्षेतायाय केंद्राया <u> २८.चर्सू</u>र्यःस्ट्रास्त्रम् श्रुभाव्यात् स्थान्यःस्थित् स्थान्यःस्य के स्वतःस्य स्थान्यःस्य न्वें अभी न् ने या गुर्या न अभी न प्रति श्री मार्चे । गुर्या प्राम्य मुक्ते न प्रति स्वार मार्चे अपने ने देवे यशिरःरचःभवेषःतरः चैःचवुः श्वेरःर्र् । दिःषः यीषःतरः चैषः देः भवेषः तः तारः द्रभः श्वेषः ह्रथः यन्दर्यम्भारान्दरमञ्जूषम्यायम् विदायदेन्त्रेम् स्वायभ्रेत्रायदेन्त्रे । विद्यभ्रेत्रयः लर.ध्रेय.ध्रूटश.स.झर.यदु.हु.र.जा दे.लर.क्या.यक्ष.वस्य.वस्य.वस्य.६५. ह्याद्यायमायद्यायम्बित्यस्य द्वात्वते द्वीराने द्वीमायाने देन्या वर्षे द्वीमायाने द्वीमा नगायःयःगुरुष्यः नहेन्यः नहेन्यः वस्त्रः नस्त्रः नर्देशःयः गुरुषः ययदः भ्वाशःयः वयुनः स्रे क्षेमार्ने बरहेन प्रकन प्रवेश होनार्ने ।

पानिषायायम् प्रमान्य प्रमान्य

नश्रूषायते देव वे केंग्रण नरु न तदेष स्व स्व कुषा नर्रे अ स्व तद्षा या नर्से द

য়ড়ৢয়য়৻৻ৼয়৻৴৸৻৸৻৴ঀৼয়

त्तर्भूच न्त्राच्या क्ष्याच्या व्यवस्था च व्यवस्या च व्यवस्था च व

यार विया गुरु त्य सुरु य या हर य है स विरा

(पाशुक्षान्य) के पा पी दें त ता (पाने का तका कर्षे दासुया देवा पान के यार विवा वे ही ते ह्या धेव प्यार (हे ह्या त्या तह वा यते ह्या हिता स्वा हिता स्वा हिता स्वा हिता स्वा हिता स्व यरः ग्रे.में.रटः म्रेर.य.यवे.जयः पर्रर: में।) विराधरा ग्रे.में म्रेर.ययः यर्थः म्रेयः पर्यः स्वाधरा स्वाधरा स्व शुःभेषाने गावायासुवायामनवायर्वेसायायार्वेम्यायते । सुन्यर ग्रीः सुन्यर विवायते ध्रीर-द्येर-व्राच्चअः चे क्रब्या ग्री-वृद्य-वृष्य-विग्नित्र ग्रीय-वृष्य-वृष्य-वृद्य-व यादः विया छेषः चुः पः वे स्वर्षः मुषः पर्देशः स्वरः तद्वः ग्रीः द्वरः द्येत्र त्रोय प्रायम् र् नियावयाञ्चियापर् वियावविदार वियाक्तिया प्रति श्वयात्य वियाविता वियाविता वियाविता वियाविता वियाविता वियाविता श्चियावी तिने वी केंबा सर्वे ना तकन्यते म्नान्य धिवाया ने तकन्व ना स्वाम्य स्व णवन यः पर्देन पर के ने नियम भी नियम के र्वे प्यापित्रमा धेव प्रमायक्ष्म क्षेत्रमा भेव प्रमायक्ष्म क्षेत्रमा भेव प्रमायक्ष्म क्षेत्रमा भेव प्रमायक्ष्म वै सेव इ.प. त्व लेग प. क्षे. ची विराधन राष्ट्री ह्या येत हैं या पाये वा विराधन राष्ट्री विराधन पराग्रीः क्षुर्याप्तिः भ्रीरार्भे । (देः यादेः वृत्रः अर्केदः यतः वर्द्देदः याः यावर्ष्ट्रदः याद्याः वावेष्ठे यायवाद्याः व र्यात्मानानुस्यान्ते प्रतास्त्राच्यान्ते स्वायानाने सायानाने सायानान यर्ने तथा चया चे वयया ठन ठेया चु ना वे क्षे अकेन नहु गाविया है स्हेन या धेव वें विषाण सुर साम दी दी र रें।

सुव या वे प्यटान्या यदे देव सर्वेट या या यो या बा सु शुरु यदे ही र देव से स्वर्थ

ग्रवशन्दर्भे विस्रशन्सूद्रया

न्याच्याचितः च्रीता विवास्त्रे विवास्त्रे न्याची न् वर्रेन्र र्सेन् ग्री वन र्से बार्चे यान्यायी बार्चे साथे न है। ने ने बार बार्चे बार वार्चे प्रायर तर्रेन्यते भ्रीताने भ्रीताने वाष्ट्राचा स्टान्य स्वाचा स्वाचित्र <u>२व.र्ष्य.वे.र्ये.र्येप.र्येप्रेप्री विश्वय.२८.श्रियेश्वय.घत.प्रवीर.ह्येप</u> विष्युय.ग्री.स्थ.त. लब्र.मूंल.श्रुवी बुब्र.मै.न.रटा चेतुब्र.स्य.मूंल.नदे.नेब्र.न.ली स्थित.गीव.रे.गीव. रेणारेषा वित्यत्तरे वे में अर्थर के। दि ब्रेन पदि व पदि में में पदि व विषया बिर्याण विषय यते छिरार्ने दियाव क्रिंव सेंट्याय ठव साधिव यते से क्रियाय वे क्रिया चुते ही पाया है। त्योवारावन वर्ते क्षेत्र दे द्वावन निमान का मान के निमान किया दिन दिन किया है निमान किया है निमा है निमान किया है निमान किया है निमान किया है निमान किया है निमा है निमान किया है निमान किया है निमान किया है निमान किया है निमा है निमान किया है निमान किया है निमान किया है निमान किया है निमा है निमान किया है निमान किया है निमान किया है निमान किया है निमा हु नङ्गायान्द्र देव रचा हु द्वे च अवत ध्याया इस्याया हेव सेंद्याया रुव साधिव पते से मे कारा केंद्र पा केंद्र दें विकाण सुद्रकार के से विकार केंद्र में विकार केंद्र मेंद्र में विकार केंद्र में विकार केंद्र मेंद्र मेंद वाववःतगावाःततः देवावःतवःभेवःहो नेवः चः वश्चः वश्चः वश्चः चः वश्चः वश्यः वश्चः वश्यः वश्चः वश्चः वश्चः वश्चः वश्चः वश्चः वश्चः वश्चः वश्चः वश्च च्यायाः चन् सेन् न्दाः चन् नरुषान् वेषासु देषायायायात् वासा च्या न्दाः चन् सेन् यत् वास्य से स्ट्रियायर से चेन केट मिनेव र्ये भीव प्रमास्त्रव प्रति होट प्राप्त सम्बन्ध केट प्रमास्त्र सम्बन्ध प्रमास्त्र प्रमास्त मृत्रेषाय्याः त्र्वे वार्येट्या उव वि सुवायान्टार्या त्रेन्योव यया त्र्वे वार्येट्या उव साधिव यान्यो पार्या पर्या प्र पञ्चीपवार्यात्मवार्यात्मवार्यात्मवार्यात्मवार्यात्मवार्यात्मवार्याः स्वाप्तवेर्यात्मवार्याः स्वाप्तवार्याः स्व ॻॖऀॱक़ॕ॔ॺॱऄॱऄॺॱय़ॱवॆॱ(མॸॕॱལས།)ॻऻॺॺॱॻहॺॱय़ॗॱॸॆढ़ॆॱय़ॖॱॴॱऄॣ॔ॺॱय़ॺॱ(ॷॸ॓ढ़ॱय़ॗॗ)ऻऄॗ॔ॸ॔ॱॻॖऀॺॱॸ॓ॱ चवुष्याचेषाबादपुः स्वार्षित्रवाणु सुदार्षाया स्वार्षाव्याया मेषात्रवाषा स्वार्षाया स्वार्षाया स्वार्षाया स्वार वार्य्याचा अत्यक्ताम्, ख्रियाची नाता स्वाया नावा स्वाया नावा विवासी वार्या वार्

सक्रेस्य प्रस्य प्राय प्रमुद्रश

अबारीय विश्व विश्व क्षण्यात्व प्रद्धा की त्यां का विश्व त्यां की स्त्र की

नात्र अप्तरार्थे । विस्र अप्त सूत्र या

दे.क्षे.व.७व.मूब्याल.सूब्यायात्ते.ट्वा.क्षेवा.चर्चल.सघर.चेथ.सा.लुव.तरायग्रीर. है। यर्ने त्यमा निवार्श्वेर निवार्क्षमा विवायर्षेत्र स्वराय स्वयम् विवायर्थे स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय लट.र्ज्या.पर्ज्ञ.श्रधर.मुट.तर.ट.शु.श्चर्य.ब्या.त.ट.। अर्ट्र.पावय.लगा वेयाम्बुट्यायते ध्रीरार्से विः व अधिवाते। दे द्वामीया वेया के से से देवरा श्रीट्या या नेबान्चेन ने तर्न पति तर्ने न क्वाबान मानिक पति स्वाची वार्म वाष्ट्र वाष्ट्र मानिक पति स्वाची वार्ष वाष्ट्र न्वे र्श्वेट न्वा ब्रिन् श्रीका श्रेवा तारत्व राया न्या तर्देन कवाका वारा धेवा साने र्श्वेट का श्रेवा <u> भ्र</u>ीयः यः देः द्वाः श्वरः यः यः द्वाः यो दः व्याः यो द्वाः यो द्वाः यो द्वाः यो देः यो दे विष्यः यो दे । यो द गुव-५-तन्नुद्र-पते-धुर-र्र-वियानु-पर्वे | दियाव-वियानु-सम्मानुम्यानु बु.ल.चेब.सेब.धेश.कूवब.तपट.चेवब.ज.चक्रेब.धे। चेब.चे.घशब.कट.शहेब.तपु. ग्रेग्राम्यस्य स्वर्णः स्वर्णः वर्षेत्रः प्रत्यः स्वर्णः प्रत्यः स्वर्णः स्वर्णः स्वर्णः स्वर्णः स्वरं स्वरं स तिष्वित्यानितः श्रीत्रान्ति विक्रिक्षान्ति विक्रिक्षान्ति विक्रिक्षानित्र विक्रिक्षानितित्र विक्रिक्षानितित्र विक्रिक्षानितिति विक्रिक्षानिति विक्रिक्षानितिति विक्रिक्षानिति विक्रिक्षानिति विक्रिक्षानिति विक्रिक्षानिति वि विणायाळे दार्येका थे ने का चाबे तका सूर तर्दे दा ग्राट स्थे पका है त्या पद हो स्थे दाया साम्री का पि वर तर्दे दा दी। धेव पते : भ्री पदि र र्सेच पदिव वाद श्रे भ्रागुव अते : श्रुव श्रुव स्व पादिव । वेषायषाधिष्रासुवासुवासुवास्य वाष्ट्रायाच्युवार्ते वेषायक्ष्यायाचीषायाचायाधिवाते। दे

सक्रेस्र पद्स प्राय प्रमुद्द श

चालवः ग्री-र्न्द्रनः ग्रीनः स्वाध्याः स्वाध्यः स्वाध्याः स्वध्याः स्वाध्याः स्वाध्यः स्वाध्यः स्वाध्यः स्वाध्यः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वधः स्वधः

वर्विर नदे वद्यायया वर्ते न इत्यायह्न न।

चिक्नाचे ची (विषय क्षाच्या स्त्रीय प्राप्त स्वयं स्वय

च्चित्रवित्रः क्ष्र्त्रः पाङ्गेष्ट्रस्य प्रकार क्ष्र्यः प्रकार क्ष्र्यः प्रकार क्ष्रित् प्रकार क्ष्रितः क्ष्रितः क्ष्रितः क्ष्रितः क्ष्रितः क्ष्रितः क्ष्रितः प्रकार क्ष्रितः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्ष्रितः क्ष्रितः क्ष्रितः क्ष्रितः क्ष्रितः क्ष्रितः क्ष्रितः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षरः क्षेत्रः क्षेत्

ग्रवशन्दःर्भे विस्रशन्द्रवःग

र्याताङ्गियायत्र अधियायुः श्रयाञ्चात्र व्यापाञ्च वात्त्र वात्त्र वात्त्र वात्त्र वात्त्र वात्त्र वात्त्र वात्त यद्युः नृत्यः क्षुवाः क्षेत्रः विषान्यः सङ्घेतः यदेः यद्युषः दर्वे । वार्षः विषाने नः वार्षः विषाने नः वार्षः ५८। यर व हैं वसुव ५८ द्वारा ही व रा ५८ सह विषा ह ५८ है। दे वा सह वे वुषाया है। वे रापु प्राप्त हुवाया र्षेण्या परि वुषायषा रेस्रवाय प्राप्त विषायाया ट्राच्यार्श्वे व्याचेराचा इसवायवारि। यहार्षा यहार्ष्या यहार्ष्या स्वर्धा स्वरं स्वर्धा स्वर्धा स्वरं स यमायदेव या वे ग्रामा में मारा की मारा वै निञ्चन मुन्ने । दि निवेद गरिग्या भेषा स्थान । विकाम सुद्या परि । देवे पग्रेजातम् वितास्याकृषात्मः स्वापातस्य । वित्रास्याकृषात्मः । वित्रास्य । वित्रास्य । विवास्य । विवास्य । ह्मपायीयाग्रामाने के स्वाप्ता विष्टा हिन् राष्ट्री हिन् राष्ट्री स्वाप्ता याविष्ठा राष्ट्री राष्ट्रा स्वाप्ता विष्ठा क्षेत्राविष्यानम्भवायम् वर्षायान् वर ग्रामा पर्से प्रमानमून प्रमानमुम् वर्षा विस्यारे सार्वे वर्षा विस्यारे सार्वे वर्षा विस्यारे सार्वे वर्षा विस्य धेव र्वे।

.....रे खासुना दर्कय

पान्न ग्रीः क्ष्रिं पान्न प्रमुवायक्ष्य निष्ठ प्राप्त विषय प्रमुवाय क्ष्य प्रमुवाय विषय प्रमुवाय क्ष्य प्रमुवाय क्षय प्रमुवाय क्ष्य प्रमुवाय क्षय क्ष्य क्ष्य

सक्रेस्य प्रस्य प्राय प्रमुद्रश

होर-पटा पर्वर-पटे-पट्टें प्रत्याचित्र प्रत्य प्रत्याचित्र प्रत्याचित्र प्रत्याचित्र प्रत्य प

······व्या विकासर्विसर्दिन्गीः नश्रुवः वर्षे अः स्वः वन्तिः ह्या

त्रीवाबालान्नी ह्वानी हिकावानी ह्वानी हिकावानी ह्वानी हिकावानी हिकावानी ह्वानी हिकावानी हिकावानी हिकावानी हिकावानी हिकावानी हिनावानी हिकावानी हिनावानी हि

केंश अर्देव य दर अर्दे द चम्द या

नावशः इटः में विस्रशः नसूतः या

बुद्रुक्तिम्प्ति वश्च प्रतिविध्य विश्व प्रतिविध्य विश्व विष्य विश्व विष

क्रिंश अर्देव भेश रना दे से दाहेश प्रत्र न र र र

(मर्वटःस्न्रम्भः श्रेन्यपिः वम्याविश्वमःश्री) केषा रचः त्रिः स्वापरः त्रिन्यते विषारचः द्रीया (क्षेच्याचा) अद्रारम् कासु त्व्या प्रति राष्ट्रिय सुदार्थ स्वर्ष प्रति । विषय स्वर्ष प्रति । विषय स्वर्थ । तर्नरः चणायाधिवायरातर्ने द्वा दिवावा चणा चेत्रा ग्री विवायस्य स्वायस्य स्वयस्य स्वायस्य स्वयस्य स्वायस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्यायस्य स्वयस्य स्ययस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स् लक्षाम्बुक्षाम्भुः दिवेर-तुः क्रुकाया हेका बुः तज्ञ दान प्राप्त क्षाया वे वे वे व प्राप्त केवा अर्देव पर्दि । (वाशुअन्य परिवर प्रत्य परिवर पर्वा वाशुक्त परिवर पर्वा वाशिक प्रवास करित के प्रत्य परिवर परिव व.सीट.स.री.व.ताबु.हबारवाट.पश्यावेयात्वी) ह्या.थी.राचट.ताबु.(क्र्यावाटायावेया.थे.क्रायवाटायावेया.थे. भ्रेबायाधिकायबा)यायावास्त्रस्य देन्त्वाप्यस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वि यःस्री वन्यास्त्रीःस्र्रिस्यान्ते नव्यवात्राम्भःस्तरः स्तर्। न्रास्तरः न्रास्त्रा र्येते प्रदेश पावि छित् प्रतः ठव प्रतः पवि प्रते प्रदेश पाविते प्रतः खूँ अशः इस्र शे के रापः लेबला तर्जेबर्ट्यत्रिज्दिर्ध्यक्षात्रेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचे अःगितेषःगञ्जगषःअन्-न्दःर्येःगिषुअःयःनहेवःवःवेःसुदःर्यःनवेःयःहे। नेःवःगञ्जगषः बेन्रहेन्रहेन्रहेन्रायाः विषयान्याविष्ठान्याः विष्ठेन्रहेन् विर्ह्मेष्वावाः विर्ह्मेष्वावाः विर्ह्मेष्वावाः वि वित्रप्रत्यव्ययामृत्र्यापर्दे विष्यप्राद्या दे वे केंबा यकेंग्यकेंग्य विषय केंबा विषय करा यर.पर्वीर.पप्र.विर.षस्ट.तत्राविवायात्रीयायात्रेथ.त.प्रेथ.त.वे.श्रेर.टी विस्ट्रात्यात्रीय. तर्रेन्-पते निव पायत्र निर्धायाया वात्रुवाया सेन्-प्रया विष्ठा विषय स्था विष् यदे छिर्दा में दावा अर्थेदाया अर्थेद ठव'र्वि'व'धेव'यते'छेर'न्ट्। देश'प्रश्रम्मान्व'ग्री'शेश्रम्भार्याद्विप्त'वानुपार्यासेट्'ग्री'

सक्षेत्रशादह्याद्मायाद्वह्या

तालान्ह्र्रेन् क्री.प्रावर्विराला क्र्यां ने वाचिवालाक्ष्रेन त्री. त्रियां क्री वाचिवालाक्ष्रेन त्री. त्रियां वाचिवालाक्ष्रेन त्री. त्रियां वाचिवालाक्ष्रेन विष्यात्रक्ष्या विष्यात्रक्ष्याः विष्यात्रक्ष्यात्रक्ष्याः विष्यात्रक्षयात्रक्षयात्यविष्यवत्यत्यत्यवत्यविष्यवत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्य

योत्रेषायाः यहरायात्राच्यायाते केषा स्रोत्यायायात्रेषात्रा व्यविष्यात्रा व्यविष्यात्रा व्यविष्यात्रा व्यविष्या

र्व न्यायि क्रिंयायि में स्वायं निर्मा में स्वायं स्वयं स्वायं स्वायं स्वायं स्वयं स्वायं स्वायं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं

र्वेन चुर ने मेन राया र्येन न या ना सुरा ने स्थित मेन में स्थित में स्थान में स्थान में स्थान में स्थान में स् विषाग्री पर्विराव विद्यारित विषार्य मासुया विश्व विद्यारित विष्ठीर प्राप्त विष्ठा विष् वतर र्पेन में बिया ने रापा के रिवाया या या वित्र है। दे वि स्वीर की खुला रुवा नु प्रवास वःइःपतेःइअःवेषःवेःश्रेदःपीःध्याःठवःअःधेवःपतेःध्रेरःपदः। पायःहेःधेवःवः(ॐषःश्चेतेः स्यारुव प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत् श्चाप्तराम् वाराम्याप्यवास्त्रम् वाराम्यवास्त्रम् वाराम्यवास्त्रम् वाराम्यवास्त्रम् वाराम्यवास्त्रम् वाराम्यवास्त्रम् राष्ट्रा भ्री भ्री अवसामाविषा साम्री कर्म स्वास्त्र स्वास्त्र महिष्म स्वास्त्र स्वास्त र्दे। निषयः चुरावी भेषार्या वे विश्व वर्षे राया विश्व वर्षे प्राची वर्षे वर्षे प्राची वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे व अव्यापाविषाः वीः याद्याधेवः प्रयाः (व्ययस्य क्रियः विहा) ये अयः वृदः नुः प्रदेशः वाद्याः विहा तशुराचते छिरार्रे | दिबाव प्रवास शुरावे तर्दे दार्शे वाव वार्ये दाहि वा बुराव प्र नवि वाञ्चवाषा गुर से द र्ही ।

न्दान्वायान्दान्त्रिवातुः ह्युद्यायान्दान्दो प्रयासदिवायम् प्रमूचयायाधिवाया यर्देनः यावार्श्वीप्रायावीरिः स्थायीवाती वर्षेप्रायावीरिक्षायावीर्या बेंबबर्य बेंद्र पार्च का धेवर् कें बेंबर्य प्रदा वेवर्त ह्युद्र वर्ष केंद्र प्रदे ही राखनुय पर यानविषायान्ते तर्देन्यते सेयमान्यास्य स्थानियान्ते स्थाने गठिग तृ चेत्र रा र्येत् गुर बेयब द्रार बेयब चुर इयब विव तृ बुद्र वारा वा विव रावे ध्रीर-र्रे विषाप्त्रप्ति ध्रीर-र्रे । (देशवाधिदार्शविक्तिर-तुः विद्युद्रायायदे स्टिन् वर्षायहरू धेवाया) त्रिंन-निर्मान्य विष्णु त.लुब.धे। व.भ.चधुयाबु.युभयम्इयायचटाख्यायचिटाचयानयभागिध्याचीः र्वेशाया वे ह्रानु त्यात्र प्राचित्र विच्या का क्षेत्र प्राचीत्र क्षेत्र में विच्या का क्षेत्र चित्रं प्राचित्रं में देश स्वार्य प्रचित्रं प् वै प्रमूव पर्ठेया तृव परि क्षें व या र्देव में में स्वार प्रायत प्रायत में या में या प्रायत में या प त्वुरायार्ट्स्यायुराधरात्रवापठवायवात्रवाचे वेदायवादिराचवात्रवेदावाचे वेदायवादिराचे विकास विकास विकास विकास विकास र्वाःग्रटः चे च्वाः रुः ह्या पर्दः ग्रुचः पर्दे सम्बदः स्वरः स्वरः चुनः न्वरः न्धरः प्येनः ग्रीः सर्देः

नावशः इटः में विस्रशः नसूतः या

त्रवा)प्रक्रिर्णेव व्हुं त्वेया चेर स्वा । विश्व वा क्ष्या क्ष्य

विश्वयन्त्रम् । विश्वयन्त्यम्यः । विश्वयन्त्रम्यः विश्वयन्त्रम्यः । विश्वयन्त्रम् । विश्वयन्त्रम् । विश्वयन्त्रम् । विश्वयन्त्रम् । विश्वयन्त्रम् । विश्वयन्यः विश्वयन्त्रम्यः । विश्वयन्त्यम्यः विश्वयन्त्यम्यः । विश्वयन्त्रम्यः विश्वयन्त्यम्यः । विश्वयन्त्यम्यः विश्वयन्त्यम्यः । विश्वय

पर्वेत्रपत्ता अन्नेत्रत्या अन्नेत्रप्ता विष्ण चार्या अन्नेत्र्या अन्नेत्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्ता अन्यत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्त्रपत्ता अन्यत्त्रपत्ता अन्यत्ति अन्यत्त्रपत्ति अन्यत्ति अन्यत्ति अन्यत्ति अन्यत्ति अन्यत्ति अन्यत्ति अन्यत्ति अन्यत्ति अन्

ठेवे छेर अहें ५ ठेश छ वे वा

वर्ते राते र्ते वर्तः प्राप्तः द्वा क्रुत् श्री रास्या।

वस्त्र-पर्देश-प

ण्यात्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत

त्र्या न्या स्वाकान क्षेत्र न्या प्राचित्र क्षेत्र न्या प्राचित्र क्षेत्र न्या प्राचित्र क्ष्य न्या प्राचित्र क्ष्य न्या क्ष्य क्ष्य न्या क्ष्य क्ष्य न्या क्ष्य क्ष्य

य्याबान्तातालूर्यात्राचेबाक्त्रात्ताक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्तालूक्ष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्याकृष्यात्ताल्यात्त्रात्त्यात्त्रात्त्

ग्रवशन्दर्भे विस्रशन्स्रवःग

 $\begin{array}{lll} & \text{ The proof of the$

त्यत्वे.कुर्-री-तक्षेत्र.तान्त्रम् ह्यात्तान्त्रम् वित्तान्त्रम् वित्तान्त्रम्यः वित्तान्त्रम् वित्तान्त्रम् वित्तान्त्रम् वित्तान्त्रम् वित्तान्त्रम् वित्तान्त्रम् वित्तान्त्रम् वित्तान्त्रम् वित्तान्त्रम्यम् वित्तान्त्रम् वित्तान्त्रम्यम् वित्तान्तिः वित्तिः वित्तान्तिः वित्तान्तिः वित्तान्तिः वित्तान्तिः वित्तान्तिः वित्तान्तिः वित्तान्तिः वित्तिः वित्तान्तिः वित्तान्तिः वित्तान्तिः वित्तिः वि

र्श्रेणबायाचे प्रमूर्ति प्राचित्र प्राचित्र प्राचीत्र प् यः ब्रेन्यः हेन्न्या ने न्वाः वन्याः स्ने न्यः सन्ते न्यः सन्ते न्यः सन्ते न्याः सन्ते सन्ते न्याः सन्ते सन्ते सन्ते सन्ते सन्ते सन्ते सन्ते सन्ते सन्याः सन्ते सन्ते सन्याः सन्ते स वयापसूर्वापर्वेषायायहुणायाकृत्त् ज्ञूयायवि द्वीराह्मसायापिक वि वि व पसूर्वा हिला वळन्ने वाराक्ष्राधरायवायाचा सेना केन्नियाय महोते वाया हेन् वॉबायाया श्र्वायायार्स्स्रेव्यायदे त्वा वीयार्द्रेवायायारे त्वा खेलाव वे सु क्षे क्षे क्षे स्वा केया वहें ताया ग्राटा ह्वायहें व की लेवा हें वा बेला पर ति कर ति है व वे हवा बाद र पर हें द के द र वि ह र् त्युर्र्र । अि.श्रेन्वार्र्ध्यार्य्येत्रायाः ह्वाय्येत्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः म्बेबाजिटाशुः खुलाचरावलाचरावक्षराप्ते विराधराश्चरायपुः हिरास्त्रां हिरास्त्रां हिरास्त्रां हिरास्त्रां हिरास् डेबर्चित्र्यंत्रम्वात्रहेव् ग्रीर्थेवर्मेवात्रेवर्चर्यात्र्येत्रम्थे। देवर्ग्यत्मिवर्ष यदे स्ट्रिं अदे र्हेण्याया मञ्जीदायदे स्ट्रीया भीवाय वाया प्राप्त स्ट्री

मुख्यस्य मुह्नेन्द्व स्वात्त्र स्वत

वावर्गः न्दः सं विस्रायः वसूत्रः या

प्रतः तर् छेन् स्यामुन धेन प्रतः तर्रे या मिन् केन धेन प्रतः तर् केन स्व प्रतः स्व प्रतः केन स्व प्रतः के

याश्चयत्त्रभ्यत्त्त्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्त्रभ्यत्त्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्त्रभ्यत्त्त्रभ्यत्त्रभ्यत्त्त्रभ्यत्त्त्रभ्यत्त्त्त्रभ्यत्त्त्रभ्यत्त्रभ्यत्तत्त्त्रभ्यत्तत्त्त्त्त्रभ्यत्तत्त्त्त्त्रभ्यत्तत्त्त्

য়ড়ৢয়য়৻৻ৼয়৻৴৻৻৻৻৴ঀৼয়৻

र्बेट्यामाञ्चययान्ने यो भेषाग्रीयामार्वेयाम्य पुरायाधियाने विषामासुर्याम्य (म्यामी ॿॖऀॸऻ)चवा.चळब.चवा.श्रट.फ़ॗऀ.क़ॣॺ.ॾऺॹॺ.वऻॿऀवऻॺ.टट.कॣॖ৴.ट.टट.शु.ॾेवा.क़ॕवऻ.चक़ॕज़.ज. र्श्वाबायर रचा तृ इसायर विद्वेद यदे विषारचा सेदायर दे विष्र चित्र चित्र हु साय दि है। चतः क्रेंब्रा ब्रॅट्बर्ग स्वबाले चरावे चरावे चरावे चरावे चर्वा चर्वा विवास विव के.तर.भाषु.य.ष्ट्रेय.बूर्यात्याइस्था.क्षेत्राक्षात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्रात्यात्रेत्यात्रेत्यात्रेत्यात्रे हेव'रा'इयब'शेट्'रा'तिर्वर'पति कु'यळें'ळेव'र्रा'तदेर'यट'ट्र'यट'ट्र'तिष्ठ्यब्रायर' गुराहे। दे स्निराक्टेंबारचा हु इसाय हो दाग्री के बारचा से दाविताय है साझ्य यमात्रज्ञमानु।दिर्विराचायमान्यराचराचराचे।दिशुराचेमानुदेशानु शुःचस्रवःवन्यःळेंबायरेवःयःचस्रवःवःगत्यःग्रदेः मुद्रायः दर्गेवायः ळेंबार्यः ह्रा यग्जेर-क्री-वेब-रच-श्री-वेद्र। दे-वेद-जश्चवेर-क्र्यंश्वयःतर-चेब-त्व्यःत्वर-द्व्यः के.चर.षु.चषु.केवा.चरुबा.चरुबा.चर्षा.ची.कैवा.चर्षा.घषा.घषा.घरा.वे.चर.खे.चपु. स्वाः येदःग्रीः स्वाद्याः तर्मा तर्मेदः तर्मा तर्मेदः त्याः वर्षेतः तर्मे स्वादमे स्वा त.लुब.बूर्। विषयाचुयाचे.च.र्टा पविषयाचुयाचे.च.चु.र्ययाधिषाःश्ची.वाकुवा.व्ययः यासुरसः पानितः विवादान्ति । (देशवादान्तियामान्दान्यक्षायमामुनावी ।देनायाम्वतः व्यायमाम्वादान्तियामान्दान्याम् वदै-दवा-वै-दट-रॉर-धेद-ळेब-पवे-वावबा-क्रूंव-प-बट्य-क्रुब-पठेंद्य-थ्व-वद्य-क्रीका-वाबुटब-र्या)

.....दे ने क्रूं न मश्म महत्य के लें।

ने'य्यः ने ज्ञान हैं श्चान हैं अस्त्र के स्वर्ग का से त्या के त्या से त्या के स्वर्ग के स्वर्ग

नात्र अप्तरार्थे । विस्र अप्त सूत्र या

वार्त्या चुतिः नश्या सार्त्यः दे स्वायाः दे स्वायः दे स्वायः विश्वः चुतिः स्वायः स्वयः स्वय

देवे भ्रेम क्रिंग सर्देव पाने अरम क्रुम ग्रीम पाश्चरम पानि व प्येत हो। द्या पर्देस मःम्यमःग्रीमःनस्मानदेश्चीरःसर्रेश्चेर्द्राय्त्वानःनविदःर्वे। हिन्नमःसःग्रीनःसद्दरसःधीदः है। वसवाश्वारादिन्श्वरावीश्वरस्थानवे द्वीरार्रे विश्वाहेरार्रे विश्वाहेरार्रे विश्वाहेरार्वे सार्रे वाही वर्देन मार्श्वेन मरा होना मार्थेन हो। सर्दे हो मार्च स्थान में विषेत्र हो हो हो निया है। स्थान स यानाम्बर्भाक्तीः मृत्रुप्त्रम्भाषीम् की विर्मे क्यानि की विर्मे का की की विर्मे का की की विरम्भानी की विरम्भा वे अर में विवा म्वाया अपि देवे क्षेत्र दे प्रवा ग्राय प्रवास के अपि मानिक किया में में किया म व्यतः व्यत्या ग्रीया मार्थित्या यात्र स्था यात्रे साधित हो। । ने प्यतः मारा विमानार मीया ग्रीया सही। | भेशवायद्वामा हुदे:तुर्या | स्व.हु:तुर्या निवाह तीया विश्व के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स युः भ्रीत्राधिया । क्रिया शीः सुदार्यः भूः देवे तत्रया । यात्रयाया त्रये त्रमूत्र वर्षे या से दिवाया त्रया विक्रा निर्मा नि श्चॅ्र प्रत्येत् कुषार्यदे श्वराम्यायायायदे प्रते रामित्र मीत्र मीत्र मीत्र प्रति प्रत्य प्रति प्रति स्थाप्त स नर्ते श्लिम्द्रम् न्यानः श्लेष्यन्ते वर्ते नवे स्वायान्य भू मेदे तुया तुया मन्य वर्ते । देयान विं वें रुवा सर्दे रहंद सर होद हो नक्ष्य नहें अ दे स से स से वें अ हो र हें ।

वे व्या रि.श्चा नशर्दे व सर्दे लश्च नगे श्चिंट हे श्चेंद्र गश्चा या वेश ववुट नदे हे श्चेंद्र

मश्रुअ: नु: क्रुं न्: क्र

मुन्नानर्देयास्त्रात्त्राण्यात्वित्रायास्त्रात्तेराची क्याया सुनाप्ता सुन्ता सुन्ता सुन् य.र्टर.। क्षेत्र.वृष.क्षेत्र.पित.पर्क्र.क्षे.क्षेत्रक.क्षेत्र.क्ष.क्षेत्रक.क्षेत्रक्षत्र.क्षेत्रक्षता.क्षेत्रत म्योषात्रास्त्रवात्वर्षाः क्षेत्रात्वर्षात्रस्त्रात्रस्त्रात्रस्त्रात्रस्त्रम् त्रात्रस्त्रम् याश्रुयात्र सूर्या पर्वेषा ग्री सूर्या पर्वेषा स्रोता स्र ८८। ५८.मुर.मु.म्ब्राच्यामु.स्वाःस्ट्राःस्वाःस्ट्राःस्वाःस्याः । प्रवासःवाह्यःपविःसःपवःस्ट्रः व.वु.एक्वीर.यपु.र्वंबा.यर्वेज.लट.श्रेट.तपु.व्वीर.पर्ट.वुट.क्वी.र्वेब.यर्वेज.वर्वेज.क्वा.श.टट. चठराः स्वाप्तर्वे । प्राप्तर्वे स्वाप्ता विष्टे प्राप्त क्षित्र विष्टे प्राप्त स्वाप्त स्वापत स ग्रीःसुटःर्रे व्रस्य उद्दायपाय प्रति तर्वेषा यास्त्र दिन्तु नुस्य यादि तर्वे स्वर्षा सामित्र स्वर्षा सामित्र स विषाचान्त्री क्रेट्राचर्ह्र्ट्राचर्रे स्वाया स्व नेबारवीवाबानुदारु होता इसायरानेबायानुदार्श्वराया । विदेशवदारि नेस्वा चर्यः अवत | विवाणगुरवायते भ्रीतायते क्षितायते दिः श्वा (देः श्वा अवा अवा अवा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्व कुण गुर चना अर् ग्री सुर र्ये अ विनाय हे रे त्या यहनाया तर्मेना अ तहना स्वर्मे । विना अर् हे क्री प्रति में वर् प्रमायहेत्वायाः श्रेष्ठः ग्रीयाः वृष्तिः वृष्टे स्थ्रेनः याः स्टाः स्थ्रे। याः यदिः यो यायाः वृष्ते यायाः विष् वन्यक्ति देश्वा देश्वा विवास्त्र विवास विव यदे वर्षाया के प्रति । के प्रति प्रकाराये के वर्षाया अप के प्रति । के प्रति प्रकाराये के वर्षाया के प्रति । के प्रति प्रकार वर्षाया के प्रति । के प्रति प्रकार वर्षाया के प्रति । के प्रति प्रति । के र्श्रवामान्याने देवे के वाद्यानु त्यादा त्विवा वी देव दु अहिव वमान ह्व साधिव ही हूवा चर्या वे गिन्व वया ये पार वे पार वे पार विषय के प्राय के पार विषय म्बिनाबः भुष्यर धेन्न विन्ता भुष्य भिन्न भुष्य भ लाक्षेया.यरुबारटा क्रूबाक्षेया.क्षेया.क्षेटा.क्षेटा.क्षेटा.क्ष्रेटा.ह्ये श्री.याबीका.ला.पटिया.ता.लाबा

য়ড়ৢয়য়৻৻ৼয়৻৴ঀ৻৸৻৴ঀৼয়

च्याप्तरे भ्रम् विष्याणे भ्रायास्य स्थित विषया विषया विषया विषये विषया

त्कर्र्त्। ।

रेश्वर्यर्रे अत्रित्त्वस्य विश्वर्यः विश्

বপ্রদেশ্বর্লির্ন্যা

ৰণ্'নতম'ৰণ্'ন'ম ব'র্ক্ত ম'র্মমা।

वावर्गः न्दः सं विस्रायः वसूत्रः या

चवा चरुषा चवा से दा कुषा यर प्रमृत्या

चयाः इस्रमः गुरुः कुमः यसः दशुम् ।

यसः सः यहिं यसः संदेः दर्न् भः चुमः इस्रमः । चयाः यद्यः यादः खेरः देः द्याः या।

कुमः यस् प्रमः यात्रुं स्रमः यस् द्राः चयाः यद्यः यादः खेरः देः द्याः या।

कुमः यस् प्रमः यात्रुं स्रमः यस् दशुमः ।

व्यस्त निक्त निक्त स्त्र मिन्न स्त्र स्त्

यश्चित्रःश्ची त्वो त्वः व्याः व्यः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः

श्वर्मः चर्नायव्यान्तः श्री ह्याः चर्नायव्याः श्री हित्यः चर्नायव्याः श्री।)

ह्याः चर्नायव्यान्तः श्री ह्याः चर्नायव्याः चर्नाय्याः व्याः चर्नायः स्थाः स्था

चवा.सुर.जत्रा.की.यर्वे.त.र्टा विर्वेश.स्य.वीश.क्षा.वीश्रा.लट.हु॥

मुरुष्यराध्यात्रम्यात्रेत्राध्येरावेशायदेराष्यराष्ट्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम् ५८। वर्षान्यः इस्रश्रादे 'द्रषान्यः से 'स्रबुद्धान्यः दे 'द्रषाः ग्रुटः वर्षाः सः स्रवे स्रवे स्रवे स्रवे स्रवे मुन्द्रि विदेन मासुसाने सार्चे मान्याय स्तर् मान्याय स्तर्भा साम्याय स वन्याम्डेम्'स्र्रन्य्या हे ज्ञम्यादन्यास्य ह्यास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्व म् श्रियान्यान्यायायद्ये द्वेरार्स् विश्वास्य याद्वे श्रिश्य प्रकर्त्य विश्वे त्यस्य सामित्रास्य यदे पर्व अ नु अ नवा न रु अ शु न अव पर अ है द ग्री अ प्यस द द पर्व अ स नु अ है । नवा से द र र भ्वाशायार्वे निर्देश्चिरायरावर्हेनायां ने र्देना ने प्रति वित्रा र्त्वे में भर्दरम्पर श्रेया दे त्यसा ग्री श्रु दे तहे गा हे दारा द्रा तहे गा हे दायस तर सार त्यस गहिरागायदरप्रह्वायरार्वेदेष्ट्विरप्रहेवाहेद्रप्रतेष्यराष्ट्राववासेर्प्रृतेष्रारायर वशुरावराने वर्षा हिन्यरानु नु वर्षे हिरावण सेन्यस ही वने वर्षान्य वेरावने वर्षे यदे शुः श्चें अ है। यह वा हेव यदे त्या अवे त्या विं व प्येव श्चे त्या श्चे त्या वे त्या प्येव है। स्वानस्यादरागुदादशुरावी नदेदायशानस्यायदेशस्य स्वानस्य । । व्यापानस्य स्वानस्य स्वानस र् क्रिंग्यं देशस्य न्यात्रे से मही व्याया मही देव की वी न्यारे साम र व्याप की स

ण्नुण्यादी चण्यरुषार्थि दाधेदायदे छ्रीर र्रे दिषा चेर र्रे।

तर्वासः मुकास्य प्रमित्रा

यानेश्वान्त्रत्त्र्याः मुश्वान्त्रः स्त्रित्ताः स्त्रित्ताः स्त्रित्ताः स्त्रान्त्रः स्त्रित्ताः स्त्रान्त्रः स्त्रित्ताः स्त्रान्त्रः स्त्रित्ताः स्त्रान्त्रः स्त्रान्तः स्त

वसःसमियः दर्दे वर्गे माः माहेशा

वसायावरान्दान्ते संस्थान्य वहान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्त स्थान्य स्थान्य

(निहेशनायुर्भासानुशास्त्रम्भासरायभूतायद्वी) यतुश्रासानुश्रामासुश्रासान्त्रमानी रेजि

गरः ने ना

ने त्यात्रसासायता सी नामर्दे।

इस्रायान्त्रुसार्ये द्रायादे त्याद्रसास्रायतः (सक्रवान्ति) दे (वर्त्रसास्रायस्रेतसाम्रह्मे नश्चेन:ग्रु:न्दःश्चेन:ग्रेन:न्दःन्यःनदे:श्चेरःर्रे | न्नेन:न्दःश्चेन:प:न्दःश्चन:न्वाश्चनः ठवानी में तन्ते न पाने का सामय दे। विष्ठ है से समाय से माना पाने निक्र में निकास में निकास में निकास में निकास वर्गेनायानहेशाम्याद्वसाम्यावम् वर्म्या क्षेत्रायासेन्यवे स्वेत्रासे वित्व साधिताहे। इत्या दर्जेर-यन्स्ययाग्री-हेर-दे-वहेत्रन्तीः सम्भागवित-द्यानी वर्जे न-दर-र्थेद-यायार्थे ग्रयः ५८। श्रेस्थार्थे त्राम्यस्थार्थे म्याराधार्थे न्याराधार्थे न्याराधार्ये न्याराधार्य चुदेः सेससः सेससः चुदः क्रें नः वदरः क्रेनः वदेः क्रेनः वदेः क्रेनः वद्गा अंतर्भे वा विष्यः वदेः हस्।) त्रवा वरुषाञ्ची वर्षः केषा उदान्ता से से रामहण्या से दाष्ट्री या वर्षा वरम वर्षा वर् भ्रे भ्रे नदे के अन्व द्वा वित् भ्रे न व भ्रे न वसामानवः वयदाः से भी नः पासा संदान न प्रत्यु रात्री सुदायाः से वासा सामा सुदान प्रत्या वो वासा शुःगावश्यायते धुर्र्भे । देरसी गावश्यव्यवस्यायत् सुरमी हेव पुः साग्रुव यर प्रवा न वदे हो चना-हु-श्रु-नर्भ-श्रद-नर्भेश-श्री । अर्दे-श्रे-पान्ने न्या-अनिवान नुन्य । स्वर् स्वर न्या-व्या नुन्य । यी हो ह्या ह्या न हो स्वर्त त्या यो में दि हा सामा है त्या है दाया मा वस हे स्वर्त है दि हों | शे में दि प्राया के विषय मार्था व्यय वे कि वे कि त्या है व वि । शे में दि प्राया के व्याहे व यग्रमा त्रमाने कुराने त्रमामायाया हेता है। श्री मित्र मान्य सामाया है स्थाने सामाया स्थाने स्थाने सामाया सामाया विषान् निर्मान् के माने विषाने विषानियां में हिता से निर्मानियां में निर्मानिय मर्दे विश्वाश्वास्त्र स्वास्त्र स्वा

र्ने विश्व पर्ने निर्मे ।

ण्डम्भ्रम्भण्ड्यात्र्वेन्य्व्याः व्यक्तिः विष्ण्यात्रः विष्ण्याः विष्ण्यात्रः विष्ण्यात्रः विष्ण्याः विष्ण्यात्रः विष्ण्याः विष्ण्यात्रः विष्ण्याः विष्ण्यात्रः विष्ण्याः विष्ण्यात्रः विष्ण्यः विष्ण्यात्रः विष्ण्यः विष्णः

र्शे स्न-नह्न्वसायसायम् वाना । ज्ञायन्ते

क्रे.क्र्र-प्रमुवाश्वर्यं व्याप्त क्रियं विकास क्रियं वि

र्दे व तह्वा हेव पदि तथा ग्री मार्चेच पर ग्री पदि त्वींवा पार्से सेर पहवास

वावर्गः न्दः सं विस्रायः वसूत्रः या

.....र्श्यार्थ्य स्थान

ताचिवा-धि-पर्ट्ट-वे-क्रिंच-चर्न्नला-शर्म्ट-क्रिट-क्रिट्य-तपु-पर्म्चा-पा-शर्ट्व-टे-चिका-तथा-क्रिट-क्रिट्य-तपु-पर्म्चा-ता-त्य-क्रिय-पर्म्च-त्य-पर्म्चा-क्रिय-पर्म्च-क्रिय-पर्म-क्र-क्रिय-पर्म-क्रिय-पर्म-क्रिय-पर्म-क्रिय-पर्म-क्रिय-पर्म-क्रिय-प (गढ़ेबर्यासिट्रिट्रियग्राचार्मिटबर्यादी) र्प्.ये.पीट्रियरायपुर्युत्रम् कें न्द्राक्ष्यायात्राम्यान्याद्यो र्स्स्रिट्य केंत्रा स्त्रीया या (रट.वी.र्जर.बी.ब्रि) तर्नायाधेव व्यावेष देषायावा कें न्याय्व याषाया तर्नायाधेव वें विषाहे सूरा याताने सन्ति। (क्रांबार संक्रिन) धीवावावी तर्योगायाने न्यायहा ग्रुट'चर'त्यूर'हे। चरत्युरचिते भ्रीर रेंबिन् चित्र चित्र केंद्र की कि स्वर्मिन स्वर्मन स्वर्य स्वर्य स्वर्मन स्व बु:मेवात्त्रवा)पर्वावात्तातात्तरः (वर:बुरः)यदु:ब्रि:(विषय:ब्र्यरः रा)पर्वावात्तरः पर्वावात्तरः (रदः केरः)तवातः विवा ची तर्रा प्रते क्रुः धेव पारा तर्वे वा पारा धेवा (हे तर्व वा च्या वा तर्रा चि धिव यम पर्देन यदि हुम में देशवा) तर्षेणा पायव रह्व तात प्राप्त स्था से प्राप्त स्थित प्राप्त स्था से प्राप्त से स्था से प्राप्त से स्था से प्राप्त से स्था से प्राप्त से स्था र्बे. खेब. ही. होवा. पं. ही. व. प्रकट. क्रूट. ही। वर्ष्या. पर्वेचा. परवेचा. पर र्रायरावधूदाचरावर्देत्वाक्षाःह्वायाद्दावत्त्र्वाध्याः स्वायत्यरावधूराहे। ध्याद्दा र्यान्त्रस्यानेयातवाताचाधेन्यते छ्रीन्युः व्यापार्यवायाचित्र र्वे विषाद्याचारति छे चवा. भि. श्ची. चवा. श्वी. प्राची विष्टुं श्वी. पर्याची विष्टुं स्था वि <u>चण'नठरू'न्ट्'च्य'न'र्ड्स'येव'ग्री'र्दे'तेन्'सेन्'य'य'ग्ठेण'न्ट्'म्'न्न्'क्सयर'</u> चलवा या खेद रहें 'लेबा तरेंद रहें। । च्रे च्रवा हु ड्राच इस्र ब अरें 'या प्रतिवा यदे चित्र व यावी पदेव पति ते प्यामुला प्राम्य प्राप्त प्रमान प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप र्वे लेख पर्दे पर्दे ।

वावर्गः न्दः सं विस्रायः वसूत्रः या

श्चे या निष्य र ने निष्य हो र या विमेनि मान्य र में में स्वार में स्वार में स्वार में स्वार में स्वार में स्वार

युद्ध्यात्रकर्न् सूर्यःक्षी विश्वे स्वत् सूर्यः स्वत् स्वत्

महिकामही। वमासेन्न्र वमान्यस्थासे स्रोप्त विकास विकास

नावशः इटः में विस्रशः नसूतः या

भ्री नामाधीत त्रावर्षा मुकामाधीत समावश्चर है। कु क्री वर्षी भाग्न से नावे से मार्थ से मार्य से मार्थ से मार्थ से मार्थ से मार्थ से मार्य से मार्य से मार्य से मार्य से मार्य से मार्य से मार्थ से मार्थ से मार्थ से मार्थ स

प्रति स्वास्त्र स्वास्त्र

सक्रेस्र प्रद्स प्राय प्रतिस्था

क्तियाता. भूचीशासाम्यात्वीया सुर्वे सुर्थे।)

स्वी त्राचा सूचीशासाम्यात्वीया सुर्वे सुर्थे।

सुर्वे त्राचे श्राचे त्राचा सुर्थे सुर्थे

तर्वाचुवाः कुवायरः यवरः या

यान्तरीक्षाक्षां वीटः क्षेत्रः स्वाद्याः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्व

याहेश्यः महेत्र हिं त्वेश्वरक्ष्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वरं स्

माशुस्रायाम् सामाराज्यामाई दाग्रामाराध्रें जाया विदामी देवायस्रि स्वरा

वशुर:र्रे॥

वावयान्दर्ये विश्वयान्त्रवा

म्बर्गिः में द्वायाम् अप्यक्तिः यथान्तः म्वर्गिः म्वर्थः यथान्तः स्वर्थः यद्वायः स्वर्थः यद्वायः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर

वर्षाचित्राक्ष्याम्बन्धान् । विश्ववात्रात्राक्ष्यात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रा

ग्रवशन्दः में विस्रशन्त्रम्भवः या

म्नुयायान्दा व्रेंत्राचान्ने विवासीयान्त्रीयाचान्यान्त्रीयान्यान्त्रा त्र्राने वाने व्यवस्थान्त्रीयान्त्रीयान्य याचन्वानुः तर्षे विवायते क्षेत्रं ववा वा स्त्रुन् तर्देवावायम् छोन् में स्त्रुवायान्या चन्वानुः तर्देवायते वेशवाने तर्पानु इस्रमःग्रीमःनवो नायाःस्वामःनायाः सहवा स्यान्तेन् में स्वामः स्वामः स्वामः स्वामः स्वामः स्वामः स्वामः स्वामः स वै स्थिरिं व स्त्री नित्वानिर नित्वाचीर तिहे व स्वते चित्र राति चित्र स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वत रान्वावि स्वाक्रिराङ्गरान्त्रवेषाराक्षेत्रायावी स्वत्वात्त्राद्धेवाया वाञ्चवाषायार्थेवाषाराञ्चवाराङ्गवासाङ्गरा वीर-प्रहें बन्ने। बेबायन्दरा गुबायबायन्त्रवायाज्ञान्यन्वान्त्रप्रहें बन्धियावी इस्रायास्यम् वसूर्वायि स्त्रीरार्थेः विवेयास्यः देयान्त्रीत्। विचित्रयास्य व्यास्य विवायः स्वयः साम्य विवायः स्वयः साम्य विवायः विवायः विवायः विवायः यःचगावायतेः व्यन्तः धेवः वे वा) वादः न्वाः वाञ्चवावः ग्रीः सुदः र्वे प्नः र्वेवावः यतेः श्रुवः वाञ्चरः वाः क्रॅ-नन्दा वर्षेयन्ता वर्षेत्रेन्ता इसम्मिष्यक्षित्रं हेस्तर्यं हेस्तर्यं हे मुेव मठिया येषा राष्ट्री दाय त्याय धर से दार्दी ।

यश्चित्रकार्य्यकाराः स्वाकाराः स्वाक्षः स्वाकष् स्वाक्षः स्वाकष् स्वाविद्यः स्वाकष् स्वाविद्यः स्वावि

सुर-र्यें न्द्र-ध्रिते क्रुं अळेन् न्याया नते ध्रिन-र्ने ।

यविष्यः प्रत्यः श्री विष्यः विष्यः श्री विष्यः विषयः विष्यः विष्

इत्यात्र्र्चरःश्चेंद्राचाराः इयमः वे वाञ्चवामः वे त्यायमः वाववः द्राये विद्राण्याः स्यायः विद्राण्याः विद्राण्या

श्रीट ची इस ग्रीट्या

ने न्याकेन नुस्यावि न्या । देशस्य विद्यास्य विद्यास्य वि

ताबुबाजिए ति क्षेत्री ह्यात्तर प्रविष्ट ताबु क्षि एव त्याय प्रयादिय ताक्षेत्र क्षेत्र ह्या ह्या प्रयादिय विष्ट त्या विष्ण विष्ट विष्ट त्या विष्ण विष्

वृत्तर्भान्त्रभाग्ने स्थान्य स्थान्त्रभावे स्थान्त

देवे विराध्याच्या पठका ग्री इस ग्राम्या देव

स्वानस्य गुरु वर्षे र वेत्र पदि । सिर स्वर हे र वा व्यव पर हे र वा व्यव । सिर स्वर हे र वा व्यव । सिर स्वर हे र

क्षेत्रस्य विषयः विषयः

ग्रवशन्दर्भे विस्रशन्स्रवा

नडरुपा है प्राचित्र है प्रतिहेत् हैं (ह्यू नह्य महाराष्ट्री अप हे देवा शहर ह्यू वा नह्य विद्याय विद्याय विद्याय क्रियाद्दः स्रोत्यम् । भूगा न्यूषाद्दः । (व्याप्तरुषः क्रुरः शुरुरः यद्दे त्यसः व्यवसः तुरः श्रुरः स्रवापस्यः गुरु वर्चरायमा) गुत्रावर्चराद्वा (वहेवाडिरास्यामुवहेवासमाममामानेदार्यमासमामा) वहेवाहेत <u> ५८१ स्प्रित्रे म्वर्भित्रा (अर्दे व्यक्षः श्रे</u>न्यः म्वरः बेद्वः वेदः प्रदे सुदः वेद्वः वेद्वारः वेदाः विकार सुदः प्रवासन र्वेण सासेन मान्य प्रत्युत्त न सामा) सेन माने स्वाप्त माने सम्बन्ध माने स्वाप्त माने सम्बन्ध माने स्वाप्त माने सम्बन्ध माने स्वाप्त माने सम्बन्ध माने समिते र्वे। दिस्रायाष्ट्रमान्वनामान्वनायाम्बेर्नायसायम्बनायाक्षेत्रस्रायान्दरायस्रमान्दर। यन् ग्रेन्गी सूना नस्य ग्री अप्यमा अप्य क्षा अप्य दिन सेना नस्य निस्य ग्री अपस्य । नमृतःनःन्ता कुरःशुरःपदेः(वन्तःवरुषःशु)सुरःर्वे क्रथात्ते गुत्रःपत्तुरःधेरःधेरः श्चर.सषु.(व्या.यवश्य.क्री)सेट.सू.्रक्षश्र.धु.र्जया.यर्जातालुच.सश्र.क्षेर.श्चेर.सा.पट्टी.लश्वातयंश. विराधीरासपुः र्रेषा पर्रेषा या श्रेषा सामीय प्रविदाय प्रदेश । यहेषा सामिरा स्रेषा स्रोती स्रोती लग्नान्ते द्वाराम्यान्त्रियाः वित्राचन्याः न्याः वीराध्याः न्याः वीराध्याः हे मार्श्वः व्यावाः न्याः यर हे अ शुः क्षे न ने न वा दे हे न र खेद संदे सुर रें खेदे हे द ख न द वा न र न वा वो र खर द वा सर्हेशःशुःकृतःवेशःवनुरावशः(वन्ववक्षःविक्षः)विहेनाःस्वित्रायःकृत्वाशायःकृत्वाशायःकृत्वा मु अ'रार्र'द्युर्र'न (दे:क्वॅं'द्रअ'न्व्र्रअ'राय्याद्र्य न्न्यान्वर्ड्यम्भी:वन्यान्वर्यामी:सुर्र्यदर हेरायेदाधेदाने देःयान्येन्य वर्णाविवासुन्ति केरावेव केंब्र बेर्ट्या इसस्यावसुरावसार्थे॥) प्रा प्रा केरासकस्य केंद्र प्रा केराया विकास केंद्र केराया केराया विकास केंद्र केराया केराया विकास केराया केराया विकास केराया केरा

য়ড়ৢয়য়৻৻ৼয়৻৴৻৻৻৻৴ঀৼয়

प्रचीर-च-कुर-चन्नान्वकाकी पूर्व-देर-कु क्रिय बुट-क्रि-बि-चन्यकुर-चन्द-बुट- काके प्रूच-चन्न-क्रिय-क्रिय-चन्न-क्रिय-चन्-क्रिय-चन-क्र-क्रिय-चन-क्रिय-चन-क्रिय-चन-क्रिय-चन-क्रिय-चन-क्रिय-चन-क्रिय-चन-

स्टावस्त्रम्भु सकेट् कुरायर प्रम्पा

नावशः दरः में । वस्रशः नस्रवः या

स्ताक्षेत्रायम् स्तान्त्रम् सकेत् स्तान्त्रम् स्तान्त्रम्त्रम् स्तान्त्रम् स्त

ग्रा व्याया के प्रवर्ध व्याप्त के वा विष्य प्रवासी वा विषय के वा

प्यायान्य स्था। क्रियान्य स्थान्य प्राविष्य स्थान्य प्राविष्य स्थान्य स्थान्य

सक्रेस्र प्रद्स प्राय प्रत्र

न्नर-र्थे-स्-नम्-म

कुषायराचन्द्राचाषुष्ठाय्यस्त्राच्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र कुषायराचन्द्राचाषुष्ठाय्यस्त्राच्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र

विश्वान्य त्या श्रीम्य स्वान्य स्वान्

ग्रवशन्दः में विस्रशन्त्रम्भवः या

য়ूँच-द्र्व-मुल-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्रव-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्र्व-स्व-द्रव-स्व-त्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-त्रव-स्व-द्रव-स्व-त्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-द्रव-स्व-स्व-द्रव-स्व-स्व-द्रव-स्व-त

र्नेवःस्यम्

पितृषायार्देवास्यापन्यायाः (यापित्रवायवाद्याः विवायवाद्याः विवायवाद्याः विवायवाद्याः विवायवाद्याः विवायवाद्याः

ग्राञ्चनारु इस महिरा ५८% सु

য়्रणायो श्चिंद्राध्या प्राण्ये त्रास्त्रे प्रमुप्त स्था त्रास्त्रे प्रमुप्त स्था त्रास्त्र स्था त्र स्था त्रास्त्र स्था त्र स्था त्रास्त्र स्था त्रास्त्र स्था त्र स्था स्था त्र स्था स्था त्र स्था त्र स्था त्र स्था त्र स्था त्य स्था त्र स्था त्य स्था त्र स्था त्य स्था त्र स्था त्र स्था त्र स्था त्य स्था त्य स्थ

विया इ.वे.क्रें.पेर.अपूर्व विचाया वे.वाट.व.वार्चिवाया इत्रया क्रेंट.च.क्रें। इत्राचनिट.येवाया यःतथाः श्वादः वादः वीषः धुत्यः देः स्टरः चरः दुः क्वेदः यः वः वाञ्चवाषः इस्रवः वाष्यः चरः छेदः पर्ते विषाचन्द्रम् । श्रुवायावे दे त्याषाचर्त्रेषायर्ते । विष्यवे विषयते र्ते द्वार्ये । विषयते विषयते विषयते विषय वै वे र पु (व्याप्तर व्याप्तर वे प्ताप्तर वे प्ताप्त वे प्राप्त वे प्ताप्त वे प्ताप्त वे प्ताप्त वे प्राप्त वे प्ताप्त वे प्राप्त वे वै देश देश देश विद्यान अवस्था प्रमान के स्थान के स्था के स्थान के यतमा र्स्यार्नेवायान्ते सुरायो न्यायम् । वावन न्याने नेयायम सूर्वे । विन ब्रूटा तुः नृटः वृषा र्रे : नृटः नृराषः नृटः क्रु राषः वा र्येषा वा यत्र र व्येन् या या येव व्या वे व्या बेर-चॅ-दर्द्व-पंतर्देव-चॅ-व्यक्तिक्तिक्तिक्तिक्तिक्तिक्तिक्ति द्वार-च्याप्तरे <u>न्ना न्यार संन्दायनुष्य प्रते बोर संभिष्य के नाया क्रीराव न्नार संन्दाय हैया</u> पते र्चेत्र में ता र्चे क्रु ता र्वेण्या पा धेत पते रचे में । (वण ने प्रायं वण वे हु उते हिण पा क्षेर बूप हैं, देवी प्रकार विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व मी.पाञ्चिषायापाष्ट्रेयाप्टे,त्राखे,त्रबंदे,वयाप्टे,शे.झ.कं.त्यवट,ट्री विषापः प्रे.झेंब.ट्ट.टे.त.जा र्वेषाबारायात्रुवाबाग्री:नृत्रे:परातकन्वायने:लुटबायराञ्चबायाधेवाने। कु:नृटाशे:नृटा गानिन्द्रियायातार्स्रवाद्यायायात्रवाद्यायात्राचित्रः मिन्द्रवार्स्यायात्राचा र्देण'न्ट'रेट'र्से'ता'र्सेण्य'पते'न्छेपया'सु'(ब्रॅंबेर'न्यर'न्ट'न्ग्रर'च'न्टा ।ब्रूट'सुव'ड्डेव'न्ट'नु'च' यः अध्यक्षत्र प्रदेश । प्रदः संपञ्च विद्याचित्र विद्याचित्र । प्रदेश विद्याचित्र विद्याचित म्बिन्याक्षित्वाक्षात्रम्यात्म्बित्।)त्रुक्षायकाश्चात्रम् द्वात्ति वित्तात्त्रम् वित्तात्त्रम् वित्तात्त्रम् वि

ग्रवशन्दः में विस्रशन्त्रम् या

विष्यः प्राप्तः भ्राप्तः भ्रापतः भ्राप्तः भ्रापतः भ्

यभ्याचिक्राचिक्याचिक्याचिक्याचिक्याकृतिक्याचिक्याकृतिक्याचि

अविवस्यायानकुरार्वेराने॥

શ્રું ते क्राचि त्यार प्रति श्रुप्त श्रुप्

सक्रेस्य प्रस्य प्राय प्रमुद्रम

स्वि-पर्व-प्रि-पर्क्व-प्रमुव-

र्रेवि द्वय दुर्ग दे द्वय प्रवि॥

र्रे ते श्वेते नियम् र्येते श्वेति स्थाय निविद्य स्थाय स्

रेगा गुःन इःगाठेगा नन्गा छेन र्ने॥

ग्रवशन्दःर्भे विस्रशन्त्रम्वःम्।

अट'र्येश'क्सअ'श्रेश'गठिग'क्क्षेट्र'पदट'र्थेट्'ट्री अ'र्देग'क्षे'तु'वि'र्देग'ट्रट'ट्रिट्टीयश'ग्री' वाञ्चवाबान् अषाने तहीं वायि द्वायी द्वायी वाञ्चवा क्षेत्र न्या स्वाय विष्या विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय वीबार् या श्रीत्रायत्रा व्याप्ति । त्राप्ति वा श्रीवा वीबा श्रीबा श्रीवा वीबा श्रीवा श यःस्रानुर्दे। विकेवाकियाकिवास्त्रीन्यान्दर्भान्यान्यान्त्रीत्यान्यान्त्रीत् वि चबुब-दे-झैं-लयर खेबानर चेत्र । लिला घारा विश्व सूर्य विषे देनर सूर्य विश्व तहें व प्याप्याया विवा वी वा इस भी वा पुरा की प्राप्त के वा प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प् બુત્ય (ફ્રૅન્થ નરુષ ખેરૂ નથા) ને નાલક શ્રી નનદ સેં નદ સે સુન પતે શ્રી મનદા देव:इस्रामेशक्षाक्षे;पवे:ह्येरार्से |रेवा:ह्यश्राक्षाक्ये इस्रामेशक्षेद्रायावी वारहेवादारे वेव-ए-अट-व-पद्यीट-पद्यान्तिन्द्रात्ति विच-प्रमानीन्त्रात्त्रीत्ति । विच-प्रमानीन्त्रात्त्रीत्ति विषाचित्राचाराया (क्रिंपापमानापाया सेवाबाय दे के शुका मुः मुंवाबार मान स्वावस्त स्वस्त स्वावस्त स्वस्त स्वावस्त स्वावस्त द्रवा द रे र प्रदु:वाठेवा र्थे : सम्रम् र र गुर्म स्रोद र दें विष ने र रें। वाठेवा वीष वाठेवा स्रोद यन्द्रायद्र्यस्य मुद्रमाञ्चे माञ्चे न्या दे व्याप्त मान्यस्य स्यस्य मान्यस्य मान्यस्य मान्यस्य मान्यस्य स्यस्य स्यस्यस्य स न्वरार्थेकाने न्वायहें कायते : इस्रानेकाविवाः क्षेत्रायते : ध्रीता स्वायते वास्त्री वास्त्रीका सारार्थे : क्षेत्र या वि श्री वि या पार है है नि या पार है ने स्थान के से पार प्रमान के से पा

वावर्गः न्दः सं विस्रायः वसूत्रः या

इस्रामेश्वर्म् भ्री भ्री वात्रायर्त्तात्वा (देव्यवा मेव मेव मेव मेव प्रमान मेव प्रमान

रेषाचुेद्रायाधेवायावळदाया

न्त्रे वाशुअर्धः देवा चेन्यः धवायत्वन्यः तक्ष्यः प्यायाविष्यः प्राययाविष्यः प्राययः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प

विद्यान्यः के द्रम्म स्कूरः स्थान । दे दे द्रम देवा से द्रम देवा स्थान । दे दे द्रम देवा से देवा से

त्रुत्तर्त्रुं निया क्षेत्र्या क्षेत्रया कष्त्रया कष्त्रया कष्त्रया कष्त्रया कष्त्रया कष्टित्रया कष्त्रया कष्य कष्त्रया कष्य कष्त्रया कष्त्

द्रावान्त्रवः श्रूं स्वरावह् वाला) गुवाना विश्वार्षः स्वरावे स्वरावन्त्रवः स्वर्ते स्वरावन्त्रवः स्वर्त्रवः स्वर्त्रवः स्वर्त्रवः स्वर्त्रवः स्वर्त्रवः स्वर्त्रवः स्वर्त्रवः स्वर्त्रवः स्वर्तः स्वर्त्रवः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्त्यः स्वर्तः स्वयः स्वर्तः स्वयः स्वर्तः स्वयः स्वर्तः स्वयः स्वयः

ग्रवशन्दःर्भे विस्रशन्द्रवःग

<u> २८.श्रुश्रश्चात्रीत्रात्रात्रश्चरात्रात्राच्यात्राच्यात्रात्राच्यात्रात्राच्या</u> शेस्रशसेन्द्रा न्वत्यप्रसेस्रशसेत्र्वात्रित्रिंग्रिन्द्रम्यास्यार्थेन्यास्यस्यस्त्रित्रस्त्रा नत्रानभ्रात्या है। ज्ञान्त्रश्चानदेन इंदान न्हेना ने शादर्गेना नदे खूँ समादह्या धेरा ग्री:इसन्नेशन्दरावहराधरायर्देन्यराय्येयायान्ता व्यरायुनायान्ता हेदाय्येयाग्री: वर्त्रोयायायार्थेवायायम् वर्त्त्र वर्त्त्र वर्त्त्र वर्त्त्र वर्त्त्र वर्त्त्र वर्त्त्र वर्त्ते वर्ते वर्ते वर्त्ते वर्ते वर्त्ते वर्त्ते वर्त्ते वर्त्ते वर्ते वरत्ते वर्ते वर्ते वरत्ते वरत्ते वर्त्ते वर्ते वरत्ते व यशमात्रशमहत्रमदे भ्रेपमाशुसमादर दर्गे मामदे भ्रेत्रशादह्मा सेससम्दर्भ सम् वर्देन सम्यान भन् सेन् भी भारते भी स्वापित हैं स्वापित बेन्यम्यन्दर्भेस्रश्चित्रम्यश्चित्रम्यदेन्ति। क्षूनन्द्रम्यान्ध्यम् क्षेत्रम्य तक्तित्यः श्रेश्वश्चात्रे त्रमः विश्वासः स्वर्थः स्वरे स्वेमः प्रतः विश्वास्त्रे स्वरः स ग्री-प्रिट्यादी-पर्न्यानुयाग्री-पर्न्यापात्रयया उप्तित्व क्ष्याप्ति या स्थापात्रया स्यापात्रया स्थापात्रया स्यापात्रया स्थापात्रया स्यापात्रया स्थापात्रया स्यापात्रया स्थापात्रया स्यापात्रया स्थापात्रया स्यापात्रया स्थापात्रया स्थापात्रया स्थापात्रय स्थापात्रय स्थापात्य बेद्रायाधेद्रायदे द्वेराद्रा र्र्ह्मे वायार्थे वायायदे वायोद्यायदे से स्वयायद्वाय विकास विकास विकास विकास विकास <u> २८१ देनेते मातुर में र देना गुरु र तर शेश्रश्र शेर माशुश्र में मि त यश मात्र स्थान भीर परे .</u> धेरःर्रे।

दे.श्रृंश्यश्चान्यः विचान्यदे त्यान्यस्य स्ति स्ति स्त्रे स्त्रे

वेशः क्रूँव्यान्यते स्त्रीन्द्रा क्रियान्यते स्त्रीन्द्रा । वेशः क्रूँव्यान्यते स्त्रीन्द्रा क्रियान्यते स्त्रीन्द्रा । वेशः क्रूँव्यान्यते स्त्रीन्द्रा क्रियान्यते स्त्रीन्द्रा ।

सर्चनिर्मकेष्ठिरम् । निश्चन्द्रे वे खेशक्षे स्वाचिर्मक्ष्याचेर्न्यस्य वे स्वाचित्रस्य विश्वन्य स्वाचित्रस्य विश्वन्य स्वाचित्रस्य स्वा

ग्रवशन्दः म्याया सम्बन्ध

यान्यस्त्राचीन्त्राच्यस्त्राचीचीन्त्राचीचीन्द्रमाचित्रमाचित्रमाचीन्द्रमाचीन्द्रमाचि

च्यान्त्रस्थान्त्रस्यान्त्रस्थान्त्रस्यान्त्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान

য়ড়ৢয়য়৻৻ৼয়৻৴৸৻৻৻৴য়ৼয়৻

सम्भिन्न क्षेत्र सम्भिन्न सम्

वर या देते हु त हु द न न न न न

विश्वास्त्र त्युत्त्यक्षेत्र स्वास्त्र त्युत्त त्यात्र त्यात्य त्यात्र त्यात्य त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्य त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्य त्यात्य त्यात्य त्यात्य त्यात्य त्यात्र त्यात्र त्यात्य त्यात्य

याव्यान्दर्भे विस्थान्य सुद्राया

वर्वेट.य.रेवा.बु.स्रावस्त्रा.रेटा ।कि.रेट.सु.रेट.धिरावस्त्रा.र्यस्त्रा।

युवे मा बुनाका ग्री कुवे म्ब्री मा स्था मा बुनाका विदेश मा बुनाका महोते मा स्था मा कुव मा निर्माण कि के मा महोता मा स्था मा स

दे द्याची स्थान वाद ले त्रा

वहें दःसःयः र्शे वा सःयसः सुः शुना

पहें त.स. निर्ध्याच्या स्थान स्थान

सक्रेस्र प्रद्स प्राप्य प्रत्रुर्ग

यश्रश्चार्यास्त्रम् । अत्ति । अति ।

<u>अप्यःश्रेम्अप्यवे अळंत्र हेन्यार वे त्र</u>

श्रामिन्द्रें हिन्यार्थे नः इसमा

श्वाद्यम्य स्वाद्यम् इत्वित्या के स्वाद्यम् द्वाद्यम् वित्या के स्वाद्यम् वित्या के स्वाद्यम्य के स्वाद्यम् वित्या व

क् से प्यत्ते त्री ते प्रास्त्र निम्मानसम् । हिन् प्ये त्र ने निम्म त्रिया हे त्र प्या स्त्र त्र विष्य स्त्र त

श्री. चिविद्य स्त्रीय कार्य त्र क्षेत्र चिव्य स्त्र स

मिहेश्यानि निर्माण क्षेत्र स्वा । क्षेत्र सके न निर्माण क्षेत्र सके निर्माण क्षेत्र सके न निर्म के निर्माण क्षेत्र सके न निर्माण क्

वाञ्चवायास्रेययात्रयावव्यायते सुरावययाः स्रु :यकेरायम् पा

प्रत्या विकासम्मित्त्र स्त्राच्या विकास स्त्राच्या विकास स्तर्भे स्त्र स्त्र

र्टें र न हीं र नरें पर् भे अ है। । अर्टन अर पर्दे न मरे न न न हें र हैं।

क्ष्-राविक् क्ष्रियका ग्रीका क्ष्रीं त्या प्रीक्ष प्रविद्य क्ष्रीं का प्रविक्त क्ष्रीं क्ष्रीं का प्रविक्त क्ष्रीं क्ष्रीं का प्रविक्त क्ष्रीं का प्रविक्त क्ष्रीं क्

वावर्गः न्दः सं विस्रायः वसूत्रः या

यातार्स्रवाबायते त्रमु क्रिकावासुद्धार्ये दे प्रवाचि रहे सामासून ह्या दें त्रात्यहे कायन प्रवेश से कायमार्स्स प्रवाचा सामास्या स्वाचित्र स्वाचित्र सामास्य सामास यापविषायेन्यान्ता श्रीन्त्रे क्रुप्तये पाष्याप्यस्याप्यस्य पाष्यस्य स्थायेन्यस्य पासुयार्थे ने न्या के सक्रवाययेन्य पति तर् भेषान्य तर्देन विश्वास्त्रेयायते तर्भेषाने स्टूट हते तर्भेषान्य विश्वास्य विश्वास्त्रे तर्भेषाने स्टू พदः बेन् पतिः क्रे अळेन् वेषाया दे के प्यदः बेन् पति त्रमु वेषा देषाया दुवा प्यवन मि) **यदः दर्देन पति त्र** क्र्य-श्रेन्यामुअप्ने होते | वात्यक्रे तस्वान्याम् सम्मानी सन्ने स्वानि स्वानि स्वानि स्वानि स्वानि स्वानि स्व वेषार्थेद्रावासक्वास्यात्रहेवास्यात्र वृत्रावेद्या देव्हावासक्वास्य विष्यात्र विष्या च-दट-ब्रीअ-वाद्दट-ल-ब्रिंग्बर-पदि-व्रिट्-पर-तिहें ब्र-प-वे-प्रेंद्-क्री-अर्क्व व-अ-लब-क्रील-चर-चन्नद्र-च-वे-चद्रवा-विवेश-सु-वेव-च-लश्चेंश-च-धेव-चन्नः क्रींव-विवेश-लन्नः क्रींल-च-वैदर्दे। ।

वर् होर सर में नि विषय मान्ता।

पानियायत्त्र त्रियः स्वास्त्र त्र त्रियः स्वास्त्र त्रियः स्वास्त्र त्रियः स्वास्त्र त्रियः स्वास्त्र स्वास्त्र त्रियः स्वास्त्र त्रियः स्वास्त्र स्वास्त्र

ग्रवशन्दर्भे विस्रशन्स्रवा

क्रि. विश्वःचिःयः सूच्याः स्वाधिः स्वाधः स्

त्तरः त्रिस्त्रः त्रिः क्षेत्रः कषेत्रः क्षेत्रः कषेत्रः कषेत् कषेत्रः कषेत्

यातः में स्त्राचार स्वाप्तः स्वापतः स्व

नावशः इटः में विस्रशः नसूतः या

५८। रटःक्रूॅनबर्नटरम्बदःक्रूॅनबरग्रीः विद्यान्य स्थानः विद्यानः वि यव नर्ह्न नर्ग्या | प्यट प्येन ह्रेंग नरुष ग्री तिर्दर न् कें र न त संग्री वारा हें वारा व दे.र्वा.किर.सूचे.त.लुच.चे.क्वे.वा.ला.सूचे.त.रे.अ.लूर.तर.पक्रे.ची सूचा.वाडेश. ठेवारुरत्दुवारासेत्। विदेश्वराह्मस्यापराहेवाराह्मस्या विसाग्रीसात्वीदान्यरायदा र्वाः ह्र्वाया वियः इसः दर्वे यः ययः प्रम् प्रम् प्रम् वियः स्यायः विवासी विवास र्टा अर्कुट्य स्व अपीव पर त्युर है। र्विष्य स्व उत्तर स्व गुट के अर्कुट्य परे ब्रेन्स्विवा धेन्द्रिवाचठवाग्रीतिर्द्रम्पुर्स्यायार्थवावायार्द्रवायाधेवायार् यः अष्टित्र प्यते वात् प्रत्याया प्रत्य के त्या के त्य कैवारकरः ब्रे त्रह्वायि दिन्दरः दुः चुका वका देः स्नुदः वासुद्रकायि छ्रिरः है। श्रिया हो निया विषय हो स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स यातर्सानते सर्ने त्या क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका स्वापन क्षेत्रका क्षेत्र त्यूच.त.लुच.जा टे.चबुच.क्चब.जूचब.झूट.चयद्या निट.ज.जूचब.तर.झूट.चर. तर्रेत्। विंवःश्रॅट्यःद्वोःक्र्यंद्यःयेव। वियः चःच्यःवेःगुवःवयः वेंवःश्रॅट्यःद्वः ₹अ.वि८.वी.वेट.त.त्.अअथ.अअथ.वैट.जय.विषे.तपु.टेवट.वैवी.ज.स्वोय.टेवावी. यदे छिर धेव र्वे।

दे.क्षेत्र.ख्य.ज.वीट.च.यर्ड्ट्र.ब्य.ट्र.विश्वय.ट्रट.श्रे.अकुट.टे.क्य.त्य.चववा.त.

कूर्याम्भी सक्तरीय मुर्ग्य स्था निर्म्य स्था निर्मित स्था निर्म्य स्था निर्म्य स्था निर्म्य स्था निर्म्य स्था निर्मित स्था निर्मित स्था निर्मित स्था निर्मित स्था निर्मित स्था निर्म स्था निर्य स्था निर्म स्था निर्म स्था निर्म स्था निर्म स्था निर्म स्था न

ळॅंर-च-५८-११८-१८-१३५-१३-५४८-१४-१-१८ अ.सर-१४०-१३५

सक्रेस्य प्रस्य प्राय प्रमुद्रश

इस्राभेयाग्री:सिट.सू.रेट्ट.श्री.सक्रेट.रेट्ट.विश्वयाग्री.स्थायर.यविवाता

पःया पःया

इसम्वेशःश्रॅःश्रॅरःइसःरेषाःगा

च्यान्यत्वे व्यान्यत्वे व्यावे व्यान्यत्वे व्याव्यत्वे व्याव्यवे व्याव्यवे व्याव्यव्यवे व्याव्यवे व्याव्यवे व्यव्यवे व्यव्यवे व्यव्यवे व्यव्यवे व्यव्यवे व्यव्यवे व्यव्यवे व्

ग्राटा इस्रायरानेबायदे स्वायाद्वीयादे स्वीतान्त्री क्षेत्राम्याच्या स्वायाद्वीयात्वी स्वायाद्वीयात्वी स्वायाद्वीयात्वी स्वायाद्वीयात्वी स्वायाद्वीयात् यदे छिरः इस्रामेषा वे प्येन ग्री इस्रामेषा स्थापिक पा नेन प्येव हो। देव ग्राम ने नियम स्थापिक यदेः र्सून द्वं न ज्ञुन्य वाषा या वे द्वु स्याय यह वा रायवा वा दि से राय विवासी या दे-श्च-त्वावान्य दि-ह्येर-गाुव-वाबि-श्चेद-गाुद-तदी-वुब-ह्येरा वि-व्य-व्यव्यवाब-स्वि-देर्यार्य्वायम्। विद्यमानुः अराम् विद्यायः देवाः विद्यायः विद्यायः <u>२८। गांव मिले खें र केर मिर चमा केर खें र ला</u> सिर से प्रेर रेम स्वर खें में केर खें र डेबा निष्ट्रवायायदे वे दे स्राम्य केषा चयार्देवा निषायम के त्युम वादाधिवादे त्यार्दे। बिमागुवामिवि प्राक्तिया भीता विषय मिन्नि स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्व गार वार्चवायाराताः स्वायारात्वयाराह्मवारात्राराह्मवारात्राराह्मवायारात्वयाः स्व इट-चित्र-द्व-दु-वाशुटब-घित्र-शुर-गाुव-ह्य-तु-इग्रामेश-शु-ळॅवाब-दुवा-वि-व-धिव-घर-तर्रेन्र्न्। भ्रिन्न्र्वाववन्त्वावे धर्म्यायम् वर्षेषातवातः धर्मुन्यः सेन्यते हीर-दिन। वास्निन-दे-स्थानेयाही:यानियाण्यानायर्ष्यान्य तर्याणीयान्य स्थान ध्रेरागुवार्सेनामुः इयापरानेवापार्सेन्यान्य विवादिन्यो विवादिन्यो विवादिन्य ग्रीट खें अथ त में या कि स्वेर कि स्वेर कि स्वेर कि स्वेर स्वेर सिवा कि स्वेर सिवा सिवा कि सिवा सिवा कि सिवा स च्चेन्याः भूना नियनेवन्याविष्ट्रस्थितः याद्याः । हिवः योः स्थान्याः निवः योः स्थान्याः । विवः ग्रमुद्रमः यदेः द्वेतः दे दे दे व

 $\begin{array}{lll} & \qquad \qquad & \qquad &$

सक्रेस्य प्रस्य प्राय प्रमुद्रश

इयम्बर्गः मुन्यं दिन्ते निक्के स्थान्ते । स्थान्यं स्थान्ते स्थान्यं स्यान्यं स्थान्यं स्थात

म्बानेबाग्री सुरार्ये ग्वाराधेवाया ने किता चिता हो स्वानेबाग्री सुरार्ये ग्वाराधेवायो स्वानेबान्धी स्वानेबान्यी स्वानेबान्धी स्वानेबान्धी स्वानेबान्धी स्वानेबान्धी स्वानेबान्धी स्वानेबान्धी स्वानेबान्धी स्वानेबान्धी स्वानेबान्धी स्वानेबान

इस्राचेश्वरक्तीं, विस्तर्भात्ते स्वर्णा क्षेत्र स्वर्णा क्षेत्र स्वर्णा स्वर

नावशः इटः में विस्रशः नसूतः या

नेश्वत्राधित् श्रीः इत्राचेश्वराधित् । व्याप्ते । व्याप्ते । व्याप्ते । व्याप्ते । व्याप्ते । व्याप्ते । व्यापत्ते । व्यापत्त

इसल्युमान्नावयन्त्रिक्षण्यान्यम् स्ट्रम् स्ट

न्वें रायानायाः मी नें वर्ता वी वा

য়ড়য়য়৽ঀয়য়৽ঀঀয়৽ঀয়ৢঢ়য়

अर्देर पश्चरापते देवा

चवि'प'अर्देर'प्रसूष'पि:र्देव'वे'(सुट'र्घेष'०५षा:व्रबावश्रवाक्रन'र्द्दाकेर'वेव'ग्री'सुट'र्घेष'

सुर में न्द हो हो अबेद न्द । । विस्रम विषय विषय हो विस्रम हो

प्राचित्रभाग्नी स्वरास्त्र प्राचित्र स्वराम स्वरास स्वराम स्वराम

यावन्तरादे क्ष्मा याद्या से प्राप्त से स्थान स्

हे सूर नर्भु शाले वा

र्राची में में हिंदा की अपने विवास की प्रेम में मानिक की मानिक मानिक की मानिक मानिक की मानिक की मानिक की मानिक मानिक मानिक मानिक की मानिक मानिक मानिक मानिक मानिक मानिक मानिक मानिक मान

कुर्णुबर्मायुःकुर्यस्य विश्व कुर्यस्य स्ट्रिंस्य स्ट्र

|ロ対4.対に、ロナ.もの、口は、美し、からに」

वर् नवे से म्यान्य महिना के ना होता होता स्वाप्त महिना महिना स्वाप्त महिना स्वाप्त स्त

वीद्यायायटान्यचेट्ट्री ।

वीवय्द्याय्याय्याययः चित्रवे श्री स्वियाय्याययः चित्रवे श्री स्वियाय्याययः चित्रवे श्री स्वयाय्याययः चित्रवे श्री स्वयायः चित्रवे स्वयायः चित्रवे श्री स्वयायः च स्वयायः चित्रवे श्री स्वयायः च स्वयायः च स्वयायः च स्वयायः च स्वयायः च स्वयायः च

यक्षव निर्निष्य

पविषायासळ्य विदायमून याया

शुर्याद्र भ्रे भ्रे देवाया भ्रे देवा सिर में भ्रे अके दावस्य म्यया स्वया धिवा

कॅंगर् सा सुर्यापते र्देव वे सुर रेंदी सक्व ने दिया धेव है। देश रेंदी केंगर् अःस्वायाधीरातर्यानातेः द्वीराहे। अर्दे त्याया वाञ्चवायावाराधीयाः येतास्या यत्रया अर्देटबर्यत्रया ५ सूर हुट चत्रया वट मीत्रया हुते तया रगवायत्रया स्याचत्रमा ह्यापत्रमा गुःर्वेसायत्रमा विषानिदार्यान्या विषानिदार्यान्या है। च'व'र्थेर'म'ग्नर'थेव'म'र्ने'र्गाष्ट्रस्य रुर्गावेग'रु'म्यूर्य हे'ग्वाव्यायां ग्री'सुर'र्ये'वेय' चि.यपु.वीरबाक्षे.पर्केपु. पुबानी याचे वा स्थान राष्ट्रिया तथा स्थान राष्ट्र विश्व राष्ट्र विश्व राष्ट्र विश्व र र्रा विर्देशम्बर्धः च्वान्तुः श्चान्यः त्रायः वर्षायः वर्षायः वर्षः वर्षायः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः याञ्च पार्श विरावी विरावी के ररावी क्षूर ग्रीका राष्ट्रका रार्शे विराधका यावव वि स्वीते स्थित स्वीत |ध्याया: विकास के प्रतास के प्र र्ट्रम्बर्भास्त्रम् अट्रम् अट्रम् अट्रम् वर्षा स्राम्बर्मा स्रम् दवः यः दरः ग्रुः वें यः यः वे रें व र्येट्यायः ठवः दरः वें व र्येट्यायः ठवः यः धेवः पर्दे । दिरः च वै तिन्यामान्द्र सार्वेद्यामार्थे । वे च वै न वि न वि न वि व चर-दुवर-वेष-धर-मुःह्री र्वेष-ग्राट-मिन-धर-वर्द-र्थेन-दी रण्य-धर-स्वाच-वे-न्वर-र्य.र्ज.तायमेव.तार्टर.लूट.जा.मेव.तपत्रा लट.व.जब.जब.युवा.तर.विष्.वेब.पक्ट. र्ट्री निर्द्धवायावी तर्मायाया स्वामायाची स्टाची स्वीमाय स्वामाया स्वामाया स्वामाया स्वामाया स्वामाया स्वामाया म् अक्ष्य कुट्टा स्ट्रिंट्य में में स्ट्रिंट्य में स्ट्रिंट्य में में स्ट्रिंट्य म

वावर्गः न्दः सं विस्रायः वसूत्रः या

વાલીવાયા. શ્રુવા. તું. તું સુવાયા. શ્રુવા. શ્રુવા. શ્રુવા. શ્રુવા. શ્રુવા. તું. તું. શ્રુવા. શ્રુવા.

रैण्या कुर्ने देवा के प्याय स्थाय कि स्था कि स्थाय कि स्य नु-न्दः मुल-र्ये-न्दः नुषः नेति न्यायः र्येण्यायः सून्तुर्वे । तिन्रः ने जिन्ना गाः सूनः यदः रैण्याधेवाने। देर्णार्यार्या अल्याया अल्यायि क्रुः धेवायि छेराद्या रू प्रविव से प्रदापाय के प्रमुद र्थेंद प्रवि मुक्त में प्रदेश में प्र र्झेंदे दें व दर रेण व ग्री दें व वे सुर रें दर स्री अकेद दर विश्व व स्थापित स्थर मे व धरः नुर्ते । (न्तुका अधरायका दे। क्षेरान्दार्ने वाक्ष्यका व्यापार्वे ना ग्री विकार श्रीना विकार स्थापिका स्थ र्वे। विषावरणिक्षुं अळेर् दुण्वे कॅरायते वे पर ह्यूंर्य क्षे प्रते ह्यूं धेवाया हिते क्षे अळेर् दुण्वे देव र्यर्ष શુ.વાકૂર-તાવુ.લુ.તર.શ્રુર-તાવુ.શ્રુ.વાવુ.શ્રું.તાવુ.શ્રું.જુવ.તાવુ.શ્રુર-લે..દ્યું.ત્રાનાવજાનાવાવવાશ્રું.જુવ.તાવુ.શ્રુ.વાજીવ.તાવે.તાવે. श्चै देवा वर में प्रथम द्वारिया महिर प्रयुग्ध में के के कि में कि में कि में कि में में कि में में में में में यते मर्चेद मुंदित्। इसम्परमेषायते विस्वादि विस्वादि स्वादि ावस्यान्त्रे,यान्त्रेयः त्रीयः प्राप्तः प्रदायः तुः वासुसः याः दूषः त्रयः विद्यापते । वस्यान्यः विद्यापते । वस ८८.५.८वा.पहुं ब.तपुं विश्व विश्व

ने न्या नश्रू न परे न्यों शया

वाशुखायाने नवानमून यदी नवीं शायाने प्यान हिते मुनावर्षे अप्यन तन् शामुना

र्झेटअन्वरावर्देन्द्रयाग्रुयाग्चे द्वेत् । सिरास्यायायायाग्वयान्द्रयान्त्र्यान्त्रया

पर्टे.पटः क्षण्ठेश्वः ताप्त्रथः पर्टे व स्वाप्त्रयः पर्टे व स्वाप्त्रयः स्वाप्त्रयः स्वाप्त्रयः स्वाप्त्रयः स्वाप्त्रयः स्वाप्त्रयः स्वाप्त्रयः स्वाप्तः स्वाप

ग्रवशन्दः में विस्रशन्त्रम्भ्रवः या

ग्रम्बर्भिः

चित्रायात्रवात्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवात्रवे । प्राचीत्रवे । प्

ल्याबानुवान्त्राच्यान्त्र स्वा ध्यावान्त्र स्वा व्यावान्त्र स्वा विष्या विषय स्वा विषय स्वा विषय स्वा विषय स्व

क्ट्रिंगवे स्वर वर्ष्युर प्राद्या विद्राववे कु खेर देश कु वे खेरा

श्रेश्वराश्चित्रश्वरात्वराक्ष्यः स्ट्रान्ता वित्रं वेशः विवाशं विवाशं दितः वित्राविवा

ౙఀఀఀ౫ఀఄఄఀ(५८:५५:५०) दे 'ඕअ'ऺऺॎ (५८:५०:५:५८५) धुँग्राष'(१५०) गुँ सें५'धे सं बेबर्गाष्ट्रीक्षर्यान्दरात्रम् पुरुष्याः यानेवर्षाः योः स्टिन्ययेः याबिः वेः त्रेक्षायाः सूत्रः स्टुः न्दाः विदायस्य दे निवित्राची क्रुति निर्दे ते दे देश पासून तर्दे पाया अर्दे प्राया बेवापता क्रेंन प्राया दे रा श्चर-पर-१८र्देन्-ध-न्द-र-पावव-श्ची-भू-प-१। पाचनर-दव-नु-१८त्-भेष-धित-भेष-श्चेव-के-र्यण-पीष-श्चेप-ध-न्द-सुव-त्वीव प्यतः तर्देदः) प्यतः श्रुतः प्रतिः श्रीतः हो। तर्देदः प्यः (ददः क्षुः पः) त्यः श्रूषाः प्यतः विवाधाः विवाधाः क्र.)ळॅ र.पदे र्रे ब्रिंट.पर.पर्ट्र (यर्ट्रव्यक्षिकाद्वेव वे क्यूनाचीकार ट.वावव वे ब्री ब्रुपायवार वाया (रदःगव्वरःग्रेःञ्च्यायःश्चयःहिदःग्रवःर्ग्युदःपवेः)ळेट्रःट्रःग्रुवःर्यः प्रतः कुलःर्यः त्यः स्वापः स्वापः स्वापः चुर-च-त्र-त्न-तु-चुर-च-)**इयग-र्डेंत्-पते-**चुेत्-र्ते । (ते-भ्रत-तु-шर्न सर्न-प्यम-क्रे-त्र-स्व-य-मा-क्र-व-ळेव'र्य'भू'राहू'बेदि'कु'र्वे'ब्वीय'य'ठव'ग्री'तद्याय'ठव'ग्री'कु'र्देणवाव'य'दि'तुपाय'दे'तुपाय'दे' ठवः विषाचुः पार्दे द्रषावषा रतः तृः द्रवादा परः दश्चरः पदिः वातृत्राः श्रूः स्वेषावाचुवाः तृः स्विवाः विषाः वा <u>लाञ्चर्यामा ५ व कु मुक्तापार मेर्या कुलार्य लाज्जलार्य प्राप्त</u> विराधाला चन्वात्यः ब्रिअःचन्वावीयः क्षेत्रः क्षेत्राः स्टेन् स्वरः श्रुषः स्वरः चार्यः चेत्रः स्वरः चन्वाःथःब्रिअःचन्वाःवीबःक्षुवःकेवाःर्सेन्-पतेःचनःनुःग्रुनःन्नि । श्चिबःचःगाःकःवःवर्नेन्-पःयःळवाबःपतेः श्चुबःश्चयःर्यःयः मुलर्येबाञ्चेदार्डेवार्स्डेदायालार्सेवाबायरायुरादा

ग्रवशन्दःर्भे विस्रशन्द्रवःग

तायः हुन्यः विवायः अक्ष्यः अपः पट्ट् यः तथः ट्वोः हुन्यः दिः ट्वोः हुन्यः प्रायः विवायः विवा

यद्यान्त्रविद्यां स्ट्रिंट्याये स्ट्रिंट्ये स्ट्रिं

सुरार्धे द्वा फुल्ट्रु अया गुर्आ दिव दुः भ्री सुराधी सामानिता

द्यस्त्र म्यान्त्र स्त्र स्वर् स्वर

श्ची अक्षेत्र-प्रकृताक्षित्र सुन्द्र स्थान्य स्थान्य स्थान्य सुन्द्र स्थान्य स्थान्य

भ्रत्यात्र्वाकाः भ्रीः स्ट्राच्यात्र्वाकाः स्ट्राच्यात्र्वाकाः स्ट्राच्यात्राच्यात्रे स्ट्राच्यात्रे स्ट्राच्य

त्रियः स्वितः स्वतः स्

યું. શ્રુંન્ તાર્ટી તાર્ટુ ક્રિયાને શ્રું તાર્ટી તાર્ટું સ્થાના તાર્ટું તાર્ટી તાર્ટું સ્થાના તાર્ટું તાર્ટી તાર્ટું સ્થાના તાર્ટું તાર્ટી તાર્ટું સ્થાના તાર્ટું તાર્ટું તાર્ટું સ્થાને તાર્ટું તાર્ટું તાર્ટું તાર્ટું તાર્ટું સ્થાના તાર્ટું સ્થાને તાર્ટું તા

पावेश्वर्या क्रि. प्रचेश्वर्या स्थान्य स्थान्

र्ने लेषा चु पर्दे ।

र्में देश देश या

स्यार्गे देश देश या या

रेअ वे रगाय प्राप्त केंब्र सेंद्र या । क्षेंद्र सेंग्य पर्देद्र प्रायय हे प्रविद हैं।

रे विवासुर र्धे स्वेर रेस धारी हेवा सर वातुवा वा दे वातुवा वा रहत हेवा वा पठवा क्युः चः रवाषाः सः तः स्वाषाः सदिः स्वीरः हो। (वा त्वावाषाः वेः गावः व्यवाषाः वेः स्वाषाः वेः स्वाषाः सः प्रदा रुः विष्यं स्वार्थे । प्रति त्याया स्वार्थे र प्रारम् विषयः स्वार्थे र स्वार्थे विषयः स्वार्थे । प्रति स्वर्थे । प्रति स्वार्थे । प्रति स्वार्थे । प्रति स्वार्थे । प्रति स रवाबाने क्रिक्वाबान्तु अळव अर वहें व प्यवाविषायय हैंवाबान्नु प्यवावी विविधायबाद हो राज्या निर्मा पदे पर विरं सूर्वा प्रमूर्य पर के विषायर्दे प्राय हैं विषा क्षेत्र प्राय के विषा विषा विष्य विषा विषय विषय विषय व्.क्शर्यात्रचीत्रराच्याः क्षेत्रव्यात्राच्यात्राच्याः व्याच्यात्राच्याः नियात्राच्याः व्याच्यात्राच्याः व्याच्यात्राच्याः व्याच्याः व्याचः व्याच्याः व्याचः व ५८.२गव.च.व.च्ह्र्रेन्ट्री ।गीव.वय.ध्रुंव.शूट्यत.संभ्री.चय.पुरात्त्र्त्त्रेत्र.संट.सं ला. खूर्याबातपु. कूराया. ज्ञारायपु. क्याबाता प्रतितार होता हो. लबा. चु. (वादर वरे. ख्याबाडी) तर्षेत्रः द्वेत्रः द्वेतः द्वेतः द्वेतः द्वेतः विः यत्रायदे देनः क्वात्रः याः स्वात्रः यदे वित्रः स्वात्रः स्वतः स्वात्रः क्रवाबात चुरारे । दिबा ग्राटा बें अवागा वा वा केंद्र केंद्र वा प्राप्त निवास केंद्र वा वा वा वा वा वा वा वा वा वःर्बेन्द्रन्द्रः स्वावायते स्वावाया व्याप्त्र स्वावाया व्याप्त्र स्वावायाया व्याप्त्र स्वावायायायाया व्याप्त केंगः अद्युत् रपते र्देत् ग्री भी राम् । (म्रम्भाव के क्षेत्र पते हेत् भीत पत्र क्षेत्र प्राप्त के स्वर्भ । क्षेत्र प वै र्रे ग्रुट पर ग्रुप भेव प्रते भ्रुर चर्ण भ्रुप भेव वें। १८५ भेव वे सेंर प्राया प्रते अस्व अर प्रहें व प्रवाणवया

नावशादरार्चे विस्रशानसूत्राम

पद्नित्नामी श्राद्वे म्याद्वा स्वाप्त स्वापत स्व स्वापत स्वाप

भ्रुं : अळे ५ : द्वा : वी : विक्ष : व

र्ट्री निवुः सून्देन्यालबः क्रिटः चिविवः श्रुवाः निटः झः निविवः वृज्ञः चिविवः सूनः निविवः सूनः निविवः सूनः निव क्षिः सूनः स्वान्त्रः सून्यः स्वान्त्रः सून्यः स्वान्त्रः सून्यः स्वान्त्रः सून्यः स्वान्तः सून्यः सून्यः

सक्रेस्य प्रस्य प्रमण प्रमुद्रमा

धरः दःहे ः द्वरः यादशः चिवः देश।

स्थाने बाग्री विश्व स्वाप्त स

त्तर्भे के स्था विकास के स्था के स्था

ग्रवशन्दःर्भे विस्रशन्द्रवःग

त्रात्तात्र स्तृ स्त्री स्वाप्तात्त्र स्वाप्तात्त्र स्वाप्ता स्वाप्तात्त्र स्वाप्त्र स्वाप्तात्त्र स्वाप्त्य स्वाप्तात्त्र स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्

भ्रीं अकुर्य-प्राच्याक्ष्य की स्टान्य विषय स्वीत्र स्

ने नाशुस्र नावम प्यन यदिन न स्ना

चाहेश्यत्यात् (चाहेश्यत्यात् द्वात् क्ष्यात् क्

वावर्गः न्दः सं विस्रायः वसूत्रः या

व्यक्तित्रम् विष्यः मित्रः स्टान्ति स्थान् विषयः स्टान्ति स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थ विष्यः स्थान्ति स्थान

ब्रे-ध-मावव-दमान्वे केंबाग्री सुद-र्धे चक्कदार्ति द्रा प्तवे क्रेंदर्द पर्देदर्दी न्वादः र्वेदे अर्दे अर्थ गुव न्वादः र्वेष नन्वा वीष र्वेष गु सुदः र्वे न्वा नुवेष । वेषाचाशुर्षायदे भ्रिमाद्भा इसायम् मेयायामा वाष्या ग्रामा विद्या ग्री भ्रेषा प्राप्या लट.च मिट. हिंद. श. पर्यं भी वाद्याय. सुर्वा स्था सम्बद्धाः सम न्द्रन तन्त्र त्या व्याचित्र वित्र व गुटःगुवःद्वादःर्देषःर्देःवेःवुःक्ष्वाःविष्ठवःर्द्ध्वःयदेःदेधःर्वेःयःचेदःयःवषःर्वेषःयःधेवःग्रेः र् केंबा बुद द वा बुद पर स्था देश देश देश हो हैंद देश वा स्था में बुद पर दे देश हैं देश हैं के बुद देश हैं के ब इर ग्राह्मर्या स्वारा द्वारा विषा विषा विषा विषा स्वारा स् र्वादःस्थाःक्ष्यःग्रीःसुदःस्यमुन्द्विःचिःस्दिःविःस्वादःन्वाःवात्त्र्वःस्यादेःस्वात्वात्यः र्रा तर्र द्वा केर भी व केर बेब त्वार मिर प्रति हो र प्राचित हो स्वार मिर प्रति स्वार स्वार केर स्वार स्वार केर ग्रे-स्ट-र्ये पक्चन वि पत्ने र्स्नेट विषाणशुरुष पत्ने क्विन र्से | दिषाव पक्चन विरादर्गन पत्ने

র্ম'ব'র্ক্তম'শ্রী'ধ্রদ'র্ম'ন্ম'ন্ম'র'র জ'দ'ই অ'অব'র জারী বা দ'উবা'নশ্পুর'নর্উম'র্জন'র ইম'র বা

विः कैवा दे : भू : दे ते : तु व : दे : त्र च हू व : परे व हू व : परे व : कें व : कें व : परे दे : कें द

सक्रेस्य वह्र सन्दर्भ न्त्र म्य

क्रुवा,चर.कु.सं.इ.चक्कर.चर.कु.ल.कु.च्यूर.च्यूर.च्यूर.च्यूर.च्यूर.कु.च्यूर.च्य

सुर-र्से त्यः र्से वाश्वावानुसारे प्येवा।

वें न ने न्या हे वे ही र यहून ले ना

र्श्वे र मान्यमा के वार्य महे वार्य महे वार्य महिला हिला के वार्य महिला है वार महिला है वार्य महिला है वार्य महिला है वार्य महिला है वार्य मह

वावर्गः न्दः सं विस्रायः वसूत्रः या

च्र-श्रे-श्र्व-त्व-ति-श्रव-ति-श्रव-ति-श्रि-ति-श्रि-ति-श्रव-ति-ति-ति-श्रव-ति-श्रव-ति-श्रव-ति-श्रव-ति-श्रव-ति-श्रव-ति-श्रव-ति-श्रव-ति-श्रव-ति-श्रव-ति-श्रव-ति-ति-श्रव-त

क्ष्याच्ची-क्ष्याद्वस्त्राच्चा क्ष्याच्ची-क्ष्याच्चा स्थान् स्यान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्य स्

য়ড়য়য়৽ঀয়য়৽ঀয়৽ঀয়৽ঀয়ঢ়য়

२८।) इव.जव.त्ययःतपुः अर्ट्र.जयः ग्रीट्यः क्षेत्रः व्रीच.व्रीच्यः व्रीच्यः व्यवः व्रीच्यः व्यवः व्रीच्यः व्रीच्यः व्रीच्यः व्रीच्

वालाने केंबा की खुटा रें हो हो देवा वाबुटबा वादी हवा है हिया वादी है के वादी हेवःग्रीः प्रथमः प्रविदः इस्यायरः श्रुट् छिटा प्रविदः स्याः केरः ग्राः इस्याः ग्रीः प्रविद्याः र्श्वेन हो र्श्वेन हो त्यायया प्रमुवाय देव केवा सकेवा सूर प्राचन त्या प्रस्व से प्राचित्र यर द्या र्ख्यायार धेव सूर अर्वे ते यादेर रागा रुवा विव र्ये इस्र रागी यार्थिया यी मुव चलेव गुषा अर्वेषावषा । षादी गिरिट व गिवषा पदि रच रेच खेला चरा अर्ह्ना । छेषा चन्नद्राचनार्थे विनायकद्राया र्भेचाद्र्येन्द्रचीयायविन्ने विस्वाचन्द्रदेयानाया लट.र्चा.यर्बेब.तपु.वाषु.थेशब.द्वीरा विषय.र्चा.शुच.तर.सूवाब.त.त्वा विष. पर्विट.यम.भेट.वि.यपु.पर्ग्रेज.त.जम कूर्य.त.पर्यम.पपु.पूर्वा.पि.यस्त्र.मेज. चेन्-चनेषालेषाचुःचषासर्केन् हेन्-चनेषा । न्षे ह्येन्-धन्यन्। चगादे ह्येषण्यस्य र्टाम्बुन्यायम्।वटायटाम्बन्याया विषात्त्वाटाम्बन्द्रात्त्रेम्या च्चित्रात्राञ्चाबारम्बाधारम्बात्राच्यात्रम्बाद्याचि त्रम्बाद्यात्रम् च्चित्रम्बाद्यात्रम् चल्वामाराइसमायदरसार्सराचार्येन्यमास्रवतान्वास्राम्याचेन्य ग्रेग्, श्रेया स्राध्या स्राध्या के विष्या स्राध्या स्राध्य स्राध्या स्राध्या स्राध्य स्राध नरः बूँव पर बूट रें विषान्त्र र्हें।

दे'णवव'त्य'श्चर'रा

महिराया विषया । स्वाप्ता । स्वाप

सक्रेस्य प्रस्य प्रमय प्रमुद्रम्य

दे.चबेव.री.चीयात्राचनवाश्चरत्याश्चरत्यात्राच्याः चित्रः च

लट्र अर्टे ज्या वर्टे जार्च के स्त्रीं द्राया में वर्षे वर्ष वर्षे वर्ष कर्षे वर्ष कर्षे वर्ष कर्षे वर्ष कर्षे यर्द्धरश्चरर्स्स् र्नायायश्चरम् त्वायायः स्वायायः स्वयायः स्वयः स्व ब्रेन्यने भूने भून केंशने न्वायर्ने वर्शे शेंप्यन्त्वा सम्मेवा सम्प्रायम् स्वीत् केंशशें र्शेष्पराद्वाप्यस्त्रेवाप्यस्पपराद्यास्त्रे । दिवार्शेर्शेष्पराद्वाप्यस्त्रेवार्श्वरः क्रेश्रेर्शेष्परः द्वायम् देवायम् देवायम् । त्याम् वायम् अर्थे । स्व कुर्म् वायम् अर्थे । स्व कुर्म वायम् अर्थे । स्व कुर्म वायम न्वायः नरः शुरुः त्रुः स्थाः भीतः हुः श्रुष्ट्यः सरः वश्युरः रे । स्थियः भीतः हुः श्रुष्ट्यः तरे न न न न न न न शुःश्चिर्त्यन्त्रत्त्व्यून्त्रे । निर्ने निर्माण्यून्य स्थेस्यास्य स्थानित्र विष्ट्रित्त स्थानित्र । स्थिस्यः यष्ट्रयायराजवनावाणराज्ञायाद्यायाद्यायाद्यायात्र्याचावत्रायात्र्याच्यायाद्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायात्र्याया सर्बर-वर्ष्यक्र-र्रो । वार-द्यानाः क्षेत्र-हे क्षेत्र-विदेशे संभीर-वार-द्यानाः हे क्षेत्र-विदेश अब्रूट.य.लूट.वर्चैट.चर.वर्चैर.रू। ।लुट.चैट.य.वर्टूट.कवाश.टट.वर्चल.चर.वर्चैर.रू। र्येद्। विश्वासन्ता ने नविदानु न्वास्था ग्रीशाय हेंद्र ग्रीन सन्दरमा वदाया मुश्वास स्ट्रेंद्र यन्ता अवकायराचेत्याद्वा भ्रवायराचेत्यायदामुळ्याभ्रुरावकाम्बर्धावीःभ्रुर षक्रेन.र्जं.योशेंटश्व.त.र्न.रेया.यु.स्रेश.र्या.ताथ्य.तश्य.क्र्या.यी.श्री.षक्रेन.यीश्व.यर्जंश.ये। योवय. मुक्षानभूत्रामान्द्रामान्द्रतायका मुद्दानदे देताद्दा के कार्यमान के भिक्षामायका मुद्दानदे के का र्यादर्। वालवायार्भ्रेवायरान्चेदायादर्। श्रेश्रश्रायशान्त्रशान्द्रितादरार्क्षशासेवायान्तेः नश्रमायश्चित्राच्या नर्भेष्रश्चायश्चित्रप्ताचेश्चभ्रम्भ्यायश्चित्र नवे भेशन्तर धोत पवे श्री में विषय धोत स्व कुत्वाव न वे धोत न ने नवें विश्व श्रुत्य मन्त्रे स्थानामा स्थान्त्र । निर्ने मार्श्वे मार्थे स्थानमा स् मंत्रे हिरारे वहें त हे वि मात्र भागी किंगा भागी । यह द्या माहे व्हान नवित (वेशकेटा) अर्हेट न वुःवेशःस्वःश्वेःभ्वाःश्वेरःग्वेःस्वाशःश्वे । । विदःवर्ग्यः विदःवःवे श्वाःवर्षः विदःवशः

য়ড়ৢয়য়৻৻ৼয়৻৴ঀ৻৻৻৴ঀৢৼয়৻

द्रा विद्रिक्षण्याः भ्री सक्षेत्रः भ्री विद्रित्तः स्त्राच्याः स्त्राचः स्त्राच्याः स्त्राचः स्त्राचः

स्तृ क्रिर्ण्य-दर्स्य क्रियं क्रियं

(वश्यानाव्ययाक्ती विषय अस्ति वर्षे निर्मय वर्षे निर्मय अस्ति वर्षे निर्मय वर्षे

यः वा व रा साविदे विस्र सं भे सा है। । सूर दर सुर सा दवा पी रा से नि

ख्रिमः इम्म् । क्रि. (ड्रेचा-च-क्र्याभाववृक्ष्यभाववश्यक्रोः के त्वस्य-व-क्र्य-मा)क्र्याभाववश्यः के त्वस्य-प्रति (द्राचाच्यमः) भ्रिवे क्रि. (ड्रेचा-च-क्र्याभ्राम् विवाधः क्रि. विवाधः व्यक्ष्यः व्यक्षः व्यवक्षः विवक्षः व्यवक्षः विवक्षः व्यवक्षः विवक्षः विवक्

श्चान्यः भ्वा । व्यान्यः विश्वान्यः विश्वान

वयान्दर्यं वर्षः संदे द्वार्षे यादी । इसम्वेशायस्य धेव हुं नदे हेवा।

च्छलायदे क्रियाय स्थाने का यदे । प्रथलाये व्यवस्था स्थाने का स्थाने का यदे । प्रथलायदे व्यवस्था स्थाने का यदे । प्रथलायदे ।

त्यत्रश्च (य्याकूयांतर् क्षेट्रांस्य्येवांतर क्षेट्रांस्यो)

विश्व स्वाकृतांत्रा विश्व स्वाकृत्वांतर क्षेट्रांस्य विश्व स्वावांत्र स्वावां विश्व स्वावांत्र स्वावांत्य स्वावांत्र स्वावांत्र स्वावांत्र स्वावांत्र स्वावांत्र स्वावांत

देते : हे सं त्या तर्दे द्राया द्राया के द्राया स्था स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स

र्री दियः हेन्यायः स्रेराचार्यात्रात्रेन्यात्रात्रात्रेन्यात्रात्रम्या चवि वासुरसामा दे प्राप्त सुआ केंसा ही । विश्व साम् दि सामे समा ही । विश्व साम हिस ग्रेम नमून मिते हेन ता तर्दे प्राप्त प्रमान्य विषय प्रमान विषय । वाशुअःवाशुट्यायाने देअःयानिवेदावअयानर्रे विक्कृत्त्रः देः देः द्राञ्चेते स्वाभेया अ.वार्ट्रवाय.त.चर्थे.चषु.रट.विश्वय.घ.श.वार्थेश.क्रीय.चर्त्रय.स् । ट्रेप्ट.इय.ज.वार्चिवाय. वः अपासुअप्टर्स्य ग्रीप्यम् ग्रीम्यम् ग्रीम्यम् निम्न तदीनः तर्वेषाः पदीनः विस्तर्भनः चह्रवाबार्यान्दराचह्रवाबाखीत्र क्षेत्र त्यां वाद्याचार्या विष्वाचार्या विष्वाचार्या विष्याचार्या विष्याचार्या विषया ८८.८.५४.वै८.यपु.विश्वयाविश्वाविश्वर्यात्रे विश्वयाय्यू त्यम् ८५.यु विश्वयाय्यू व यक्षेत्रःश्र्व दिष्ठः इत्रायः द्वारा द्वारा द्वारा व्याप्तः विश्वरा वि र्वो.च.र्ट.जिर.रे.श.चक्षेत्र.तपु.विश्वयाविश्वाविश्वाविश्वाविश्वाविश्वाविश्वाविश्वाविश्वाविश्वाविश्वाविश्वाविश्व ८८.श.८८.कूथ.८८.थ्रथ्य.जी.वित्रयाचिय.वीयाचर्त्याच्यी वि.त्राची.वित्रयाच्यी. ग्रीमानसूमार्से दितःहमायार्स्यापान्याप्तिमायाप्तिमायाप्तिमायार्थे वासुअवासुरमायते प्राचित्र विकाने विकाने विकान के विकान के विकास के वितास के विकास के पिरायाना मुक्ता मुक्ता विश्वास दे पिरायान के थः चवा पः नृदः चठरा पः नृदः चवा पः येन् । पये । पय्या विश्वा वा सुद्या पः थयः नृदः वे । पिरायान्तर्भात्तर्भात्त्रम् विष्याची क्षेत्राची क्षेत्राचित्राची क्षेत्राची क्षेत्राची क्राची क्षेत्राची क्षेत्राची क्षेत्राची क्षेत्राची क्षेत्राची क्षेत पिराया भी या प्राया है। दे से र व रे रिवा वे रिवाय प्राया है वा दे से विवेश है रे रिवा वा या या विवेश व.श्रावयात्रावयात्रात्रावयात्राव्याव्याव्याव्याव्याच्या

য়ড়ৢয়য়৻৻ৼয়৻৴৸৻৸৻৴ঀৼয়

त्यः चित् । प्राचित् । प्राचित् विश्व प्राचित्रका स्त्राचित्रका स्त्राच्या स्त्रच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्रच्या स्त्राच्या स्त्रच्या स्त्रच

प्रथमाता स्थान्य स्थान

प्रश्चित्रप्रचित्रप्रचित्। विकाश्चित्रप्रचित्। विकाश्चित्रप्रचित्रच्याचित्रप्रचित्रप्रचित्रप्रचित्रच्याचित्रप्रचित्रप्रचित्रच्याचित्रप्रचित्रच्याचित्

यक्षेत्र.लूर्.ज.सूर्वाश.त.की

मेबासरामुर्ते दिवासन्तर्

नश्रुवः विदः विदः विद्यान्यः याचे या स्वा

सः स्वाबर्यः श्रुट्यं विकावित्यः स्वावित्यः स्वावित्यः स्वाविव्यः स्वावित्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत

র্বিল্ম'ব্দ'নতম'ন'নাৰ্নাম'তব'নড্যা

ला. मृत्यस्य त्यू त्या सीला. लायट. मृत्यस्य हिता सीला. स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य सिला स्वायस्य स्वयस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस

प्रिक्ष क्षेत्र अस्त्र म्या क्षेत्र कष्टे क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र कष्टे क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र कष्टे क्षेत्र कष्टे क्षेत्र क्षेत्र कष्टे क्षेत्र कष्टे क्षेत्र कष्टे क्षेत्र कष्टे क्षेत्र कष्टे कष्टे क्षेत्र कष्टे कष्टे क्षेत्र कष्टे कष्टे कष्टे कष्टे क्षेत्र कष्टे कष्

त्रंत्रात्तेत्रः खुत्रात्त्रः त्रियाः चुत्रवित्रः विषयः यात्रः विषयः वि

स्टायान्यून नकुराने प्रवाकित। विवायाया स्याया कितावा विवाया स्थाया

यदे-ब्रि-नार्डन्, श्रेट-टे. यान्नेच.त.चे.च्ये-टे. याट.ब्रेच् च्यं स्वायः प्रकार्यः स्वायः प्रकार्यः स्वायः प्र यदे-ब्रि-नार्डन्, श्रेट-टे. यान्येचे.त.चे.च्ये-टे. याट.ब्रेच् च्यं स्वायः प्रक्षः स्वायः प्रचित्रः यदे वाञ्चवाषाञ्च पञ्चर्या विषय वाष्ट्र <u>२वो क्षे २वो २ व्या १ वविष्या) अ वार्ते वाषा या त्वर ये व्या त्वर ये व्या त्वर ये व्या त्वर ये व्या त्वर ये व</u> वाञ्चवाबाञ्चाः अःवार्क्रवाबाः वे दे द्वाद्वो अःद्वो रः धरः द्याद्वे स्वरः द्वी रः द्वी । वि देवादा रे क्यापर ब्रेव पते ब्रेर शुर पहून प्रते स्वर पाने शुर या नहन प्रीत के लेग ने राप वैदःग्रादःदेःवैदःधेवःहे। ग्रेःचमदःश्रषःग्रादः। द्वोःचःददःश्रेःद्वोःचवेःद्वेःद्वंरःश्रदः चक्रवः नुः येन् रायाः शुरः नुः यान् व्रायाः विषाः चिषः विषाः ने विष्याः विषाः वेदःह्मदःर्देरःदुःअःगुपःयःधेदःर्देःवेषःतकदःयःदेःधःरेष्यषःहे। श्रेषाःष्यष्यःपःयः र्सेवाबायान्त्रम् नुम्या पर्देन्यवे स्वान्यम् विषयम् विषयम् विषयम् पिराया में दाया के बार में देव के कार्या के बार में कार में का वर्ने न्वा तुरायान्त्रवा वर्षेत्र या त्रीवा त्राचित्र न्वा नियम् वर्षा विषय वर्षा वर्षा नियम् वर्षा नियम् वर्षा वी-दिवो-श्री-दिवो-शुक्त-स्वान्यम् वास्त्राचासुयान्येव दे त्याचा सुवाना स रेण चेत्रणीय प्रस्यापासे स्वाप्त वो सी प्रमास मान्य प्रस्य प्रमास प्रम प्रमास प्रम प्रमास प्र श्चेर्येन्यकृतः श्चेत्रः स्वायकृतः श्चेत्रः स्वायकृतः स्वयक्षः स्वयक्यः स्वयक्षः स्वयक्षः स्वयक्षः स्वयक्षः स्वयक्षः स्वयक्षः स्वय रेण चेर ग्रीम अप्यान्यूम पा (क्रुर ग्रीम अप्याय्यूम पा वसम रहा) वे से में जेर ग्री पुर अप्याय्यूम य'न्र्यंस्क्रुंद्रक्र'यर'स्व यर्षान्वो'क्री'न्र्वो'न्र्य'ख्राच्यानस्व 'ख्रुट'खेव'र्वे । केंक्र'खे विस्तरा के वार्ट में कि न के वार्ट के व विक्तित्रम् विक्रान्ति । (देन्या मुबायर मुर्वे ।

य्र्न्निम्सस्यम्हिन्यः वसस्य उत्त्री । क्रिस्य प्रमाणितः स्वर्ण्यावस्य । विश्वायस्य विश्वायस्य । विश्वायस्य विश्वायस्य । विश्वायस्य विश्वायस्य । विष्य । विश्वायस्य । विश्वायस्य । विश्वायस्य । विश्वायस्य । विश्वाय

द्वरःश्च्रीत्रःवर्षःश्चरःवरःश्चरःद्वरःवरःश्चरःवरःश्चरःवरःश्चरःवरःवरःश्चरःवरःवरःश्चरःवरःवरःश्चरःवरःश

য়ড়য়য়৽ঀয়য়৽ঀয়৽ঀয়৽ঀয়ঢ়য়

दे न्याश्चर्याः वर्षः वयाः पः सेद्या । श्वयाः सः स्वर्थः दे । वयाः वरुषः स्वा

च्या चर्ड्य स्वरं स्वरं च्या चर्ड्य स्वरं स्वरं

र्हेण'नठब'न्धुंन'नठब'ल'र्बेणब'यदे ह्रय'यदे रन'न्छे।

महिर्याय स्वान्त्र स्वान्य स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्व स्वान्त्र स्वा

लट्रावश्रम् नक्रुं नक्कुं न्यम् नक्ष्या निक्ष्य निर्मा न चरुषायाः वै : श्रेषायाः विषयाः विषयः व विदः(ह्निन:न्धुंन:ग्री:बबान्बूबाय:इबावेबाधेवायः)हिदःविचःन्दः अर्द्ध्दबायरास्वायदे ध्रीरः र्रे | दिवान परि तारहोता इसामार्डेन धिन पवा (वसन पान परि क्राम्य क्राम्य परि क्राम्य परि क्राम्य परि क्राम्य परि क्राम्य परि क्राम्य परि क्राम्य क्राम क्राम्य क्राम क विस्तर्भात्रा हेंगान्त्रन्धेन्न्य विस्तर्भात्रं विस्तर्भात्रं विस्तर्भात्रं विस्तर्भात्रं विस्तर्भात्रं विस्तर्भाष्ट्रे विस्ति विस्तर्भाष्ट्रे विस्ति विस्तर्भाष्ट्रे विस्तर्भाष्ट्रे विस्तर्भाष्ट्रे विस्तर्भाष्ट्रे विस्ति वः अः थेन : न्राम् अः न्राम् अः विष्णे : व्याप्त विष्णे : विष्णे : विष्णे विष विदान्ध्रित्यान्दान्वरुषायान्दा हेवायाक्षेत्रायान्ध्रीत्यार्वसान्दा हेवायाप्यताक्षेत्रा न्ध्रिन्यायम् अन्यास्याम् स्यापाम् स्यापाम र्धेदै न्दें न प्रवि (इयर्थ) व र्थेन् प्रदे थेन् न्द्र थेन् गुणे क्रा मेन्य के प्रवि । प्रवि व रिव प्रवि । प्रवि । प्रवि व रिव प्रवि । प्रवि । प्रवि व रिव प्रवि । प्रवि । प्रवि व रिव प्रवि । प्रवि । प्रवि व रिव प्रवि । प्रवि । प्रवि । प्रवि व रिव प्रवि । र्ने पुरायमान्य निवासी क्रिया है। विश्व माने स्वासी विदान्ध्रित्यान्दान्वरुषायाध्येवाने। देन्वान्दायस्य स्वर्थत्यायस्य स्वर्थत्यः महत्र-दर्भेते न्द्रें रूपि मिन् प्रमास्त्र क्रिन् प्रते न्येत न्येत न्येत प्रते प्रमास्त्र मिन यार्सेवासायाने प्राप्ता पर्देन याप्ता प्राप्ता प बॅवे व्यवस्था बंबे व्यवहूर हो।) प्रेंब पावि स्था यें व प्येंप पावे हें पाय के हिंपाय के प्रेंब प्य <u>५र्ड</u>ेन्यन्तरायुक्तराय्येक्ति। (तर्द्रायाक्त्रेवायात्याक्त्रेवायाव्यक्तिवायायाव्यक्तिवायायायाव्यक्तिवायायायायायाय यरःवृत्रायाष्ट्रन्यरःठतात्रःहेवायाश्चरवात्रीरान्धेन्यायान्यतिष्टेन्यायान्यतिष्टेन्याम्। हेवायाश्चरवात्रीरान्धेन्या <u> ५८.अर्थ्ययात्रस्त्रःत्रं त्रात्रः क्षेत्रः ५८(क्षे.भःविष्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विष्य</u> म्री निषयामृत्रमित्रमित्रम् । विषयम् र्येतै न्दें माणवि विन्यम् ठव वर्षे न्यते न्यें न्यान्या वेशमाणवा वृत्याया धेवः यदे केंग ग्री विश्व विश्व कर के हिंग या प्यार से द द में द रा प्यार से द रा प्या से द रा प्यार से द रा प्या से द रा प्या से द रा प्या रा प्या से द रा प्या रा प्या रा प्या

देशस्य हिंवा प्रम् रेश ह्व स्था । इस्य स्य हिंवा स्था इस से हिंवा ।

नात्र अप्तर से निसंस्थान सूत्र या

ने न्या भेन् भे अपन्य या भेन्। भिन् भे प्रमा सम्भारत हैन।

ક્રેનું ત્રાન્ય સ્ત્રાન્ય માત્રાનું ત્રાન્ય ત્રાન્ય સ્ત્રાન્ય સ

रश्चिष्याचरुषायाः स्वी

याशुस्रायान्त्रीयात्रायास्त्रायाः स्वात्रायाः स्वात्रायाः स्वात्रायाः स्वात्रायाः स्वात्रायाः स्वात्रायाः स्वा

स्वाः अन्ते न्याः विद्याः विद

.....अ:बेद'न्गु। |नकुन्रेर'ने'न्ग'क्सस'न्नः आ|

न्गु में मान्द्र है मुस्य मान्द्रिया।

यद्भरः चेव प्यतः द्वेव विवाद्यः विवादः विवा

देबावागुवायबाचतुबाद्या सुदार्यास्यायबागुदार्यवार्व्यवास्यवास्या

> दर्शैर.क्रीं र.क्रूश.विश्वश्चात्रीयोश.योड्यो.क्यां वीयोश.वध्यां द्वी। इयो.चि:क्ष्यां प्राथमश्चात्रीयोश.योड्यो.क्यां वीयोश.वधः द्वी।

तर्नरः पर्दुवः यः बद्धाः मुश्ने अर्दे । यद्वे । यद्वे

য়ড়ৢয়য়৻৻ৼয়৻৴৸৻৻৻৴য়ৼয়৻

चळ्यात्तर् ख्रियाची त्याची त्याचा त्याची त्याचा त्याची त्याचा त्याची त्

प्रथम् स्तरं क्षेत्रः स्तरं क्षेत्र

নার্নাম ডব্ নত্ত বি নমদাম নর্না

लट्रावश्रवादे देवालबावार्ट्स्य त्रीत्र त्र ही दे त्र ही त्र त्र त्र ही विष्ट्र पर ही. नःविदःयः स्वामान्यः सः सुः नुः नेदः वे वा नुवामाः देः रे नः नुः विमानुः विमानुः निमानुः विमानुः निमानुः विमानु र्थें दे 'द्वा'क्वेद' धेव 'क्के 'द्वादार्थें इस्र मार्थे व 'व्याप्त मार्थें व प्राप्त मार्य मार्थें व प्राप्त मार्य मार्थें व प्राप्त मार्थें व प्राप्त मार्थें व प्राप्त मार्थें व प्राप्त मार् क्वित्रत्रवेषायराद्यीटाचार्यात्राचेराचेरायायार्ट्यत्यावरायाः क्विन विशेषासु ग्रुप्त से दिन स्थान न्वरायं जावेबाबा चुना) राते छिरार्ने । (ब्रिन्बानेबाग्रराने पञ्चेत्रायरायग्रराम्) र्दे त्यास्याया यदे हे कें पठन्य द्वराप वर्षे न्या वीषारेया चु तहें व यर हे सूर द युर वे वा चठन्यते स्रुते हे र्से तार्सेण्याययन ने तेण चु से तहें न ग्री ने न्या तच्चर च न तहें न या वै द्वर र्थे रुव ग्री शुषाद्र त्वे या प्रषा मुषा श्रुर ग्री द्वर र्थे श्रुर श्रुषा श्री । क्केन्सुःयः ब्रॅग्बायःयवे अहुग्यायरुन्यः वर्ग्यायायवरः ह्यूनः ग्रीबाधिवः ग्रीन्तरः से न्र बेबबायबादी याधेदाते। कुन्यादीबादी वियायि छिन् नियायि स्वापादी स्वा यर चेत्रयत्र अधिवाते। र्देन स्वराद्यायते छेर र्दे । अति क्वत अदायते छेराद्या क्रूबाकी विषय स्टर्बा पिरायान्य वि स् रिवा वि न्दःश्रदःवीषःतह्यःचरःग्रेन्ध्यदःचित्रेःनेःन्वाःतेनःन्। श्रेवाःयरःग्रेन्धःनः ल्या त्राम्यानिकामायर नेवा मित्रां विश्व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्ष थेव ग्री देव ग्राट भ्री रें त्र ग्री त्यम्य प्रवे रें दे द्या केट (वर्ष प्रा) थेव कें विषा ने र रें ।

चुट न मुरुअ ग्री इस स्ति र न दिशे

नवि'य'चुट'च'म्बुअ'ग्री'क्य'यदे'रच'तु'द्रचे'च'वे। क्य'यर'श्चेव'यथ'चुट'च'दर' |क्रुश'यथ'चुट'च'वट'में'थू।

लट.पित्रब्य.पर्कु.पश्चेर.जब.इत्र.तर.ड्रीच.त.जब.वैट.प.र्टट.श्चेब.त.जब.वैट. ग्रेम प्रमुद्धिर प्रते क्षेत्र प्रति क्ष्म प्रते क्षु द्वा वीय क्षम प्रति क्षम प्रते क्षेत्र स् इस्रायर श्चेत्रायते श्चायत् श्चरायत् । इस्रायर श्चेत्रायत् । श्चेत्रायत् । यूरायत् । यूरायत् । यूरायत् । यूराय ग्री के वा की अर्दे क प्यत्र मुक्षापा ह्री प्रयेत्र क प्यापा प्यत् प्रयोग हिता है कि वा की अपने की प्रयोग की प हालेयानु पायलेवार्वे विषया प्रायमानु स्वापायम् अवापायम् अवापायम् अवापायम् अवापायम् अवापायम् अवापायम् अवापायम् है। दे.जब.वैट.चयु.ब्रेन.इस.तर.ह्रैव.त.जब.वैट.च.बेब.प्रचब.चे.ज.क्रैयु.श्रट.वोब. लट.व.इंश.ड्रीच.ग्री.कै.ज.पंचंब.पी.इंश.ड्रीच.ग्री.श्रट.ग्रीब.चेर्वेब. বদ্বাশ্বমেরা वयादे 'या शुद्राचित हो राह्म स्वापर ही वारा या शुद्राचा हो तो साथ हिंदा साथ स्वाप हो दारा से स्वाप से साथ से स चलेव र्से | दि त्य मुरायदे मु वे चले हो । चर्म प्रते प्रमुखे प्रतः देय मुरायदे प्रमुखे प्रतः देय मु यायेवाबायराचुापाद्या वावेदाद्यादेतादेतादेवावेदादी । वावेवावे स्वयं यारा ह्येदा यन्दर्भःषेत्रार्त्वे त्वेत्राचेत्रार्थेद्राण्चे देवे त्वे वार्वेद्रायार्थ्यात् चत्राण्चे क्वार्याराष्ट्रेत्राया अ'भीव'र्ने। विष'(वे:च्वाःहःञ्चा)र्श्वेच'र्न्येव'एकर्न्ने। दि'र्वा'णषाःचूर'पदेः च्चेर क्ष यायमानुदानर्ते । मुमायदे मुद्दाने विकास मिन्दाने वि

नावशः दरः में । वस्रशः नस्रवः या

पत्नी क्रियःचेट कुर्याच्या कुर्याच्या त्या स्वास्त्र स्

शुं ते क्या श्चेत त्यरा श्चेरा शेता।

कुं समुद्र यस चुर दस भ्रेद भ्रेस वित्र सम्मित्र सम्मित्र मान्य समा

च्या-पार्थियावान्तान्ता द्वी-पूर्याद्वी-श्वाद्वी-प्यान्वी-प्यान्वी-प्यान्त्वी-प्यान्वी-प्यान्त्वी-प्यान्त्वी-प्यान्त्वी-प्यान्त्वी-प्यान्त्वी-प्यान्वी-प्यान्त्वी-प्यान्त्वी-प्यान्त्वी-प्यान्त्वी-प्यान्त्वी-प्यान्वी-प्यान्त्वी-प्यान्त्वी-प्यान्त्वी-प्यान्त्वी-प्यान्त्वी-प्यान्वि-प्यान्त्वी-प्यान्वि-प्यान्त्वी-प्यान्यान्यान्यान्यःव्यान्यान्यान्यःवि-प्यान्यान्यान्यःव्यान्यःवि-प्यान्यःव्यान्यःव्यान्यःव्यान

स्याप्राप्य स्याप्राप्य

ङ्शप्रस्थार्थेऽ। इशप्रदुष्याम्हेग्राण्यायः इशप्रदुष्याम्हेग्

स्वायाम्यक्षयाम् । विषयम् विष

सक्रेस्य प्रस्य प्राप्य प्रमुद्रम्

र्देन्द्राचारक्षेत्राची विस्तराद्वरक्षे सुन्द्राच्यसात्वराद्वरक्षेत्राच्यस्य विस्तर्भाव क्षेत्राची विस्तराद्वरक्षेत्र विस्तर विस्तर

·····अंग'न्द्दे। विस्थानेश'न्यश्र'न्त्र'र्शे र्शे'न्द्रा।

च्यात्र म्यात्र म्यात

ग्रवशन्दः में विस्रशन्त्रम्भवः या

चेबाञ्च्य-देश-विकादा-वर्षा विकाय-दर्श्य विकाय-प्राय्याय-प्रायाय-प्रायय-प्राययिक्त-प्राय्वेय-प्राय्वेय-प्राययिक्य-प्रययिक्य-प्राययि

श्रेणश्रेषाश्चित्रः प्रति श्चेत्रः प्राचित्रः श्चेतः स्वरः प्रति श्चेतः स्वरः प्रति श्चेतः स्वरः प्रति श्चेतः स्वरः प्रति श्चेतः स्वरः स्

क्ष्र डिवा हु । पर तर्दे व पर पें द्या

शु.पाश्चरात्राची,पित्रयात्रत्राची,म्राची,म्राची,म्राचीयाची,म्राचीयाची,पित्रयात्री,पित्रयात्रात्रीचा,सेव.कुवा,पि

सक्रेस्य प्रस्य प्राय प्रमुद्रम्

पञ्चित्रभारतः। श्रेतानेश्वर्तामा अत्यानेश्वर्तामा अत्यानेश्वर्तामा अत्यानेश्वर्तामा अत्यानेश्वर्तामा अत्यानेश्वर्तामा अत्यानेश्वर्त्तामा अत्यानेश्वर्तामा अत्यानेश्वर्त्तामा अत्यानेश्वर्तामा अत्यानेश्वर्यामा अत्यानेश्वर्तामा अत्यानेश्वर्यामा अत्यानेश्वर्यामा अत्यानेश्वर्य

ग्रवशन्दः में विस्रशन्त्रम् या

बिश्वानश्चर्याः स्त्रीत् । श्रे अश्चर्याः प्रमानश्चर्याः स्त्री । श्रे अश्चर्याः स्त्रीत् । श्रे अश्चर्याः स्त्रीत् । श्रे अश्चर्याः स्त्रीत् । श्रे अश्चर्याः स्त्रीत् । श्रे अश्चर्याः स्तर्याः स्त्रीत् । श्रि अश्चर्याः स्तर्याः स्तर्यः स्तर्याः स्तर्याः स्तर्यः स्तर

.....ळें अ'ले अ'तु'न'ते। हित'म'न्र नठअ'ध्रम' अती।

ने न्दरसङ्ग्रसम्बन्धाः

स्तिन्त्राच्यात्रक्ष्याः स्वाप्त्राच्यात्रक्ष्याः स्वाप्त्रक्ष्याः स्वाप्त्रक्ष्यः स्वाप्त्रक्षः स्वाप्त्त्रक्षः स्वाप्त्रक्षः स्व

बेशनश्रुमदेखिरःर्से ।

च्यान्ते स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य विद्वान्त्रस्य विद्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्य स्वान्त्य स्वान्त्य स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्व

र्वे.च.हेब.चक्रम.ट्र.ट्र.मञ्चरमा होती योट.खेबी.स्ट.ची.ज्यम.श्र.होटी।

वावर्गः न्दः सं विस्रायः वसूत्रः या

स्थाय के स्थाप स्

स्वाक्ष्म् न्यान्ते विकास वितास विकास वितास विकास वित

য়ড়ৢয়য়৻৻ৼয়৻৴৸৻৻৻৴ঀৼয়৻

स्वान्तः त्यावान्यः स्वान्तः विकान्तः विकान्ते विकान्ते विकान्तः विकान

वर्नरामेश्रमाणी विश्वमाण्युवाया हेवाचरुषान्दाने असुद्रमाणी वागार्थेदा यर प्रतिराप के में मिला कि का अपर्या के स्वर्थ के स न्नर-तु-नुष्ण-ध-ह्रे। वॅद-अ-न-न्वान्ते-दे-श्चे-तर्देन-धष्ण-गुव-व्यष्ण-नृष्ण-दर्ग सुद-र्येः <u>कृ.त.ज. स्वाब.त.जब.टेर्च.शे.शुवी.ज. स्वाब.त.चे. विश्वय.वी विश्वय.वी वी वा श्रव्य. ही ट्र</u> हेव नरुषान्दरे अर्द्धद्या सु प्रमृत्या विस्रवाम् विद्यान्य वि दे मिलेवास प्रमृत् र्श्चर्गी स्वाका ग्रीका क्षेत्रका ग्री विश्वका ग्री विश्वका निर्देश क्षेत्र भी विश्वका निर्देश के हेव'चठब'विं'व'धेव'था वाञ्चवाब'र्सवाब'द्वे'र्रेथ'ग्री'विस्रब'स्'वे'हेव'चठब'न्ट'ने' अर्द्ध्रद्भः वाने भः गाराय श्रुराने । चे प्यम्रायमा अवाः या स्वामाया स्वामायाय स्वामायाय स्वामायाय स्वामायाय स्वामायाय स्वामायाय अःथेवःपदेःध्रेतःगरुगागेःहेवःपःअर्द्ध्दबःपःद्दःदेःद्वाःद्दःअर्द्ध्दबःपःवादःथेवःपः दे'द्वा'वे'बेअब'ठव'ध्रथब'ठद'ग्रीतर'धेव'पब'तदे'द्वा'वे'हेव'प'अ&्दब'प'द्र दे.र्वा.र्ट.अर्क्ट्यत्य.त.वु.ह्य.तपूर्व विविध्यय.त.सूर्वाय.त.वु.स्.स्यु.क्ट्रि.त.हेय.त. अर्द्ध्रद्यायान्द्रान्ते निवान्द्रा अर्द्ध्रद्यायानेद्रान्त्रा विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया यावव अर्पय दे है र यावव र्या त्य वे हे व स अर्द्ध र व स र र र र र र या र र अर्द्ध र व स वेषा श्रे पर्हेदार्दे वेषा द्वार प्रते श्रे रार्दे ।

अर्वेट श्वट ल लेंग्या राये इस राये र र प र है।

नुवायः अर्थेटः श्वटः वार्येवायः यदेः इसः यदेः द्वेः यः वी यद्वं वे स्वर्भे सार्यः श्वटः चुः पेत्रा विश्वायः स्वरं वार्यस्यः वार्यस्यः वार्यस्यः वार्यस्यः वार्यस्यः वार्यस्यः

दे-द्याया-य-दी।

र्हेन्स्स्य उन्सेन्स्सेन्स्स्र सेन्। निवन्य सेन्द्र्नास्सेन्स्रे यासेन्।

द्रान्त्रेत्त्वेत्तात्त्रम् श्री स्तर् श्री स्तर स्तर् श्री स्तर् स्तर् श्री स्तर् स्तर् श्री स्तर

ग्रवशन्दःर्भे विस्रशन्ध्रवःग

ग्रीकातर्मियात्मः धिवात्मे । वित्रम्यात्मे । वित्रमे ।

क्ष्यान्द्राक्ष्यं अवः श्री स्वान्त्री

यनुवायाक्षायान्दराक्षायात्राध्येवायात्री । व्रिप्ताधेवाने वि

सियान्य स्वास्त्र स्वास्त्य स्वास्त्र स्वास्त

सक्रेसरायहरान्ययान्त्रम्या

इसक्ष्राक्ष्याम् न्द्रास्त्र स्थाने स्थाने विकार्ते वास्त्र में स्थाने स

यहेगाहेद्र-संदे-प्य-न्या-संदे-क्ष्य-संदे-प्य-न्य-संदे-क्ष्य-क्ष्य-क्ष्य-क्ष्य-क्ष्य-क्य

र्दे व वे से व ग्या स्थान स्य

श्रेनानीशना बुनाश हसश

·······················মর্সিন:हेत्-नठशा

> ने खानहेत्र प्रदेशह्य के श्रेष्ठी । यादा धेरानर पुर्के दारा धे।। या बुग्य से देश से दारा से दार्धे रावें।।

યુવાનું ત્યાને વેત્રાત્યે સ્ત્રાત્રે સાંગ્રે સાંગ્રે ત્યારે ત્

वावर्गः न्दः सं विस्रायः वसूत्रः या

पायाने स्रोपा (वीकावाञ्चवाकास्रार्धराक्षाने काले स्वास्त्रीया स्वास्त्रीय स्वास्त्रीया स्वास्त्रीय स्

भेगावे गहिशागान्यायोशाग्रामा । अर्वे महे ग्रायाय सम्बर्ध मही मही

सक्रमश्रद्म प्राप्त न्त्रम्य

भेगान्दाधितान्दान्त्रम् वान्ति। । धुत्यान्दान्याञ्चन

यहूच। पूच-क्रि-ट्र-लिजा-विषय-क्रु-एहूच-त्यु-ब्रेय-तृ-व्रिय-तृ-व्रिय-तृ-व्रिय-क्रु-क्री-व्रिय-क्रु-क्री-क्रिय-त्य-क्रु-क्री-क्रिय-त्य-क्रु-क्री-क्रिय-त्य-क्रु-क्री-क्रिय-त्य-क्रु-क्री-क्रिय-त्य-क्रु-क्री-क्रिय-त्य-क्रु-क्रिय-क्रु-क्रिय-क्रु-क्रिय-क्रु-क्रिय-क्रु-क्रिय-क्रु-क्रिय-क्रु-क्रिय-क्रु-क्रिय-क्रु-क्रिय-क्रु-क्रिय-क्रु-क्रिय-क्रु-क्रिय-क्रिय-क्रु-क्रिय-क्र

चर्यः द्वान्त्रवाव्यः अप्तर्वाक्ष्यः भीत्रव्यः भीत्यः भीत्रव्यः भीत्यः भीत्यः भीत्यः भीत्यः भीत्यः भीत्यः

नात्र अ: ५८: में । निस्र अ: नसूत्र : या

वोष्यात्रान्त्रवी.वोटाट्रे.वु.क्षात्वक्षाःश्वात्त्र्यां विष्यावाः क्ष्याःश्चेत्रःश्चेत्रःश्चेत्रः विष्यावायः त्यावायः त्याव्यायः त्यावायः त्यावयः त्यायः त्या

णदःश्वायः र्श्वायः र्श्वायः प्रायः प

बःसदःहेवःवन्याः भ्रात्रस्ययाः श्री । ने न्याः भ्रवः हेयाः भ्रीयः सवदः धिवा।

यद्दान्यस्त्रात्ते विद्यात्ते स्त्रात्त्रात्त्र स्त्रात्त्र स्त्रात्त्र स्त्रात्त्र स्त्र स्त्र

दर्न र त्र्योयायायया हो हो र यो स्थान स्य

ने न्या कुर राया वक्कुर हिन् द्वेरा हिन ने से या वार्य में याया थी ना

नात्र अप्तर से निसंस्थान सूत्र या

विषायाः र्वेषाषायि हेवा दे विषायाः र्वेषाषायाः धिवार्वे।

ने भ्रिम मुद्रासें दास प्रेम भ्रिम भ्रिम में प्रमानी सामे सम्मिन

प्रचा) ट्रे.कुट्-ग्री-क्रिट-प्रचानिका बिकान्यन्त्राह्म । विकान्यन्त्राह्म निकानिका क्रिट-प्रचानिका क्रियानिका क्रियानिका

त्राचित्रवित्राच्यात्र्यं विद्याच्यात्र्यं विद्याच्यात्र्यं विद्याच्यात्र्यं विद्याच्यात्र्यं विद्याच्यात्र्यं विद्याच्यात्रं विद्याच्यात्यं विद्याच्यात्रं विद्याच्यात्यं विद्याच्यात्रं विद्याच्यात्यात्यं विद्याच्या

सुरायार्देना सदे सेना साधेता | सेना ने ने दि सदे न इन रासेता

(दे.ज.पट्ट्रेट.तरःश्रेशेब.त.रट.वी.ब.तपुर्य.श्रवी.वीब.वीब.वा.वीब.वा.वीब.वा.व.क्षेत्र.तपुर्व.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवाब.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.क्षेत्र.वच्चेवावविष.ज.कष्टेवावविष.च्यावविष.च.विष.च्याविष.च्यावविष.च.विष.च्याविष.च्य

য়ড়য়য়৽ঀৼয়৽ৢঀঀঀ৽ঀৢঢ়ৼয়

इसायर वेशायवर

नावशादरार्थे।वसशानसूत्राम

क्र-मिश्चम्याः स्वाप्तः स्वापतः स्वाप्तः स्वापतः स्वाप्तः स्वापतः स्

र्ते व इस्राधेश ग्रीश शर्मेट स्राधे गाञ्च पाश सर्वेट त्या श्रुषा गाट त्या सहेत हो प्राधेश स्राधेश स्य

सुर्याचीयर विदेशना वस्र राउट् द्या

सक्रेस्य वह्र सन्दर्भ न्त्र म्य

क्र-२. खुब्र. चे. चर्यात्र स्थाने क्रा. प्रा. चर्यात्र स्थाने क्रा. प्रा. च्यात्र स्थाने क्रा. प्रा. च्यात्र स्थाने क्रा. प्रा. प्रा. च्यात्र स्थाने क्रा. प्रा. प्रा.

इ'नवर'ने 'नवेत

ह्म विषयक्क क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त विषयक्ष विषयक्ष क्षेत्र प्राप्त विषयक्ष विषयक्

"""म्अस्य द्या द्या विस्रस्य उद्दर्श स्य संक्षेत्रा

क्ष्यान्तः श्रेष्ट्राच्याः श्रेष्ट्राच्याः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्व श्रेष्ट्राच्याः स्वर्षः स्वरं स्वरं

ने भूर ही र नहर दशर्मश्री मान श्री मान श्री र नश्री

नात्र अप्तर से निसंस्थान सूत्र या

सुर्या ग्री म्हार विश्व दिया प्रताने । प्रतानी या प्रीप्ता से या है।

वीश्वासा-प्रस्तिक्यां प्राप्त विकास विकास क्षेत्र स्वास्त्र स्वास

विवेश ग्री अभी अपराय ग्री प्राया अविवास विवेश प्राया विवेश प्राय विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राय विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राय विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राय विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राय विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राय विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राया विवेश प्राय विवेश प्राया विवेश प्राय विवेश प्राय विवेश प्राया विवेश प्राया

पक्कित्रप्राचीत्रेत्राचीत्राचेत्रप्रम्य चित्रप्राचीत्रप्राचीत्रप्राचीत्रप्राचीत्रप्राचीत्रप्राचीत्रप्राचीत्रप्र

सक्रेस्य प्रस्य प्राय प्रमुद्रम

वर्षाया ग्रुषा के वा ह्वा पर्वे।

लट.शर्ट्र.जमा ट्यट.त्र्.इश्व.वी लड्डिट.वे.विश्व.विश्व.वे.टी श्र.लंब.त्र्य.वे.टी श्र.लंब.वे.टी श्र.लंब.वे.टी विश्व.विश्व

यात्र अप्तर स्थितिस अप्त सूत्र या

चतः त्रीयः विश्वः व चतः विश्वः विश

च्यायह्य त्रातु यह त्रातु त्यह त्रात् व्याप्य प्राप्य प्राप्य

वाव्यावावेयायान्यराधानम्बर्धा

न्नर संदे अर्क्षव केन नम्न

न्यर र्येते अळव लेन् वे पार विषा ग्राट त्या हुव र्येट अधीव यर न्यर होन्य

ग्रवश्याहेशन्यरः में यसूद्राया

धेव वें। |ग्राम् विगागम् स्थान्यम् छेन् छे वा

३ वृःर्रे इसमाने देव निवा । निवर हो निवा समानि समानि सामानि

श्रेवा ता स्वाचा प्रति द्वार प्रति स्वाचा स्वचा स्वाचा स्य लूट्य-ब्री-पर्योट्ट-प्राची-व्री-इत्राचेश्व-अर्थ्य-व्राच्य-प्रिच्य-प्राची-व्राची-इत्राचेश्व-अर्थ्य-व्राची-व यन्ता वानुवाबानक्षां भ्रास्त्रवार्वे विषानुः नायार्वेवाबायाः साम्रान्ध्रवाद्यायाः वानुवाबानक्षां भ्राप्ता याबेबानुःचितः देवानवे त्ववे त्याद्वान्यः ने वि त्यात्युषाः वि त्यात्युषाः वि त्यात्युषाः वि त्यात्यात्यः वि व च्चेत्रपादी श्रेणात्र इत्राच्या खुत्य खेत्र त्रा श्रे दिरायात्वा अर्थेर पात्र दिया द्रा व्याप्य प्राप्त लब.जैब.बैट.चपु.ब्रैट.टट.। बै.कै.जैब.वविश.ब्रीब.विश.चवात्रा.चवाता.जूटवाडीट.तवाजेब. मुषायर चेत्रपति चेरा र्वे कॅर्न्स् कॅप्यून्स्येष प्रत्येत् के प्रत्येत् के प्रत्ये के के के के कि र्ट्स्स्राध्येष्ठान्त्रते स्रेस्रम् रुष्ट्राध्याचे च्याप्ताचे प्राप्ताचे प्रा र्चमान्ने क्रि. तम्मान्य न्यान्य न्याप्य न्याप्य न्याप्य न्याप्य न्याप्य न्याप्य न्याप्य न्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप र्धेषावे स्थाप्ता वितास्य त्याप्ता नित्र हो । विविद्या वित्र चुर अदर द्वर चुर दें। दे द्वा वे वें अप्रोव दर अर्ध अष्य अद दर । द्वो संविर्द यन्ता क्रिंअयन्ता वज्ञन्तुवर्षेन्यन्ता वर्नेन्कणन्नन्त्रवानित्रन्ता मी च स दिर स ने द र द र स स ने पानि का पानि का

स्वानी नियम् स्वानित्त स्वानित्त स्वानित्त स्वानित्त स्वानित्त स्वानित्त स्वानित्त स्वानित्त स्वानित्त स्वानित स्वानित्त स्वा

सक्रेस्र प्रद्रान्य प्रमुद्र

चित्रपः हो | बिर्याणुकः प्रेंद्रवाणुकः प्रवाणि | बिर्याणुक्रवाण्याणुकः वित्रपः होते | विर्याणुकः वित्रपः वित्रप

स्तिन्त्रच्ना ।

स्तिन्त्रच्ना ।

स्तिन्त्रच्ना ।

स्तिन्त्रच्ना ।

स्तिन्त्रच्ना ।

स्तिन्त्रचन्त्रच्ना ।

स्तिन्त्रचन्त्यवन्त्रचन

<u> ७.८८. वर्षे ८.५. म्ला १ विषय ११ विषय</u>

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूदःश

यर्ने के प्राप्त शिवाया है।

ररानी दें त्राप्ता व्यापा । प्रियाया प्राप्ता वितासी स्वाप्ता वितासी स्वाप्ता ।

श्रवान्यः श्रवान्यः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः

र्वेतिकायहरून्याक्ष्मेत्र्वाकायान्त्रः स्वाधायान्तः स्वाधायानः स्वाधायान्तः स्वाधायानः स्वाधायान्तः स्वाधायान्तः स्वाधायान्तः स्वाधायान्तः स्वाधायानः स्वाधाया

मालेशाम्याने सेंदि केंशाहेन त्यान्यता मेन्यते से सान्यता से साम्यान सान्यता सान्यता साम्यान सान्यता सान्यता सान्यता सान्यता साम्यान सान्यता सा खुअःग्री:न्वरःसेंदेःळ:५अ:वश्येशसेंदे:न्वरःसें:न्दरःसेंदे:न्वरःसें:न्वा:हुःवाववा:वो:ह्रशःवेंवाशः र्श्रेग्।यी न्वर्से वे देशस्त्रम् म्वर्षायायात्वरा हो न्यान्ता के राववे न्वरः र्ग.र्ज.यु.४४१४४२१ चिरायात्रयर मेर्टायह मेर्टा क्रिंग मेर्टी अर्थे अर्थे अर्थे अर्थे अर्थे क्रिंग्य के प्रत्य मःभाग । नदे नदे क्रें स्नाया पर्दे दाळग्या क्रुया मराद्यु सर्दे । व्या नय्या क्री क्रें स्नाया बे.र्बरम्भासरादश्चरार्स् । यरे यापरासाधितर्म्या तर्वा प्रस्ताधितरास्त्रे स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स् श्रवाक्तिश्वर्यर्वेर्यम् । वेश्वर्यरे त्वःश्वर्यश्वर्याश्वर्यर्द्वर्ष्टवाश्वर्यस्य विश्वर्यरः गशुरशःमदेः भ्रेरः दृरः वहेवा हेदः मदेः यस क्री क्रिंवा शः मदः मदिः पदः पदः पदः विश्व श्रेरः ब्रूटश्रान.स्थ्राश्चाट.स्थानर्गयेष्ट्र. १८८१ श्रम् । ब्रूच्यान्यः । विवार्त्र स्वार्त्र स्वार्त्त स्वर्त्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त इव्रायदे क्रें नशुर्या सुव्रासुक् सुमार्के म्याया येस्या सहस्रायम प्रविष्या प्राप्त के स्वर्या स्वर्या स्वर्या ग्रीशाह्मशास्त्रः मुँवान्तरः वश्चूरः देशावशुद्रः तथादेशावशुद्रः का स्त्रुद्रः वा स्वायाः विश्वायाः षदःवर्देवःववेःध्वेरःश्रॅःशॅरःद्वदःशॅरःवर्देदःद्वे।

गुद्दान्य स्वाया में द्वार में विक्र में प्राया में स्वाया में स्व

गुत्रः भेशः श्वान्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विष्य

ग्रवश्याहिशः द्यदः में वसूदः या

न्नर संदे ज्यार बारे बार्य मन्

महिश्रास्तर्विः म्यान्याः स्थान्याः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्था

सेससः भ्री हेत दरदे दे भ्री भावस दर्ग मुन्द स हें द से दस है द्या

र्टेनिशन्दरम्भानुदर्भे द्वा |द्वदर्भे द्वा गुदर्भे द्वा

दे.वा.श्रेश्रश्च क्ष्में हैं स्थानि स्थानि

यदः निवासि हेर निवासि हो। क्षे निवासि स्वासि स्व

यदान्त्रभ्रे संज्ञान्त्र द्वा के त्वा स्वर्णा स्वर्णा के त्व स्वर्णा स्वर्णा

ग्रवश्याहेशः द्वरः में वसूदः या

यर प्रह्मा निर्मा निर्

च्रुक्षःस्रवरः स्वर्ते ।

व्रिक्षः स्वरं स्वरं

न्नर रॅंदे रें रें नम्र या

ने त्या खु अने त्य ने प्रचार में ज्वा व्यवस्था के प्रचार के स्वा अप प्रचार के स्व अप के प्रचार के स्व अप

ग्रवश्याहिशः द्यदः में वसूदः या

यार वे त्रा यश्यामात्रव मश्यामात्रव मश्यामात्रव स्त्रीत स्त्री स्वाप्त स्त्रीत स्त्री

त्रंत्रभेश्वभाग्नी-दिन्दां त्रे क्ष्य-श्रीभाग्य-व्यक्ष-व्यक्ष-व्यक्य-व्यक्ष-व्यक्य-व्यक्ष-व्यक्ष-व्यक्य-व्यक्ष-व्यक्ष-व्यक्ष-व्यक्ष-

र्ड में खुर्या ग्रीयमा से समा ग्री पिता विष्या मार्थ समा मिता है स्वा विषय मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ समा स्वा मार्थ मार्थ

.....विश्याविः से हिंगा ही ना

सक्रेस्र १८६ स. ८५१ स. ८५१

यद्यमार्थे । यद्यमार्थे प्रत्याचे प

सर्वेदःनर्भे संसे र्भे न त्यस य द्वा । वासुस पीव

यविश्वःक्षरः प्रचीदः प्राचीदः वाचितः प्रचीदः प्राचीदः प्रचीदः प्राचीदः प्रचीदः प्राचीदः प्रा

इअयि र्ने राम्य

चित्र महास्त्र प्रति प्रति । च्या प्रति प्रति । च्या प्र

निवशनिवश्यादेश निवश्य

चनाः न्दः चरुश्यः न्द्रीः इस्यानिक्षा ।

यद्भःभः श्रवान्यः त्यन् न्याः से न्याः व्याः से न्याः व्याः व्यः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः

त्राच्येश्वर् स्थान्य स्थान्य

र्दे'द'सर्दे'त्यमा वारात्य'न्वर'र्दे'त्यू'र्से'त्दे 'न्वा'न्नसमारुद्'नु'न्नसमारुद्'सेन्'र्स'ने

सक्रेस्र १८६ स. ५५० १५५०

वृज्ञचीत्रज्ञान्ताल्यां स्वाक्ष्यां स्वाक्ष्यां स्वाक्ष्यां स्वाक्ष्यं स्वावक्षं स्व

र्श्रेवा वे क्य श्चेव

स्तर्विर्धेरक्षेत्रात्तर्भेत्रवर्षावेर्वे विष्ट्रात्तर्भेत्रवर्ष्मेत्रयः भ्रेत्रवर्षात्र्वे विष्ट्रात्त्र्यं विष्ट्रात्त्रं विष्ट्रात्त्र्यं विष्ट्रात्त्रं विष्ट्रात्त्यं विष्ट्रत्त्रं विष्ट्

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूद्राया

बे.वी इप्र.चीयात्र-प्र.चीयात्र-प्र.चीय-स्.चीय-स्.चीय-प्र.चीय-प्र.चीय-प्र.चीय-स्थान्त्र-प्र.चीय-स्.ची-प्र.चीय-स्.चीय-स

यद्धान्तर्मात्रम्भः के नियम् बिक्तः स्त्रीत् स्त्रे स्वरः स्त्रीत् स्वरः स्त्रीत् स्वरः स

दे निवेद नु के निर्देश वार्त (श्वर वार्य निवास मान्य मान्य सम्बद्ध मान्य स्वर्थ मान्य सम्बद्ध सम्बद्ध मान्य सम्बद्ध मान्य सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद

ग्रवश्याहेश:५व८:में वसूद:मा

र्यः इस्रमायः केः श्र्वाः हे भः त्यः नदेः श्रेः श्रें भः श्रें विश्वः नद्यः त्यः त्यः त्यः विश्वः विश्वः विश्व नश्रुवः नदेः श्रें नः न्वाः हे भः सरः स्वें श्रें श्रें श्रें भः श्रें विश्वः ने सः स्वें न्यः विश्वः स्वावः स

यायाने निर्म्ह्या स्वाप्त स्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

ची:य्याःश्चान्त्रः त्रितः त्रितः त्रिक्षः क्षेत्रः त्रिक्षः त्रि

सःमिर्हिन्यारिशःमिर्हिश्। विस्थानक्कित्तः स्थितः स्थेतः स्थेतः स्थेतः स्थेतः स्थेतः स्थेतः स्थेतः स्थेतः स्थेत सःमिर्हिन्यसः स्थेतः स्थेत

न्वरः सॅं न्व इं न्विश्वरं क्षेत्रः कषेत्रः क्षेत्रः कषेत्रः क्षेत्रः कषेत्रः कषेत्रः

धरान्तरार्थान् । न्याध्यस्य प्रमान्त्र । व्याध्यस्य प्रमान्त्र । व्याध्यस्य प्रमान्त्र । व्याध्यस्य प्रमान्त्र । व्याध्यस्य । व्याध्यस

नात्र भागित्र भारतर में निश्च ना

णटः न्यटः र्यः ने : न्याः श्वाः चित्रः श्वाः चत्रः श्वाः चत्रः श्वाः चित्रः श्वाः चित्रः श्वाः चत्रः श्वाः श्वाः श्वाः श्वाः श्वाः श्वाः श्वः श्वः श्वः श्वः श्वः श्वः

द्रे-भेट्-अ-वर्ष्ट्रवाश-वर्ष्ट्र्न-सर-वर्ष्ट्रवाश । सि-भेदि-द्या-दर-सुवा-वस्य-द्या । अ-वर्ष्ट्रवाश-वर्ष्ट्रवाश-वर्ष्ट्रवाश-स्याक्ष्य-द्या ।

"""म्बन्ध उदार्य । यदे यद्य अमिष्य मुब्ब या अदा मिष्य ।

वर्षे : स्वार्यः निवायः या त्राव्यः विवायः स्वार्यः विवायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः स्वायः स्वयः स

धिन्-न्नः र्क्टेन्-नः नाशुस्रः ह्मसः नाशुस्र। । नाहित्रः ग्रीत्रः श्वनः श्वनः स्वनः । । नाहित्रः ग्रीतः स्वनः । । स्वनः नाशुस्रः स्वनः । । स्वनः नाशुस्रः स्वनः । । स्वनः स्वनः स्वनः स्वनः स्वनः स्वनः । । स्वनः स्वनः स्वनः स्वनः स्वनः स्वनः स्वनः स्वनः । । स्वनः स

लटान्वटार्से ने न्वालका लेन निर्मात के कार्या के कार्या निर्मात के कार्या के कार्य के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्य के कार के कार्य के कार्य

ग्रम्भःगहेशःन्यरः वे स्रुवः य

न्नर संदे तर्वेन य न्र मिर्ने र न न्यून य

ख्रायान्वरार्धेदे त्येष्ट्रेवायान्दराविहें रावायान्यायान्दर्धे त्येष्ट्रेवायाचे त्यायेष्ट्रेवायाचे त्यायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्येष्ट्रेवायेष्ट्येष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्येष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्येष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवायेष्ट्रेवेष्ट्रेवायेष्ट्येष्ट्येष्ट्रेवेष्ट्येष्ट्रेवेष्ट्रेवेष्ट्येष्ट्येष्ट्रेवेष

वर्रेन्यर्न्य्यं व्यास्त्राञ्चेत्रा । क्षेत्रं ने हु श्रः हे श्चे व्यास्त्रेत्रा। ने प्यास्त्राच्यात्रास्त्र व्यास्त्रेत्र व्यास्त्रेत्रा । व्यास्त्र व्यास्त्रेत्रा । व्यास्त्र व्यास्त्रेत्र व

ત્રું વાર્યા તે ત્રામ્ય ત્રું ત્રું ત્રામ્ય ત્રામાં ત્રું ત્રામાં ત્રામાં ત્રું ત્રામાં ત્રું ત્રામાં ત્રું ત્રામાં ત્રું ત્રામાં ત્રામાં ત્રું ત્રામાં ત્રું ત્રામાં ત્રામાં ત્રું ત્રામાં ત્રામામા ત્રામા ત્રા

सक्रेसरायहरान्ययान् गुरश्

బిర్చార్డ్ ఇంక్షులు ప్రత్యేక్షులు ప్ర ध्रेर:र्रे। |घश्रवारुप्रदेशक्षाक्षेत्र। ह्याप्ते:क्री:पवार्वे:पविवार्वे:विक्तेप्राध्येव:क्री:विक् वे व ह्याने क्रि. तम्भायान न्याये के विकास क्रिया में क्रिय में क्रिया में क् ब्याबार्श्वा द्राप्ता विवासी व इवाक्किन्दी श्रेवास्वाबास्य स्टान्ट स्वावाची निष्य दिन्ता विष्यवाबास स्टान्ट स नुः)र्सः र्वेदेः न्वरः र्से ग्वरः नुरः विवान्दरः स्वायः धेवः वः ने निस्व पदेः चनुवः केनः न्वा नभ्रायान्द्राचेता है स्वाया स्वाप्ता विकार के नामिता स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स्वाप क्षे. इस्रमा भी प्रिक्त वा के मार के प्राप्त के मार के प्राप्त के विरासक्तस्य क्षेत्राचा वा वे स्थिता क्षेत्र वा स्थानित क्षेत्र वा स्था यते विश्वरासु ने र्सेन निर्माण केना सु निर्माण स्था हुन सु निर्माण स्था हुन रि.एक्र्य.जा इश्राष्ट्रीय.जीट.श.पर्वेय.क्री.क्र्य.त.कं.क्रीय.श.एक्रीट.य.रीय.श्रायवेश.री.एक्रीट.यपुर.यपुर.या.यथ्या.

यायाः प्रस्ति स्थान्ति । व्यायाः प्रस्ति । व्यायाः । व्यायाः प्रस्ति । व्यायाः प्रस्ति । व्यायाः । व्यायः । व्याय

गात्रा गाहिरा प्राप्त स्वा

न्नो त्या बस्य या उत् न्ना हिन्थू।

क्रियट्याणेव्यत्प्रस्ति होत्त्रः हो ।

क्रियट्याणेव्यत्प्रस्ति होत्त्रः हो ।

क्रियट्याणेव्यत्प्रस्ति होत्त्रः हो ।

क्रियट्याणेव्यत्प्रस्ति होत्ति ।

क्रियट्याणेव्यत्प्रस्ति होत्ति ।

क्रियट्याणेव्यत्प्रस्ति होत्ति ।

क्रियाप्याणेव्यत्प्रस्ति होत्ति ।

क्रियट्याणेव्यत्प्रस्ति होत्ति ।

क्रियत्याणेव्यत्प्रस्ति होत्याणेव्यत्प्रस्ति ।

क्रियत्याणेव्यत्प्रस्ति होत्ति ।

क्रियत्याणेव्यत्प्रस्ति होत्याणेव्यत्प्रस्ति ।

क्रियत्याणेव्यत्प्रस्ति होत्याणेव्यत्प्रस्ति ।

क्रियत्याणेव्यत्प्रस्ति होत्याणेव्यत्प्रस्ति ।

क्रियत्याणेव्यत्प्रस्ति होत्यत्प्रस्ति ।

क्रियत्याणेव्यत्यस्ति ।

क्रियत्याणेव्यत्यस्ति ।

क्रियत्याणेव्यत्यस्ति ।

क्रियत्याणेव्यत्यस्ति ।

क्रियत्यस्ति ।

क्रियत्यस्

तज्ञषानु देग द्वर में दुषा तर्वे व

ग्रेशके मन्त्र प्रमा

त्त्रभातुः नर्याय्यवाके ना श्चेरार्वेरः द्वाराधेरः श्चेरः विष्ठभावे स्वराधेरः विषठम् स्वराधेरः विषठम् स्वराधेरः विषठम् स्वराधेरः विषठम् स्वराधेरः विषठम् स्वराधेरः विष्ठभावे स्वराधेरः विषठम् स्वराधेरः स्वराधेरः

ग्रव्याम्बेशः द्यदः में वसूत्रः य

वृद्ध्यात्तर्वि ।

वृद्ध्यात्तर्व ।

वृद्ध्यात्तर्वे ।

वृद्ध्यात्तर्व ।

वृद्ध्यात्तर्वे ।

वृद्ध्यात्तर्वे ।

वृद्ध्यात्तर्वे ।

वृद्ध्यात्तर्वे ।

विव्यत्व ।

वृद्ध्यात्तर्वे ।

विव्यत्व ।

वृद्ध्यत्व ।

विव्यत्व ।

न्तु अयर्षे नः यदे त्यवर क्षे अयर ने ज्ञाय हे न्नर से के विषय हे न्य यदे विषय है न्य यदे न्य

त्रह्म-मिह्न्त्र्या)

द्रम्म-मिह्न्य्या

वर्ष्य-मिह्न्य्या

वर्ष्य-मिह्न्य्या

वर्ष्य-मिह्न्य्या

वर्ष्य-मिह्न्य्या

वर्ष्य-मिह्न्य्या

वर्ष्य-मिह्न्य्या

वर्ष्य-मिह्न्य्या

वर्ष्य-मिह्न्या

वर्ष्य-मिह्न्यः

वर्ष्य-पिह्न्यः

वर्ष-पिह्न्यः

वर्य-पिह्न्यः

वर्ष-पिह्न्यः

वर्ष-पिह्न्यः

वर्य-पिह्न्यः

वर्य-पिह्न्यः

वर्य-पिह्न्यः

वर्य-पिह्न्यः

वर्य-पिह्न्यः

वर्य-पिह्न्य

न्याने न्याने अपन्याने अपन्याने अपन्याने अपन्याने व्याने व्याने व्याने व्याने अपन्याने अपन्यान

नडुःगडेग'न्ग'गेश'न्ज्ञ'नर्डेस'हेन्। विनाद'विना'श्चेन्'स्टेन'ने वन्'स'धेन्।

गात्रा गाहिरा प्रचार में निस्ति मा

द्रा दिःवनः क्षेत्रक्षक्षकः व्यक्तः विद्यक्षकः विद्यक्षः विद्यकः विद्यक्षः विद्यकः विद्यक्षः विद्यकः विद्यक्षः विद्यकः विद्यक्षः विद्यकः विद्यक्षः विद्यकः विद्यक्षः विद्यकः विद्यक्षः विद्यकः विद्यक्षः विद्यक्षः विद्यक्षः विद्यक्षः विद्यक्षः विद्यक्षः विद्यक्षः विद्यक्षः विद्यकः विद्यक्षः विद्यकः विद्यक्षः विद्यकः विद्यक्षः विद्यक्षः

याया हे 'हे 'क्षूर्य संदे र से 'वेंद्र 'द्रवा 'हुस्य पार केंद्र 'कुद्र 'सर हो द द्रदर 'य हु या हे या ग्रीसावर्षेत्रामाश्चेत्रामरावश्चराहे। द्धांतात्रामद्धांत्रसावि द्वीत्रास्ति वासाधित है। द्वीत्रासी वित्रासी वित न्नर से क्रिंच से त्या के स्थान से स्थित क्रिंच क्रिंच के स्थान का क्रिंच क्र क्रिंच क्रिंच क्रिंच क्रिंच क्रिंच क्रिंच क्रिंच क्रिंच क्रिंच वाशुस्रायदे नदे न से दाया दे व्यादे क्षाया पाया थी दाहे। वाशुस्रायदे नदे न दर खूत पदे खेवा दसदा वसवाया पार्खे न पार्खे ब्रेन्से दिन्दिन भेत्र मान्निन माने क्रिन्द्र) यदी स्ट्रिन्से के स्ट्रिन माने क्रिन्से के स्ट्रिन माने क्रिन्से माने स्ट्रिन माने क्रिन्से माने स्ट्रिन माने क्रिन्से माने स्ट्रिन माने स्ट षर निरम्भू समा ही सारा धीव निर ही स्री वि । भी स्पर हे स नर्शे नि स ही सारा ही सारा ही सारा ही सारा ही सारा ही स इसर्जेल न्त्रा प्रतेरहें (दरवि दूर्य विदेष) भेदान देश सर्व दु ने दुर्ग प्रति देश है अर श्चेन् ग्राम्पन्न स्वामा स्वाम न्गु किंत्र अप्यर्थेन ग्री ने प्रशासन प्रशास कें निर्मा से किंत्र के किंदि कि स्थाप के किंदि कि स्थाप किंद कि स्थाप किंदि कि स्थाप कि स्थाप किंदि कि स्थाप किंद कि स्थाप किंदि कि स्थाप कि स्थाप किंदि कि स्थाप किंदि कि स्थाप किंदि कि स्थाप किंदि कि स्थाप कि स्थाप कि स्थाप कि स्थाप कि स्थाप कि स्थाप किंदि कि स्थाप <u>नर्रेशःमविदेः भेन्यने पदेः नवरः सॅरःङ्घें से वृश्यः स्था भेन्यने देः दब्धः वुः सॅरःह्वनः संयने ने विदा श्रेन</u> ने नवरः हुवः रेया ग्रीयापानुस्रयापाने या भ्रीया सी र्यूयाया सोन्।या प्रहेत त्या न्वरा में क्रिंत प्रें मार्थिया है। भ्रीया सी प्रमाणिया सी <u> ब्रेन्ययात्र्यार्मेयान्त्रायिः कें प्येन्यने स्यायाः श्रेन्ययान्त्र्यार्भेनामें विधायक्राप्ती।</u>

सक्रेस्य प्रस्य प्रमय प्रमुद्रम्य

त्ह्र्याह्रेयः सन्दः हुका वन्य स्वरं) ज्ञासाविका क्रीका (व्यवस्तु ने) वर्ष्ट्र स्वतं हुन् स्त्रे स्वरं स्वर

न्नरःस्तुःक्ष्यःक्षःनम्न

इ्नामान्तरारेदिः युद्धाः त्रुवा त्रुव

नहरः भ्रूष्ट्रभ्यः नदः वे : श्र्र्याः नदः वे। । धोनः नदः स्वः यः देशः माश्रुयः स्व।।

यहरः र्श्वेष्ठायान् राधेन् प्रत्या हिन्दा स्थाने राधेन्त स्थाने राधे स्थाने स्

गात्रा गाहिरा प्रचार में निस्ति मा

व्युर्वे व ने न्यां में अर्देव युर्वे यहार में न्यां प्रेंत्र में न्यां में विश्वे प्राप्त विश्व नः धेदः दें। । नृहः सं माशुक्षः सं हे । नृना स्वर्भागविदः देशः सम् स्वर्भः सः स्थितः हे। से मान्हः सः न-न-भू-न-भूके-नन-भूके-नन-भूकि-) इस्रायम् १९स्र सामा १८८ (देस क्षेत्रावक्ष नद्र) से खूद विद्या में सिंदी द्रवद में द्रदे पर्दे प्राय सा र्चेन'म'न्द्रम्मम्मम्भम्भम्मान्द्रम्भः विस्रम्भंद्रम्मा विस्रम्भंद्रम्भः व्हें निक्वा शन्दा श्रवा श्री श्रवा है। अहें विश्वा व्हें निक्वा शन्दा श्रवा श्रवा श्रवा श्रवा श्रवा श्रवा श्रव हुदेः क्रें र न महिश्य न १८ दे। खुश्य ग्री सूना न सूत्य ५८ से स्था ग्री धी ५ से न ने न न दर्श से र श्चिरायरावश्चरार्रे विभाग्नायाद्वा वर्दे दाळवाभाद्वान्यायायावे नुवाहु विभाग्ने। सुभा ग्री:सृगानस्यावित्राक्षेत्रस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य यशग्राद्राधीन् से नि नि नि नि नि स्वार्थित् नि स्वार्थित् नि से स्वर्धित से स र्रे । या बुर्याश्वासेन् संस्थासेया सेवाश यो प्राप्त प्राप्त विद्यास एक प्राप्त स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स र्शे र्श्वेदे क्षे व्हार्या क्षेत्र क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था हो हो विष्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र हो हो विष्य क्षेत्रायम् प्रमान्यात्रायम् स्त्रायम् स्त्रायम् स्त्रायम् स्त्रायम् स्त्रायम् स्त्रायम् स्त्रायम् स्त्रायम् स बिटा गुरुषेश्वराद्यासर्द्यास्य द्वारा स्थान्य स्थान्य मुक्ता गुरु नेश्राञ्चरायान्दर्श्चितायान्त्राध्ये व्यवस्थित्याचे स्वीत्राच्या निवीत्त्राक्ष्यात्यान्दर्शेवाश्राञ्चा भ्रे भ्रम्भः स्त्रे स्त्रे स्त्रा विश्वस्य विश्वस्य (१८४०) यह स्त्र स्त्रे स्त यक्ष्म)भेन्यने प्रत्यने प्रवर्धे भूदायि क्षेत्र प्रति क्षेत्र प्रति प्रवेद प्रति प्र यन्ता गुत्रभेशयम् होन्यायाष्ट्रीयामहेश्यसे स्वादित्यात्रभेशयायास् ही महिश्यसे स्वतः वा गुनन्ने अः खन्यायात्रास्यायात्रे अयोः खन्याये द्वीराने। ने न्यादे वें वासाम्यस्य अत्यन्ते अः धरःश्रेष्

नरे खुरुष्युद्रायानि द्वाद्रा

श्रेवाश्रव्यायात्र्यात्राह्मत्रा । धेन्यने ख्राध्या

श्री पश्चिम्प्रस्त क्षेत्र क

वायाने न्यम्भयानिक वातिकारात्व (क्षेत्रायात्व) धीन प्यते प्यत्ता प्यति प्यति प्यति प्रमास्य । श्री स्वर्थकार्य (सावर्थकार्य स्वर्थकार्य) श्री स्वर्थकार्य । श्री स्वर्य स्वर्थकार्य । श्री स्वर्य स्वर्य । श्री स्वर्य स्वर्य स्वर्य । श्री स्वर्य स्वर्य । श्री स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य । श्री स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य । श्री स्वर्य स्वर

ग्रवश्याहेश:५वट:में वसूद:मा

 प्राण्डिं क्रिंद्र क्र क्रिंद्र क

नक्चर-र्टर-गीय-जेश-र्ज्य त्रिया । यर्थ-र्ट्स-स्थ-त्र-व्य-स्थ्याश्च्या।

र्श्वा नर्श्वा की न्वर से ख़्त्र सं (दे व्हें न्यन क्षेत्र) व्याते रे सामर ख़्सान र र्ख्या धीन् सी नने न ने (वर्ने न निम्म मान मो का पान न निम्म मान मान निम्म मान निम क्षे भूत मंदे हु मन्ना कें मन्तावत न्या है (वर्ष मन्या कवा वा वर्ष मन्या वर्य न'न्द्रक्रिंत'र्सेद्रश'रुद्र'सी वित्र'य'रे'नेवाबायर यूद्र'यदे स्वेर्ट्य वित्रेत्रे वित्रेर्ट्य वित्रेर्थ वे देशस्य न मुन्दर्भवाने। सूना नस्य या श्रेना श्रमा सून र्स्स्य साम्य निवाद स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप |र्शेग्रथायदेःश्रुथाय्व्याद्यादेः देवे देवे प्रवास में प्रवास क्षेत्र क्षेत्र वे प्रवास क्षेत्र है । इस्तर क्षेत्र क्ष है। दे'ल'र्सेंदै'न्वर'र्से'न्रर'षेन्'से'वदे'व'दे'सूर-र्स्स्रेंश'य'द्रस्थान्रर'र्र्रात्र'वहुन'र्ने।। (न्नो इत्याकन्यावे नियम्भानाश्च्याया वसमारुन्याकृत्यावे) न्न्स्याम् न्नि निर्मा स्थानि । न्न्स्याम् निर्मा स्थानि । न्न्स्याम् निर्मा स्थानि । न्न्स्याम् निर्मा स्थानि । न्न्स्याम् । धीन नित्र ने निवास्त्र स्वर्भ नित्र स्वर्भ नित्र वित्र स्वर्भ स्वर्य स्वर्भ स्वर्भ स्वय्य स्वय्य स्वर्भ स्वय्य स्वर्भ स्वय्य स्वय्य स्वय्य स्वय्य स्वय्य स्व न्वेशासवि न्वरार्थे न्दराष्ट्रवासा (वे क्षेत्रायायाया) त्यावे स्दाक्षेत्रान्दराये नान्दराये नान्दराये यरः ध्वार्की । ने निवेदान् गुद्राके विश्वास्थित प्रति निविद्या । ने निवेदाने गुद्राप्त । नर-धूर-क्री-नर्र-र्रि-न्द-नर्राज्याकेमान्द-देश-धर-धूर्वार्वे ।(वि-न्यान्वन्य-सेन् यवर र्षेद्र यस सुरु द्रारेश यर सुरु यदे साह्य राष्ट्री।

नाया हे गाुन के शायते द्वार में दिर खून संदे त्यमाश्राम ख्री र से दिर दिर द्वार ने हैंसा व्यः बुवार्यः यन्ते । विस्रयः वासुस्रः करः नुः वर्षे नः यः श्रेन् । यथः नयसः वान्त्रः वासुसः यस्य कनः वसम्बाधारमञ्जूनायाम् विधारमेवे प्रवादा प्रवादा में प्रवादा प्र न्नरासें न्राष्ट्रवाही रदाश्वावादेश वर्षशामान्यामें माश्रायादेश । शादस्था क्रम्यानान्त्राचीयान्त्रित्। वियायात्र्य्यानयाद्यायाद्यायाद्यायाद्यायात्र्याया वना नडरु की नने न न न निर्मा के स्थान कर के स्थान के निर्मा के निर्मा के न स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान है। दर्ने ःक्ष्ररः दसवाशः संशादी : दर्ने नः या शादर्ने नः कवाशः न रः ज्ञायः न तर् शायरः न श्रयः वाहतः <u>न्रास्त्रिः भेन् न्रोदे न्नरासे त्र्मेन केरा न्यस्यान्त्र निक्रायायस्य तर्रे न्यम्या</u> न'न'नश्रस'मिन्न'मिश्रस'सदे'नेने'नदे'न्नर'सें'दर्झन'य। ने'न्न'दे'श'दर्सस'स्राधे'मिर्नर म्रे। दर्ने द्वरासायस्य समानविष्या वर्षा वर्षे राष्ट्री वर्षे राष्ट्री वर्षे राष्ट्री समानविष्या वर्षा मेन्द्रे त्यम्याया द्यस्तु र्वेन स्ट्रूट्य द्यस्य द्यस्य विष्यान्य विष्यान्य विष्यान्य विष्यान्य स्ट्रियः मन्दर्द्वर में श्रुद्धर्या मन्दर विषया मन्दर व्यय महिता में स्वास मिन्न मन्दर विषय मन्दर विषय मन्दर विषय मन्दर वनासेन्योर्द्रिं प्यत्यव्ययातु न्दर्न्यर में द्वेव में दे त्यस ग्री स नसूस मदे नस्य मान्दर्द र्से प्रत्याहेश्वराये प्रति योट.जंब.क्योब.चंब.चं.बुंट.योटा विक्रूच.स.ट्रेट.लट.द्या.शवट.वक्क्यो व्रिब्ब.वचुंट.चंदु. धेरःर्रे।।

देवे श्वीतः नश्यामान्तः निविष्यः प्रदान्यः म्वा स्थान्तः म्विष्यः म्वा स्थान्तः म्वा स्थान्तः म्वा स्थान्तः म्व द्रा स्थानः स्व स्थाने स्थानः स्थानः स्थानः स्थान्तः स्थान्तः स्थानः स्यानः स्थानः स्

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूद्राया

यश्चाराय्यक्तात्वर्त्वात्वर्थः व्याच्याः स्वेद्याः । (देशः वायवेत्वः प्रत्यः प्रवेदः प्रत्यः प्रवेदः प्रत्यः व

गुर्दाने या होता प्रति । विक्रामा स्वाप्ति या प्रति । विक्रामा स्वाप्ति । विक्रामा स्व

त्रुव्यक्ष्यप्रचित्रप्रेत्तर्थः निर्म्यक्ष्यप्रचेत्रप्रेत्तर्थः विद्वर्षः विद्वर्यः विद्वर्षः विद्वर्षः विद्वर्यः विद्वर्यः विद्वर्षः विद्वर्यः विद्वरः विद्वर्यः विद्वर्यः विद्वर्यः विद्वर्यः विद्वर्यः विद्वर्यः विद

ण्याने (देख्व) में दाय अर्थे दाय अर्थे वा विश्वे खेटा विदान देरः सवरः द्वेतः रहेषः दव्यूरः द्वेरः र्रे। विषः दव्यूरः पतेः द्वेरः ग्रावः विषः द्वेरः पतेः द्वरः र्यः र्ये वाट रुट विवा प्रारेश प्रारं स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत पर विश्वनाया था कूँ आया प्राप्त प्रचाना सु । यहँ पाया प्राप्त प्रचाना सु । यहँ पाया प्राप्त सु । यह । यह । यह । यमार्सि र्वेति द्वादार्से वादानुदाविवा याळ्टा वायार्वेदायया वीत्री स्वीता विवास ब्रेन र्से र्से दे नियम रे जाम दिन त्र नियम् के नियम रे नियम र र्वरार्याचारानुराविवाय्वरायदेशास्त्रीयायान्त्रात्त्राच्यान्त्रीया त्रश्रम् अर्थान् स्त्राम् स्त्राम स र्श्रणबार्यराशुरावा अळवाणवेषातुराचयार्श्वार्थात्रार्थाः व्यापार्वेदायाण्ये व्यापार्थाः व्यायान्त्रे श्रे मिर्देर प्रमार च्रमात् मिर्मा स्थाया अस्त्र मिन्ने मार्थ स्थाया स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय ध्रिमम् । दिवे ध्रिमम्बाग्यम् अर्वेदाय्य अर्वेदायाय्ये हेत्र प्रस्थित स्वर्थे गट-उट-विग-दर्गेष-ग्री-र्सेच-चेब-गवष-पति-हेब-द्-वि-श्र-दर्गेष-हे। अर्सेट-एअ-र्सेच-

सक्रेस्र प्रद्राप्य प्रमुद्रा

व्यास्यास्यास्य स्थान्य स्थान

भूति स्वर्गां व्यविकान्त्रे स्वर्गां स्वर्गां स्वर्गां स्वर्णां स्वर्गां स्वरंगां स

५ वे (श्रे ५ व्यव) वर व खुर च ५ व ५ ५ ५ व व व ५ ५ ५ ५ व व व व

ग्रवश्याहेशन्यरः में प्रसूदः या

न्नो सेन् व्हर्न कुर ध्वरम् । खुर्य क्षेत्र ख्रेंना धिन नकुन्न ह्या। न्ने सेन् केन् कुर ध्वर हे न्येव के निष्ठ के स्थान किन्ने क्षेत्र केन्य केन्य केन्य केन्य केन्य केन्य केन्य के

નવો. વધુ. ક્ર. વા. ક્રે. વા. કે. વા. વા. ક્રે. વા. વા. કે. વા. વા. ક્રે. વા. વા. ક્રે. વા. ક્રે. વા. ક્રે. વા. ક્રે. વા. ક્રે. વા. વા. ક્રે. વા. ક્રે. વા. વા. ક્રે. વા. ક્રે. વા. ક્રે. વા. ક્રે. વા. વા

है 'क्षेत्र'नवो'न्य अन् प्यंत्र कृत्य न्यान्य प्रत्य विषय प्यक्ष प्रत्य प्रत्य

यदः र्ये र ख्वाया न इ द्वा क्षे । दि य से द स्वयः या हे वा य स्वा । यक्ष्व वाहे या वयतः या कतः यह या है। । यक्ष्व वाहि वा दि से द वाहे या या हिता।

यद्भार्श्वन्यस्थ्यम् विद्वात्वस्य विद्वस्य विद्वात्वस्य विद्वस्य विद्वस्य विद्वस्य विद्वयस्य वि

सक्रेस्र प्रद्राप्य प्रमुद्र श

प्रभून चित्र प्राप्त प्रमुक्त प्राप्त क्षेत्र प्रमुक्त प्रमुक्त क्षेत्र क्षेत्र प्रमुक्त क्षेत्र क्ष

तर्मानुषाग्री हो र्स्या हुषापराप्य प्रम्

યું. વિશ્વયા છે. ક્રિયા શે. ભૂપા ક્રિયા માત્રા ત્રી ત્રાપા ક્રિયા માત્રા ક્રિયા શે. ખ્રામા ક્રિયા શે. ખ્રામા ક્રિયા માત્રા માત્રા ત્રી ત્રામા ક્રિયા માત્રા માત્રા માત્રા માત્રા ક્રિયા માત્રા માત્

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूद्राया

ण्या विकान विकान

णुबान्त्रवःक्ष्यः २। पिट्ट्यं नातीः ग्रीः ग्रीः निवानि विष्या ग्रीः निवानि विषयः प्रित्रा निवानि विषयः प्रित्र विषयः प्रित् विष

प्यत्व क्ष्म ।

प्राचित्र क्ष्म विश्व क्षम विश्व क्ष्म विश्व क्ष्म विश्व क्ष्म विश्व क्षम विश

यायमाञ्चा त्रीत्राध्यम् स्वतः स्व व्यायः में स्वतः स्व रण्यायावी न्यर र्रे स्प्रान्य र्रेव स्थित है। न्यर र्रे स्थापी स्यर र्येते : ह्यास्य : र्या इस्य वि : स्री वि : स्री : धराबी त्युरार्से । विष्ठेवान्तरोर्वेदानु प्ववेत्र प्रति विष्टि वि बेर-र्रे इन्वि:न्वर-र्वेदे:ह्य-स्-र्वा इअषावे इन्व्युवा रेषा ग्रुप्त विदेर सु क्षे.वीषु.वट.व.वोवब्राम् । ब्रैषु.टेनट.सूषु.ईज.स.रच.इश्रब.बु.बटब्र.की.मू.वि. म्ने अर्द्ध्यापते वर मुदे कूर व नवम है। रवर रें प्रत्ये मुख्य रें प्रेर्प व नवर रें प्रत्ये मुख्य रें प्रेर्प व चवेव र में र में र पेर पावका की किय र पाट र पेर र पाय त.कै.ये.की कुंधु.र्यंथाय.श्रेषु.झ्.शूषु.ब्रिय.क्षा.बुवा.कुंषु.र्यट.सूषु.र्यंत.स्य.र्या. ग्रीमा अप्ते प्रमानियमा प्रमानियमा विष्या मुन्ति । विष्या मुन्ति । विषया मुन्ति । वाय्याम् विषयः क्षीः निवरः सूषुः में विषयः सूष्टिः स्वार्धः स्वरं स्वार्धः स्वार्धः स्वार्धः स्वार्धः स्वरं क्षे.ये.लुव.बूर्। ब्रियु.रेयर.सूपु.रेयास्य.र्यास्यश्वात्रे अष्ठा.तूर.के.ये.लुव.बूव्यायक्षेत्र चर्ड्स तम्म विष्या प्रति स्थाप्त स्थाप्त प्रति स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत ग्री:र्यास्य:र्याम्बेणामीबाइयानेबाःश्चीदायादी:येन् इयायरानेबायती:व्यावाद्यास्य न्वाकी हे ब न्दान्द्री वाषाया के न्यावाषाया धीवाय दि । के ब का का निवास दि । विवास व मुवःजन् इयःवेनःवृतःप्यमःइयमःवी पनपन्यःजःप्रीपनःपतः इयःपःप्येवःवेनः

ग्रवश्याहेशः द्वरः में वसूदः भा

यद्वीट्राचप्रः द्वीर्ट्या । स्थितः स्थान्यान्य प्राचीत्र स्थान्य । स्थितः स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

यर्ने खे. त. बे. च द्वं त. त्वं च. त्

त्रवाचा चित्रः सर्वे त्रवाचित्रः त्रवाचित्रः त्रवाचा विकायम् न्यायविकाचा विकायम् न्यायविकाचा विकायम् न्यायविकाचा विकायम् न्यायविकाचा विकायम् न्यायविकाचा विकायम् न्यायविकाचा विकायम् विकायम्यम् विकायम् विकाय

त्रुबायाः चुबायाः त्रुच्चेत् चे वाञ्चवायाः वार्ष्यायाः वाष्य्यायाः वाष्यायाः वाष्यायाः वाष्यायाः वाष्यायाः वा

म्यातर्च्चित्रः र्च्चित्ताः त्याम्यायायायायायाः भित्रः विश्वासः स्वरुषः स्वरु

ग्रवश्यादेशः न्यरः में स्ट्रवः या

व्यक्षणं विश्वन्तिस्यः संस्तित् ।

हो इस्यास्य स्वास्त्रः स्वस्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्

श्चीत्राचित्रः वित्रः क्षेत्रः वित्रः क्षेत्रः वित्रः क्षेत्रः वित्रः व

वाञ्चवाबारुव ग्री क्षे रहंवा चन् निया

दे.प्यंत्रः प्रत्यः प्राप्त्रं विष्यः प्राप्त्रं विषयः प्राप्तः विषयः व

वर्रे दावाद्यार में से दायाद्या । भ्रासे दायाद्या ह्या ह्या वस्तु द्या

विषयः तर्ने श्राम्य विषयः विष्यः विषयः वि

वालाने ज्ञानाला र्यावाचा पार्टा स्वाचा ताला के नाला र्यावाचा ताला स्वाचा वाला ने ज्ञान ताला का वाला का चुतैः ळॅम्बायायान्या द्वाप्तायान्या द्वाप्तायान्यायान्यायान्यान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्याया **ਛੁ**दःधेव ग्रीः वस्त्र राज्य राज्य स्त्र वार्ष्: नितः नितः स्वापितः स्व चतर वितर वितर्भवाषा पर अर्दे व सुअ पुर चिर चिर दे विष चेर दे वि प्रचिर प्रमान यमगुरा यदाद्ध्वाधाद्दाद्वायायराडेमायर्वे ने वा यमायमायर्वे ने विमा यद्रा देद्रवाची रद्वी देंदें अद्रेश्वर्षण्य स्रित्यं विषय स्राथ स्रित्य स्रित्य स्रित्य स्रित्य स्रित्य स्रित्य क्षेराहेशासुर्दिणाके वा वदी क्षेराहें तास्वामायाय वर्षमाय प्राप्ता क्षेत्राय वर्षा व र्षेत्-रायमाळु-त्रायो न्रायुर-इयमामादी-वियमान्रायुन-रिवायनायन्यर्देव-र्दे॥ कु'ल' अट मेट तदेवा मारा प्राप्त अदि तद्य अ कु मारा प्राप्त कि वार्षे पा इसमा र्षेत्र या लबाबान्द्रित् क्षेत्राच्या क्षेत्र विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व यतर से हे तदेवाबाय दर तदु बाय दर वार्षे पाइस्स वार्षेद्र या यस बाद र हि दूर हिर इस्रमासे प्रतास्त्र केवा तह्वा प्रतास्त्र केवा विष्टा प्रतास केवा विष्टा प्रतास केवा विष्टा प्रतास केवा विष्टा य-५८-व्यूब-ल-ब्यूब-त-भ्रुब-त-न्त्रु-त-त्रु-त-क्र-५८-क्र-५८-क्र-५८-क्र-५८-क्र-५८-क्र-५८-क्र-५८-क्र-५८-क्र-५८-क्

नात्रानाहेश-५न८-में नसूत्रा

पिराया प्रमानिक स्थानिक स्थानि

प्रश्न-वर्ट्स्त्र्वे नुष्ण्वश्चर्यन्द्र्यक्ष्वे न् श्वर्याव्यक्ष्वे न् श्वर्याव्यक्ष्य विषय्यक्ष्य विषय्यक्ष्य विषय्यक्ष्य विषयः वि

बेराची स्वरार्थ तर् त्याप्यक्ष स्वराया स्वर्ण्य विकाल स्वराय स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वराय स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्यं स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्

पर्विट्याविष्ठवी,जबाकीय,तपु,विश्चित्वाक्ष्य, प्रमान्त्रीय, प्रमान्त्रीय विष्ठ्य, प्रमान्त्रीय विष्ठ्य, प्रमान्य विष्ठ्य, प्रमान्त्रीय विष्ठ्य, प्रमान्य प्र

२८.ग्रूट.त.टटा क्रट्ट.क्र्य.त.च्रुट.क्र्य.त.ट्रुट.च्रुट.च्रुट.व्र्य.त.क्ष्य.त.कष्य.त.क्ष्य.त.क

यः वे न ने ने ने निवान्य प्रतासी न ने ने निवान्य वा क्षेत्र प्रतासी न ने निवान्य वा क्षेत्र प्रतासी ने निवान्य वा क्षेत्र प्रतासी निवान्य वा क्

यत्तर्नर्न्यात्वर्न्यात्वर्न्यात्वर्न्यात्वर्न्यात्वर्म्यत्वर्मत्वर्म्यत्वर्म्यत्वर्म्यत्वर्मत्वर्यत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्यत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्मत्वर्यत्वर्यत्वर्मत्वर्यत्वर्मत्वर्यत्वर्मत्वर्यत

ग्रवश्याहेशः द्वरः में वसूदः भा

इ.शंटुं अ.सं. स्वाया क्षेत्र क्षेत्र

खेश्नर्यरक्षेत्रक्षः इश्वर्याक्षेत्र वितर्यः मृत्याव्यः क्ष्यः इश्वर्याः इश्वर्याः वितर्याः वित्रयः वितर्याः वितर्याः वितर्याः वितर्याः वितर्याः वितर्याः वितर्याः वितर्याः वितर्याः

त्रुवः मुन्दः विकानितः स्वान्यः विकानितः स्वान्यः विकानितः स्वान्यः स्वान्यः विकानितः स्वान्यः स्वान्

सक्रेस्र प्रद्राप्य प्रमुद्रा

पश्चित्रः इतः क्षेत्रः कृताः भ्रीः तः यत्रः त्रिः स्थः त्रिः त्रिः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषय

वाञ्चवाषारुव स्थायीव स्पर्व स्वृत्व रहेवा क्षेत्र स्व

यानेषायायाञ्चयाषारुवायायेवायते स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप

शेयशः १८८ शेयशः श्रुदः देशः भ्रुदः हेग्। मयशः ४८ १८८ शः श्रुशः अळदः १९८ १८८॥ र्चेनः भरम

ग्रवश्याहेश:५वट:र्से वसूद्राया

यर्ख्ट्यास्वामुनायराप्यप्राप्य

मुरुष्यः मुरुष्यः याक्षेत्रः याकष्यः याक्षेत्रः याकष्यः याक्षेत्रः याक्षेत्रः याक्षेत्रः याकष्यः यावकष्यः याववववव

.....अंतरा शुर्मि । या सराया स्वापा सामा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा

सेस्र श्री मान्य स्थान स्थान

त्रसंदि से सम्मान्य स्वर्ध स्थान स्वर्ध स्थान सक्षेत्र स्थान स्वर्ध स्यर्ध स्थान स्वर्ध स्थान स्वर्ध स्थान स्वर्ध स्थान स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्थान स्वर्ध स्थान स्वर्ध स्थान स्वर्ध स्थान स्वर्ध स्थान

सक्रेस्र प्रद्राप्य प्रमुद्रा

च्चित्री क्ष्रित्र भ्री स्वित्र भ्राचित्र प्रत्य स्वित्र प्रते स्वत्र स्वते स्वते स्वते स्वते स्वते स्वित्र प्रते स्वते स्व

इंशर्ट्रियायायाये विर्यं

गात्रा गाहिरा प्रचार में निस्ता

र्षेर्-१८१ भ्रूमासन्त्रन्तनम्यार्षेर्-१षेत्रने। ५८-रो-मशुस्र-१र्थ-१८२। भ्री-सन्ते। देश'स'क्षूद्र'द्रव'स'द्रद'हेट'टे'व्हेंब'द्रट'พेद'ख'द्वेद'स'द्रट'क्रॅश्र'स'क्ष्रश'स'यहम्मश्रास'भेव' है। विश्वास्यान्वी यार्वि व वाही सुवा सेनायान्या विश्वास्य हैं व सेन्या उदावि व व्यानान्या श्रेस्थान्द्रात्रेस्थान्तुद्रार्हेद्रार्हेद्रार्ह्यद्र्यान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र सप्पेद'राप्पेद'य। इद'रा'न्द'हेट'टे'व्हेंद'न्द'पेन्'याचेन्'रा'न्द'र्सेश'राहेंद'र्सेट्श'ठद' विं त्र नहे प्रे र (प्रक्रिंग विकास के कार्य के कार्य के प्रम्थ के प्रकार के कार्य के कार कार्य के कार के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार धेव परि क्षेत्र में विशादर्रि विशास्य स्वर्थ मान्य परि क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र तः (इस्रायन्त्रस्थायक्के नान्ता इस्रायक्के नाहेश्याना ले स्ट्रासेन पान्ति हिंत्या नहना स्यायके नाहेश्यान हे स्ट्रासेन बुम्याभूराहे प्याने के म्यामे के म्यामे मान्या के मान्या धूना नर्या नर वर्दे द राजा नभद राका हो जना हु हूं न हुर द नहन का व्याप द नुत्र ज्ञान विकास की ।) स्रवःक्रेम्याययायनुद्वारायवे से 'न्यायाया'न्याये स्थाया वृत्याया न्याये । त्याये । त्याये । त्याया स्थाये । त्य न्ता स्वानस्थानन्ता धेन्स्राननेनन्ता विष्यानाक्ष्रस्थाण्यान्त्रेन्त्रान्तान्त्रे । नेशस्तर्हेत्रः सेर्श्यः उत्रद्राविराविष्यः सेवाश्यः यात्रावाश्यः प्रम्यः वत्रवाश्यः वर्षेत्रः यदे श्रेम्स्

म्रास्त्राचान्त्रीत्रे स्वाकान्त्रीत्त्राच्या । स्वाक्त्राच्या । स्वाक्र्याच्या । स्वाक्त्राच्या । स्वाक्याच्या । स्वाक्त्राच्या । स्वाक्त्रच्या । स्वाक्त्या । स्वाक्त्रच्या । स्वाक्त्रच्या । स्वाक्त्रच्या । स्वाक्त्रच्या । स्

र्<u>ट्रे</u>यान्द्र्यन्त्राव्यत्त्र्यूर्यः विश्वान्यः विश्वान्यः विश्वान्यः श्रुव्यान्यः स्त्रित्यः श्रुव्यान्यः स्त्रित्यः स्त्रान्यः स्त्रित्यः स्तित्यः स्तित लमा गुरु-हु-दर्शे-दूर-हु-इन-देमा सेसमालमा हुर-व-दमे व न्दर्भ दि निवेद हेंदर सेंदर हे हें दर्भेरमा विभागन्त वर्षे न न्या हिन स्वाप्त हो हिन सन्तर है न हैं न स यरःध्वाप्यश्राम् त्रुत्रः वर्षे वाद्रा वर्षे वाद्राम् वस्रस्य स्वाप्ति विद्राप्ति वाद्रा स्वाप्ति स यवे न्दें अ वें किं व न्दा इव या वहे अ यवे न्दें अ वें किं व न्दा केट दे वहे व न्दा के अ रवा र्भुवि र्योव नहना प्रवे न्देश में वि व त्यावहुना ने साम समस्या स्वासी साम स्वासी साम स्वासी साम स्वासी साम स्व दह्नायमादनुद्वायायार्थेनामायाय्वेते। सुवार्थे। संस्थायान्या ५५ यावार्थेनामायाय्वे यांचेयांचे द्यो प्राप्ता पर्दे दाळ्याशाया श्रीयाशायाच्यांचे रहें दार्शे दशाया बस्था उदा ही स्थाया धोव विदायोग्राम क्रिन्से द्राप्त स्टाने द्राप्त स्टाने क्रिन्स स्टाने स् है ज़ु में इस्र अ दे उत्तर्हें द इस्र अ ग्री कर महिंग्य के दि दे द्वा दर है त्य सेस्र में द्वा स्थानर ब्रेन्यशक्षे नवे क्रिं सेंद्रश्रम मिं दान्या निक्र पर्वेन्य निक्र मिं प्रति स्वर्ग निक्र स्वर्ग मिल्या मिल्या मिल्या स्वर्ग स्वरंग स्वर हे निवे हे हे हें दावि दर्भ में है का NAI. १९ व. मूर्या १९ व. पालप्तान को पालपान को पालप्तान के पालप्तान को पालप्तान को पालप्तान को पालप्तान को पालप नमान्त्रुसासमा हेंत्रसें रमान्त्रायदर से द्वो ना नर्रा नसे नमान्य विद्या नस्त्रा नहें मान्य विद्या निर्माण के स यद्येन्यात्रयम् वर्षे

ग्रव्याम्बेशः द्यदः में वसूत्रः य

पश्चः) धेत्र-प्रश्नेश्वश्च श्वर्षः त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्य द्वर प्रश्चेत्र प्रश्चेत्र त्यात्र त्य प्रश्चेत्र प्रश्चेत्र त्यात्र त्यात्य त्यात्र त्यात्य त्य त्यात्य त्यात्य त्यात्य त्यात्य त्यात

पिर्धायान्य स्थाप्य विवास्य

मश्चिम् स्वर्त्ता विकास स्वर्ता ।

क्रियाल् स्वर्त्ता क्रिया स्वर्त्ता विकास स्वर्ता ।

स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्णि स्वर्ति स्वर्णि स्वर्ति स्वर्णि स्वर्ति स्वर्णि स्वर्

इयानेयाचाराची तर्ष्र र निवार तर्चर ना

पर्चे.कि.ट्टा चर्झेन्याला.लेटाश्चाचर्चेयाकी.पट्ट्वी.क्ष्याकाला.के.च.ट्टाश्चाच्यात्तर्यः वर्चे.कि.ट्टा चर्झेन्याला.लेटाश्चाच्येय्याच्यां) च्टा क्ष्याल्याच्यां च्यां व्याच्यां क्ष्याच्यां च्यां व्याच्यां व्य

ग्रम्भः ग्रिकः द्यदः से स्कृतः स्

श्रुष्ठाः चीः श्रितः त्रात्तः विश्व त्रात्तः विश्व त्रात्तः विश्व त्रात्तः विश्व त्रात्तः विश्व विश्व तिश्व तिश

म्यः क्वित्र वेत्र प्रमान्त्र स्वेत्र स्वेत्

बेंबबाग्री बाबार प्रमुन्या

तर्व त्या च के प्रत्य के के प्रत्य के प्रत्य

ग्रव्याग्रियः द्वरः में न्यूत्या

द्यान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्यम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्यम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान

र्ये दे द्वा हो से अअअ म्बर्भ उद्या त्युद्द विश्व हो दे त्ये से अअ में अअअ में अव में

म्यान्ते स्थान्य स्था

स्तान्य स्ट्रेश्नित्त्व प्रत्य स्त्रे स्वान्य स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्वान्य स्त्रे स्

यद्रा अस्य संस्थानुरदे द्वा ह्या श्रद्धा प्रमाणक स्थानित स्थान

न्वो नदी साम्राम्य

इन्नाक्षेत्रः द्वार्थः दक्षेत्रः विक्राह्मे । विक्राः द्वार्थः विक्राह्मे व्याप्ते । विक्राः द्वार्थः विक्राह्मे व्याप्ते । विक्रां व

महिश्रास्त्रो । त्यश्चे त्र्वास्त्रास्त्र व्याप्त्र होत् । त्रेवास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र होत् । त्रेवास्त्र विद्यास्त्र होत् । त्रिक्ष होत् । त्रेवास्त्र होत् । त्रिक्ष होत् । त्रिक्ष होत् । त्रिक्ष होत् । त्रेवास्त्र होत् । त्रिक्ष हो

चनाःस्ट्रिस्तःश्चे न्द्रास्यःश्चे न्याः स्वाधाः स्व

त्रभःश्चीत्रः त्राचे स्थान्य स्थान्य

्राचानुत्रन्ति । वित्राची । वित

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूद्राया

चाला-हे-दि-तान्ने-द्वाला-चाले-इस्यान्य-इन्याने का क्षित्र-दिन्ता क्षेत्र-च्याने का क्षित्र-च्याने का क्षित्र-चयाने का क्षत्र-चयाने का क्षित्र-चयाने का क्षत्र-चयाने का क्षित्र-चयाने का क्षत्र-चयाने का क्

क्रॅव क्रॅट्य केव रॉवे या अट प्रमृत्या

क्रॅन्स्य क्रिन्स क्रिन्स ह्वा ज्ञान्त । । व्रिन्स क्रिन्स क्रिन्स क्रिन्स । ।

वार्श्वरात्त्रं व्याप्तात्त्रं स्वार्थः स्वरं स्वर

वृत्ववर्षाकी त्यर्ति वृद्ध्यात् स्थान्त्र स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

ग्रवश्याहेशन्यरः में यसूद्राया

चेबास्य चेत्। । यहवास्य द्वीत्राच्या स्वाप्त त्या स्वाप्त त्या स्वाप्त स्वाप्

प्रिन् अर्देव निक्षण प्रति निक

श्रेनिग्निराये साम्या

भ्रे द्वो त्य दे द्वित्य से द द्वा दि स्क से द दि स्क से द दि स्क से द दि से द

सक्रेस्र १८६ स. ५५० १५५०

चित्राक्षे निवित्राचित्र वित्राचित्र वित्राचित्र वित्र वित्

वृंव-ब्रॅट्याकुट-दुवे-यायटा

ह्र्यान्त्र्यात्रक्ष्मात्रक्ष्मा । विवादीयात्रक्ष्मात्रक्ष्मात्रक्ष्मा । विवादीयात्रक्ष्मात्रक्ष्मात्रक्ष्मा । विवादीयात्रक्ष्मात्रक्ष्मात्रक्ष्मा । विवादीयात्रक्ष्मात्रक्ष्मात्रक्षात्रक्षम् । विवादीयात्रक्षम् । विवादीयात्रक्षम्

ग्रवश्याहेशन्वराधें वसूवाया

न्याय निवे श्री स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

स्वर् (श्वःण्ये-क्रीःगःश्रणी) राष्ट्र ख्री रःह्री ।

स्वर् (श्वःण्ये-क्रीःगःश्रणी) राष्ट्र ख्री रःह्री ।

स्वर् (श्वःण्ये-क्रीःगःश्रणी) राष्ट्र ख्री रःह्री ।

स्वर् (श्वःण्ये-क्रीःगःश्रणी) अस्त्र स्वर् स

वरायायादेषायायवराया

सक्रेसरायहरान्ययान् गुरश्

इस्रबन्द्रमासुन्यत्वन्त्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः स्वायः क्षेत्रः स्वायः स्वयः विद्यः स्वयः विद्य विद्यायः प्रित्यः स्वयः स

त्रांच्यात्राम्भव्यात्राम्च्यात्राम्यत्रम्यत्राम्यत्रम्यत्यत्यत्रम्यत्यत्रम्यत्यत्रम्यत्रम्यत्रम्यत्यत्रम्यत्यत्यत्यत्रम्यत्यत्यत्यत्रम्यत्यत्रम्यत्यत्यत्यत्यत्यत्रम्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्

श्रेश्रमायादावी तिर्प्र-दिस्ति श्रेश्रमायविद्याति ।

वाशुअन्य से से स्वान्ति । विष्ट्र प्रति से स्वान्ति । विष्ट्र प्रति स्वान्ति । विष्ट्र प्रति स्वान्ति । विष्ट्र प्रति । विष्ट्

ग्रवश्याहेशन्यरः में यसूद्राया

वर्दे द्राप्ति (प्रमाण्या प्रमाण्या महिमाने सेसमान स्पूर्य प्राचन।)र्यो प्रते सेसमा मसमा उर्ज ता है सेसमा त्रमा हुर प्राचिमा दर्जुर दें विश्व श्रुर दें । वे श्रेवा श्रे कंव दर दें गविशादर हैं गया दर दर्जे दर गविशा ५८:नठमःमदे:द्वेर:५८। ५वो:नदे:मेसमःधेत्र:मरःभ्रे:ळ्त्:द्वे:सःगशुस:५८। सदः विराधिः न्राक्षायान् रात्रा क्षायान् राक्षेत्र स्थया स्था स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया रेशरवादरवृह्णपरास्राहेशरवेरधेरार्हे । दिरविदर्भुर्देवास्राह्मस्राह्मस्राह्मस्राह्मस्राह्मस्राह्मस्राह्मस्राह्म गान्त्र क्षेंग्रामाने मान्य प्राप्ति । वर्षे दामित्र प्रोप्ति माने स्वीत् प्राप्ति । वर्षे दामित्र । वर्षे दामित्र प्राप्ति । वर्षे दामित्र प्राप् नमानारायादर्शेन्यान्नो नार्येन्यादे सेसमायायान्ना तृते वर्शेन्यानसूत्र समाने न्दाहे र्श् इयाशुक्ष-त्-देवायर-तु-क्षे। दवो नः सात्तुकाय द्वारा ने वो नः त्वारा सात्रा है। दवो ना सात्रा है। दवो ना सात्रा है। नः या जुर्याना त्या प्रतान प्रतान के र्बेद्ग्गी:द्रवेग्रयःयःयार्वेद्ग्यदेश्येद्ग्यःयारुग्रयःयाद्य्यःयःयेद्ग्यःर्देग्रयःर्वे ाजशदी'श्रेसश ग्रम्भःसदेःनरःतुःग्रार्हेत्ःसरःह्येतःसदी ।

दे त्यायदे रायदे द्वारा मुक्के रायदे रायदे स्थाय स्था

श्रीम्वीयां के सार्वेशम्या । भूम्या स्वाप्य स्वीत्रा

त्रश्चात्रक्षात्राचित्रक्ष्यात्रक्षयात्रक

पद्भारत्भेत्राचे स्वर्ष्वाविष्ठाचि त्यात्राचिष्ठाच्यात्रच्यात्रच्यात्य

क्रॅब्स्स्र-मले:न्टार्ब्स्स्म्याय:न्टा विक्टेन्सन्टर्वेक्षेन्यावेग।

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूद्राया

ध्यायतः कृतः अर्थायतः कृतः अर्थायतः कृतः प्रति स्वाप्तः स्वापतः स्वाप्तः स्वापतः स्व

नश्चेनस्यान्तर्रे नश्चित्रस्य नश्चेत्। । नावन्य या नश्चित्रस्ति।

पहेनाः क्रिन्यः वास्त्रः वास्त्

क्षश्चान्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्तः विद्यान्

महिन्दे गुरु त्याक्ष विषय द्वीत्र । मान व्याप्य नित्र ने निश्चर हैं।।

चित्रात्मां वित्तः स्वाकार्यं त्रित्तः । ।

विवाला चित्रं त्रित्तः वित्तः वितः वित्तः वित्तः

ग्रवश्याहेशन्त्रम्थं नसूत्रम्

विक्तः स्वर्था के स्वर्धः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्धः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्धः स्वरं स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वरं स्व

पिर्यक्ष मूर्टि का स्वी की स्वित संवी

ने प्यश्र पर्मे नियमित स्था । नश्य मान्त्र निर्मे निया त्र से ना

पर्ट्र-पिर्शंबानी अश्वाचीर जा अश्वाचार निर्मा क्षेत्र का निर्मा निर्मा कि विष्य का निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के नि श्चीं प्रति स्टें स्टें से द्राप्त प्रति ता से द्राप्ति स्वापित से स्वापित से स्वापित से सिक्ष से स्वापित से स यर्नेवाबायार्नेवाबेटबायाः स्टूटाहिताबायायात्वाचे वाक्षायात्वाच्यायात्वाच्यायात्वाच्यायात्वाच्यायात्वाच्यायात्व वाबेदादी वर्क्केदायावे धिदाबी पदि दिया अर्द्धा वाबेदाया पदि विष्ट्वा विष्ट तर्रेन्-ळण्यान्दः च्याप्तते चुन्-न्दः स्रेय्यायर् व प्यनः सून्-पते यळव लेन् रुवः प्येवः या वर्षिवायात्रयात्रयात्रे अत्रयात्रयात्रे अत्रयात्रयात्रे स्तर्भातात्रयात्रे स्तर्भात्रयात्रयात्रे स्तर्भात्र र्रे विकार्सेन नर्वेन पाट होता तकन र्ने । (क्रॅन संटम क्रेन ग्रम क्रम स्मानिक प्रमान स्थानी करा होना हैन हिन विदेशमालाङ्गान्दर्भवामालदर्भन्त्रम् विदेशमालदर्भन्ति विदेशमाल्या विदेशमाल्या विदेशमाल्या विदेशमाल्या विदेशमालय कवाबार्यवाबान्दान्थ्वायायान्दे नेत्रान्दान्यु न्यात्ये । अयम्भीयबायते बोधवायायायायायायायायायाया

सक्रममायहमान्यमान् मुह्मा

चश्रमान्त्र विक्ता क्षेत्र म्यान्त्र विक्ता क्षेत्र क्षेत्

हेनामयर नम्मान्त्र हिन्मर ठ्वा हि भी मेरिन नहीं नम्मान

क्ट्राचार्यक्षत्राचाह्नत्राच्याच्याह्मा अञ्चल्याच्याह्मा व्याप्ताह्मा व्याप्ताहमा व्या

ग्रवश्याहेशः द्वरः में वसूदः या

स्वित्यम् स्वाचित्रः स्वाच्यां स्वच्यां स्वाच्यां स्वच्यां स्वाच्यां स्वच्यां स्वाच्यां स्वाच्य

तर्याक्षेत्रितिते से असात् वृत्ति वित्यारा प्रमित्या

चित्रायद्गानाः स्वादि स्वेस्यायः विक्रामायद्वेस्य सेन्त्या विकायः सेन्त्य स्वाद्वा । व्याद्वा स्वाद्वा स्वाद्वा । व्याद्वा स्वाद्वा स्वाद्वा । व्याद्वा स्वाद्वा स्वाद्वा स्वाद्वा । व्याद्वा स्वाद्वा स्वाद्वा स्वाद्वा । व्याद्वा स्वाद्वा स्वाद्वा स्वाद्वा स्वाद्वा स्वाद्वा स्वाद्व स्वाद्वा स्वाद्व स्वाद्वा स्वा

यान्य यार्टि कं से दाविया से दा वित्य सार्वे विदेश से विश्व

ण्यान्त्रं । स्थित्रं विष्यं विषयः विषयः

षदः द्वायः चः द्वः तुषः यः यः श्वः द्वः दुः चः केः र्षे दः के क्षा द्वायः दुदः सुषः के दः से का

न्वातःनःवःवान्नेबःवबःर्वेवःर्वेन्बःर्वन्यःधेवःयःर्वेवःन्वःन्नःर्वेवःन्वःर्वः

वीश्वास्त्र थ्रेट. यु. लूच. पेच. ट्रंट. लूच. पेच. ट्रंट. क्य. ज. ट्रंचीय. ट्रंट. ट्रंट. क्यांच्याचेच ज्यूर. तथा सूचीय. ज. ट्रंचीय. च्रंचीय. च्रंची

श्चे संग्वाबन न्वानि न्वायः सन्दर्ग्या संग्वे नित्र संग्वा स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वयः स्वय

ने मिहेश पर्दे न न मा बुवाश न वा वा।

ग्रवश्याहेशन्यरः में यसूद्राया

यमण्यव प्रमाण्या) केंबाया नुश्रेषाया प्रदे ने पाति साने पात्री पा

षरः हैं ण न्धें न त्या व न्न के वें न के ना

हेंग<u>'</u>द्र-दुर्डेंद्र'स'क्टेंद्र-विच'केद्या

हुंचान्तर्याक्षेत्रक्षः होत्याक्षेत्रक्षः होत्याक्षेत्रक्षः विष्याक्षेत्रक्षः विष्याक्षेत्रक्षेत्रक्षः विष्याक्षेत्रक्षः विष्याक्षेत्रक्षेत्रक्षः विष्याक्षेत्रक्षः विष्याक्षेत्रक्षः विष्याक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षः विष्याक्षेत्रक्षेत्रक्षः विष्याक्षे

त्र-ह्न्वाब्रायद्वः चिटाक्ष्यः अर्ट्वः त्र-ह्न्वाब्रायरः ब्रायक्ष्यः चिटाचिः व्यान्वे व्यान्वे व्याव्यः व्यावः व्याव्यः व्यावः व्यावः

यान्यसान्त्री क्ष्याचित्र स्वास्त्र क्ष्याचित्र स्वास्त्र क्ष्य स्वास्त्र स

गात्रा गाहिरा न्या में प्रमुद्दा या

क्रम्बर्ग्य स्थित्रः मिन्ने स्थान क्रम्बर्भः मिन्ने स्थान क्रम्बर्भः स्थान स्थान

श्रेयश्रेयश्यव्यक्तिः वी स्थान्य विद्राय

स्यात्रेय्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात् स्रोसस्य स्वात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्

अर्दे.ज्यान्नेश्वान्यत्त्रः क्षिट्र-द्रान्त्रः क्ष्यान्यत्त्रः क्ष्यान्यत्त्त्रः क्ष्यान्यत्त्रः क्ष्यान्यत्तः कष्यान्यत्त्रः कष्यान्यत्तः कष्यान्यत्त्रः कष्यान्यत्त्रः कष्यान्यत्त्रः कष्यान्यत्त

सक्रेस्र प्रद्राप्य प्रमुद्रा

वीश खूं खेश तकर हूं। ।

श्री अर्थ्र वारा के अश्राप के अ

स्यातर्चेत्रः र्श्वेत्यायात् विः त्रेयायात् स्यानेत्रः त्रेत् । विश्वानाय् विः त्रेयायात् स्यानेत् । विद्यायात् स्यानेत्रः त्रेत् । विद्यायाय् । विद्यायात् । वि

···························Àस्रशः न्दरः सेस्राध्या स्ट्राध्या स्ट्राध्य स्ट्राध्या स्ट्राध्या स्ट्राध्या स्ट्राध्या स्ट्राध्या स्ट्राध्य स्ट्राध्या स्ट्र

सर्थ्दय.त्रम.र्जय.त्रदर.¥श.त.र्जे ।

श्रेश्वराचार्ष्ठवासान्ता द्वरावार्ष्ठवासान्ता ह्वराव्यासान्ता ह्वराव्यासान्ता व्याप्तात्वार्ष्ठवासान्ता व्याप्तात्वार्ष्ठवासान्ताव्यास्त्रात्वार्ष्ठवासान्ताव्यास्त्रात्वार्ष्ठवासान्ताव्यास्त्रात्वार्ष्ठवासान्ताव्यास्त्रात्वार्ष्ठवासान्ताव्यास्त्रात्वार्ष्ठवासान्ताव्यास्त्रात्वार्ष्ठवासान्ताव्यास्त्रात्वार्ष्ठवासान्ताव्यास्त्रात्वार्ष्ठवासान्ताव्यात्वार्यात्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वायात्यात्वार्यात्वात्वार्यात्वात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वात्वायात्यात्वात्वात्यात्वात्यात्य

अर्द्ध्दर्भाश्वत्याधिवायाः क्रुत्रायराच्या

महिश्रासासह्य स्थान्य स्थान्य

विष्ठेषाः सुन् से अन्तरे ह्रास्या सुन् के सायकन्या देशाये विष्ठे । ने देशे सुन् स्वापित

क्यायर्वे राक्षे दारायदे मातृराद्यायया स्वीते प्राप्त मातृरा मातृराय मातृराय मातृराय मातृराय मातृराय मातृराय म मदेख्डम्मान्द्रम् कुन्नो सेन्नोदेख्यसम्बद्धान्द्रम् देद्द्रसम्बद्धान्द्रम् श्रुवाशःसद्यःवावशः भ्रम्यशः यानवाशःसः श्रुः स्ट्रेशःसः नृतः श्रुवः सद्यः यञ्चशः सुः स्ट्रास्यः सुः नृ सुत्र शुर्या र्कें मात्रा सम्मे त्रा शुर्य सुत्र विमाय क्षें मात्रा स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्व सदुःदर्शेरःसन्दर। वि.द्वयात्वसादुःदर्शेरःदर्शयातःब्रेशःग्रहःदर्शः वि.दर्शसञ्चरःहः वर्चेर.यषु.योष्ट्रभ्र.य्राच्ययात्राच्ययेत्राच्युत्राच्यात्राच्याः क्री.वर्च्यत्रायाष्ट्रभायेव्या.वर् श्चेत्वीरावी सेश्चान क्षेत्र विद्यान विश्वान स्थान निष्या स्थान निष्या स्थान निष्या स्थान वशायवावाशासान्दा अप्तृहान्दा वृहातासायवावाशासंदे वावशास्त्रायानाशास्त्राचनगासा यदः नुभः नृदः। कुः त्र्यभः वाञ्चवाभः उदः सुवाभः व द्वः दः प्रिनः यदेः वाद्यभः भ्रवभः याः व नवाभः यदेः धुलन्दा वर् ग्रेट् र्रेट् र्रेट् र्रेट् र्रेट् र्रेट्ट वर्ष मान्य मान्य वर्ष मान्य वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष ब्र्व-य-संप्रेव-संदे-दर्-होर्-हे-शु-इ-माशुस्रा-मन्द-वा ग्वाब्व-प्यट-मानुस्र-मह्य-संदे-

ग्रवश्याहेशन्यर में वस्त्राया

र्वाचीयःवावयः भ्रान्यः यात्रवायः यात्रवायः यात्रवायः यात्रवायः वित्वाचीयः वित्वावीयः वित्वा

র্ষ্রবাদ্যবিদ্যা

म्बेयामा के नियम् स्थित स्थित

र्वेन य दे र्वेन गुदे र्के श खूद यर गुर यर्षे ।

 \hat{A}_{1} यन्तर्भः स्र्रं क्ष्रं स्र्रं त्वे स्र स्र्रं क्ष्रं स्र्रं त्वे स्र स्र्रं क्ष्रं स्र स्र क्ष्रं स्र क्ष्रं स्र स्र क्ष्रं क्ष्रं स्र स्र क्ष्रं क्ष्रं स्र स्र क्ष्रं क्ष्रं क

મોફેશ્યન મેનાશન સેન્ કેન ના ક્રાય કેન્સ્ય સાથે સેન્સ ના સાથે કેન્સ ના સાથે કેન સાથે કેન્સ ના સાથે કેન સાથે કેન્સ ના સાથે કેન્સ ના સાથે કેન્સ ના સાથે કેન્સ

सक्रेस्र १८६ स. ५५० १५५०

द्रान्तार्क्षत्रप्रशास्त्रप्रशास्त्रप्रशास्त्रप्रभागे । अद्यार्क्षत्रप्रभागे । अद्या

याक्षेत्राचा ने नियम निर्मा के स्वत्या ने ने नियम निर्मा के स्वत्या ने के स्वत्य ने स्वत्य ने के स्वत्य ने स्वत्य ने स्वत्य ने स्वत्य ने स्वत्

वायः हे 'ब्रॅंच'स' न्द्रासं वे प्रायदे 'न्वा क्रॅंश ब्रस्थ रहन 'या प्रेंन' न्सा ले वा

र्चनः सन्दः अर्चनः वित्रः श्रीः अर्थः स्टः स्टः चीः श्रीः न्याः वित्रः श्रीः चीत्रः वित्रः व

कु ५ १५ त्या मिन्या मि

ग्रीदेशपर्देश)

.....वर्गेनामहिश्रामी।

दे सूर ह्ये र पहट वया ह्यू द द अप मिर्ने पाया में पाया है पाया लुब्र-तब्रायम्यात्रम्यान्त्रवान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्य ग्रीमानम्यानार्द्ध्वाने। दे प्यानार्क्षमायद्वानायम् वर्षान्यायम् वर्षान्यायम् वर्षान्यायम् <u> र्वा-र्ट-र्वेश्चरायुः चवाःश्च-श्चीः श्लेट्रिवाःश-रटः स्थान्यः वाष्ट्रवाश्वरायः श्लाम्र्वाश्वरायः श्लाम्यायः श</u> याम्बर्यान्तर्नात्रात्र्यंत्रात्र्येत्रात्र्येत्रात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्र चण अदः भ्रदः रेण द्रः यं लाव्या व्याप्त स्वरं स् यथायाध्येत्रापते क्षेत्राप्ता (तन्नन्त्वयुरः क्षेत्रेह्यापते क्षेत्रापते क्षेत्रापते क्षेत्रापते क्षेत्रापते क चन्नसः वान्तवः वाञ्चवानः सेनः ग्रीः नेनः चर्ष्ववानः ग्रीः स्त्रें चन्नः ग्रीनः नः नः नः वानः वानः वानः वानः वानः न्दायन्य निवास्य मिनायि द्वीत्र मिना क्षेत्र प्रति द्वीत्र मिना क्षेत्र प्रति द्वीत स्वास्त्र प्रति विवास स्वास्त्र प्रति विवास स्वास स्वा चवि:ब्रेन्)र्विन:पानादः प्यदः खेदः प्रदेः ब्रेन्यः यमिदः द्वी । (वर्षेवाः पानिकाः विकाराः विका यः व्याप्तान्तान्त्रः व्याप्तान्त्रः विषान्तान्त्रः विषान्तान्त्रः विषान्तान्त्रः विषान्तान्त्रः विषान्तान्त्र धेव र्वे।

र्गाशुक्षायाधी क्रमायाम्युक्षा

सक्रेसरायहरान्ययान् गुरश्

च्चित्राचित्रक्ष्याच्चित्रच्चित्यच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्यच्चित्रच्चित्रच्चित्रच्चित्यच्चित्रच्चित्यच्चित्रच्चित्यच्चित्रच्चित्यच्चित्रच्चित्रच्च

प्यट. स्वा. त्या. त्या. त्या. त्या. श्री व्या. त्या. त्य प्या. स्वा. त्या. त्य

ર્જુ સાર્યા ત્રામાં ત્રામા ત્રામા ત્રામા ત્રામા ત્રામાં ત્રામાં ત્રામાં ત્રામાં ત્રામાં ત્રામાં ત્રામાં ત

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूद्राया

तपु.क्र्याची.क्र्यात्में स्वात्तात्में त्यात्रात्त्र त्यात्त्र त्यात् त्यात्त्र त्यात् त्यात्य त्या

अ'गर्ने ग्राम्स्स्रम्'ग्री'क्स'म'निह्या

क्र्याविष्यमासुःसाम्हिन्यायाः चनास्रीन् त्वींनाः त्यसामित्रसामित् वै. ५५ देन ता. ज. ज्ञान ता वा का वा की वा का वा की वा की वा का वा की चित्रं भेत्रं ने ने त्या के के निष्य के यरः र्वेतःयः वे तर्देत् यः दृदा वाञ्चवाषः सुः र्वेतःयः वाञ्चवाषः दृदा वाञ्चवाषः येदः यरः र्वेतः यःगञ्जग्रायः अदःयरःगर्हेग्रयः हे क्रूदः क्रूंय्यः के प्वते छीरः दी । (देः प्यटः यह्नायः श्रेवः क्र्यः यहः ला. व्याच्या ग्रीटा. देव. व्याच्या देव. विश्व स्टा. वि <u> न्यरः के प्यश्ची</u> क्रियादे अञ्चेषायादे वे हेवादे त्ययादाद्दाद्दा अञ्चयायदे द्वीतार्थे विष्याद्वीते क्रियात्वीया वि लश्ची नहेवाबाबीदार्स्य प्राप्तावशबाबीयात्रा नहेबात्र त्वीरार्स्य) र्या सूर्य नहेवाद्या तर्मेवा यदे प्रमानिक क्री मार्चिय प्राची वाषा प्रदेश स्त्री वा वाषा क्री प्रमानिक स्त्री प्रमानिक स्त्री प्रमानिक स्त्री प्रमानिक स्तर्भ प्रमानिक स्त्री प्रमानिक स्त्री प्रमानिक स्त्री प्रमानिक स्तर्भ स्त्री प्रमानिक स्त्री यामञ्जूषाषाञ्चेत्रत्रा (विदेशवर्देत्यमाण्डिंवाषायाञ्चे स्रोत्त्रित्याण्डेव्यामाण्डेव्या यमार्मा) वणायेन ग्री त्या श्रीमार्सेन पावणायेन नुप्ति प्राप्ति ने वि श्रुत्या पहिन स्था र्क्रूप्यः के प्रति : च्रित्यः व्यूपायः वर्षायायः प्रदेगः हेतः प्रति । (पह्नायः वर्षायाः प्रवायः प्रवा विश्व सं अपनितृत्व विश्व विष्य विश्व विश्य यावी चया खेरा रुपार्मिया वा है। दे वि केंबा केंवा के प्रवे हि रामें।

र्क्षेन'दर'से र्क्षेन'सेद'ग्रे'गशुमा

सक्रेसमायहसान्ययान् ग्रुट्या

શું.શુંત-ત્તવુ.શૂંત-તત્વન્દ્રના માન્યત્વાના સૂત્વન્તવુ. શુંત્વન્તવુ. શુંત્વન્તવતુ. શુંત્વન્ય

णटःअर्वेटःश्वटः(५८ःश्चॅयःश्वटः)गैःर्वेचःपः(३यःपःक्षरः)अर्वेटःश्वटः५८ः। श्चेंयःश्वटः गैःर्वेचःपःश्चेंयःश्वटःधेवःर्वे त्वेषःग्वःचः)गैःर्वेचःपः(३यःपःक्षरः)अर्वेटःश्वटः५८ः। श्चेंयःश्वटः

श्वरः व्यः सेव स्वरं म्रामिक रायर् न्या

श्रूट पर ग्रुप्त क्षेत्र परि र्वेत पात्री र्क्के अश्रूट प्रदाश्रुट ग्रुप्त क्षेत्र पा (विषा क्षेत्र पर

ग्रवश्याहेशः द्वरः में वसूत्रा

त्रमण्डिकास्य प्रति स्वाप्त स

य्यायात्री क्षेत्राचयत्रा क्ष्या क्ष्या व्याप्त क्ष्या व्यापत क्ष्या व्यापत क्ष्य क्ष्य

નેતે.પશ્ચેવાયા.શેયા.વાયા.વા.વે.પણ.વા.વા.પણ સંત્રા શ્રેયા.શેયા.શેયા.વાયાયા.શેયા.લે.સેવા.શેયા.લે.સેવા.શેયા.લે.સેવા.શેયા.લે.સેવા.લે.સે.સેવા.લે.સેવા.લે.સેવા.લે.સેવા.લે.સેવા.લે........................

र्ट. के स्वार्त के स्वर्त के स्वार्त के स्वार्त के स्वार्त के स्वार्त के स्वार्त के स्व

٩٤٤٠)١

বন্ধ্রীনমানটানা ব্রামান্তিরে

पश्चित्रयात्त्रप्तिः स्वाप्त्रयात्त्रप्तिः प्राप्तिः प्राप्तिः स्वाप्तिः स्वापतिः स्वापति

.....वर्रेन्यवा विज्ञविष्यः शुःष्ट्रेन्द्रे स्री विज्ञान

गात्रा गाहिरा प्रचार में निस्ता

पःयःर्सेग्वायःयःर्स्ट्वेरःपव्यःर्सेपःयःवयःकेःपःह्वस्यवःयत्रदःष्ट्र्रःश्चेवःस्रेपः

पर्ने सर्श्वरक्षेत्रः भ्वरक्षेत्रः भ्वरक्षेत्रः भ्वरक्षेत्रः भ्वरक्षेत्रः भ्वरक्षेत्रः भ्वरक्षेत्रः भ्वरक्षेत् भ्वरक्षेत्रः भवर्षः भवर्यः भवर्षः भवर्षः

चात्राने ह्वात्र ह्वात्य ह्वात्र ह्वात्र ह्वात्र ह्वात्र ह्वात्र ह्वात्र ह्वात्र ह्वात्य ह

देश्चित्राच्यं व श्री व त्या व त्या

चन्न-तिरुक्ति-स्वार्धिन्ति। तर्न-स्वार्धिन्यः स्वार्धिन्यः स्वार्यः स्वार्धिन्यः स्वर्धिन्यः स्वार्धिन्यः स्वार्धिन्यः स्वार्धिन्यः स्वार्धिन्यः स्वर्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्धिन्यः स्वार्धिन्यः स्वर्धिन्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वयः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्य

पार्शि विषाची पारा स्थापर पर्ट्वा पारी क्षिण प्राप्त स्थापर पर्ट्वा पार्थि विषाची पारा स्थाप पार्थि विषाची पारा स्थाप पार्थि विषाची पारा स्थाप पार्थि विषा ची पार्थि क्षिण पारा पर्ट्वा पार्थि क्षिण पारा स्थाप पार्थि विषा ची पार्थि क्षिण पारा पर्ट्वा पारा पर्ट्वा पार्थि क्षिण पारा पर्ट्वा पार्थि क्षिण पारा पर्ट्वा पारा पर्ट्वा पार्थि क्षिण पारा पर्ट्वा पार्थि क्षिण पार्थि क्षिण पारा पर्ट्वा पार्थि क्षिण पारा पर्ट्वा पार्थि क्षिण पारा पर्ट्वा पार्थि क्षिण पार्थि क्षेण पार्थि क्षिण पार्थि क्षिण पार्थि क्षिण पार्थि क्षिण पार्थि क्षेण पार्थि क्षेण पार्थि क्षिण पार्थि क्षेण पार्य क्षेण पार्य क्षेण पार्य क्षेण पार्थि क्षेण पार्य

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूदःश

अर्धेन'य'नभृत्या

वित्रेषायायार्वेचायाच्वित्यादी

यः र्वेतः यः नश्चेत्रयः सुद्रा

व्यक्तिया वित्य प्राप्त त्रि विवादी वित्य प्राप्त त्रि विवादी वि

वन्यासाञ्चीयाग्री ने क्यानाश्चरा।

क्ष्यायन्त्राच्या विद्यान्त्राच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्यान्त्रच्यान्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्यान्त्यान्त्रच्यान्त्यान्त्रच्यान्त्यान्त्रच्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्यान्त्यान्यान्त्यान्यान्यत्यान्त्यान्यान्त्यान्यान्त्यान्त्यान्त्यान्यान्त्यान्यान्त्यान्त्य

यात्रशःयाहिशः द्यदः से स्मृतः या

ત્રાસ્ત્રાસ્ત્રિયાના ભૂતિ તાલુ ત્રી સ્ત્રાન્ત્રાસ્ત્રાન્ત્રાન્ત્રાસ્ત્રાન્

व्ययः स्वास्त्र व्यवः विश्वः विश्वः

दें द्वा अर्चे वा या प्रयास्य अर्गाटा पुरा में की अर्था वा स्टें पुरा से किया की की की किया की की की की की की क

पर्ने प्रायते के अप्यामें प्रायम स्थाने प्र

प्रचीश्वास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्र प्रचीश्वास्त्रास्त्

वना से न् ग्री त्यास ग्री त्या है न पाई का ने न न से न प्या के न प्या के न प्या के न प्या के का निष्ठ का निष्ठ

र्ष्य-ग्राट-श्र-श्र-प्रम्याश्राची वर्षे न्या वर्षे न्या के त्या का न्या का न्

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूद्राया

चना-सेन्नु-सेन्-सेन्नु-सेन्-सेन्नु-सेन्नु-सेन्नु-सेन्नु-सेन्नु-सेन्नु-सेन्नु-सेन्नु-सेन्नु-स

च्रियानदेन्द्रन्त्र्यं स्थान्त्र्यक्षान्यः व्यक्षे व्यक्षान्त्रः व्यक्षः स्थान्त्रः स्थान्तः स्थान्त्रः स्थान्तः स्थानः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थानः स्थानः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थानः स्थान्तः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थान्तः स्थान्तः स्थानः स्य

चना हेत्र क्षृत्य स्वराह्म चन्न क्ष्र स्वराह्म स्वराह्म

सक्रेस्र प्रद्राप्य प्रमुद्रा

यहंगा हुय. याच्या वर्षा त्या वर्षा त्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्ष्य वर्षा वर्ष्य वर्य वर्ष्य वर्य वर्ष्य वर्ष्य वर्ष्य वर्ष्य वर्ष्य वर्ष्य वर्ष्य वर्ष्य वर्य

.....रे र्चिन प्रमा । अप्येष अवश्व मुस्र कुस्र प्रमा

पर्ट्रिट्ट प्रत्यकृत्रं ते कार्यक्ष प्रत्यं प्रत्यं प्रत्यं विष्ण्यं कार्यक्ष प्रत्यं विष्ण्यं विष्णं विष्ण्यं विष्णं विष्णं विष्णं विष्णं विष्णं विष्णं विष्णं विष्

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूद्राया

यस्त्रवायः प्रत्यः व्या विव्यत्त्रः स्वायः स्वर्ण्यः प्रत्यायः प्रविव्यत्त्रः प्रत्यायः प्रविव्यत्त्रः विव्यत्त्रः विव्यत्ते विवयत्ते विवयत्ते

पवित्र-त्वान्ते हिंदा-स-देट-अत्वर्ष्य-स-वित्र-ति-वित्र-ति-व्यक्ष्य-स-वित्र-ति-व्यक्ष-स-वित्र-ति-वित्य-ति-वित्य-ति-वित्य-ति-वित्य-ति-वित्र-ति-वित्य-ति-वित्य

श्रीयायनुयायम्

वर्षित्राताः श्रीताः स्वेशायकराताः द्री

भूवायद्यासेयस्य स्वराद्य वर्षे

वे वण हु श्चाप इस्रवाद ने प्राया है दे स्मृत्य दि स्मृत्य सत्र संग्री श्ची से दान व क्रिया ठर्र्र्रियः इस्रायाया श्रुर्र् द्रिं स्रित्र्याय हुण्यर स्रीत्यूर है। कुर्स्य सेर्प्ये ब्रेन्स् विर्देशक्ष्यायन्याण्याता ब्रियायर्ह्न्याण्यात्रात्रात्र्याया चिषायान्दरायवाष्ट्राच्यायवान्द्रयान्त्रान्त्र्यान्त्रान्त्र्यान्त्रान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त ८८.श्रेजानक्षेत्रातात्रे क्षे.यी.धुरी.युर्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र र्रे. वियानु पार्था वियाना मु. केर स्मूया अनुआणा सुर या परि सुर रे वियानेर रे । (तक्रे तर्ये बिट क्रे) त्याञ्चलायात्र तर्देर पार्थे दिन द्या बे व स्थापि क्रे विट क्रे) त्याञ्चलायात्र विट क्रे देशनात्वात्वहुनानाक्षेत्रोधाराक्षेत्रोधाराक्षेत्रात्वहुन्। वात्रुधाराक्षेत्रात्वहुन्। वात्रुधारानाहुन्। धेव वे त्यों पारवें पाववें पायवें पाय र्घेपायते मुत्रार्वे | तिर्दे वे मुः ह्या मी तिर्दा पाया है भी मावता पुरेश मार्गु अराम ही पर्वे मुंदि पर्वा मु प्रशः मुं मुं अधिय ता भु । पर्या वे अ । जी जा मुं स्वा ता जाय ता भी पर । जा प्रमा निवा ता प्रा मि । जा प्रमा मि । जा प्रम मि । जा प्रमा मि । जा प्रम मि । जा प्रमा मि । जा प्रम म ५८। धर्रायर ब्रूट परि पर्वा लेर सार्ये वाषायरे हिराद्रा रें सेंदे हें के

ग्रवश्याहेशः द्वरः में वसूदः भा

য়८-त्य-विज्ञ-विद्यान्त्रः क्षेत्रः द्वा चे चित्रः विद्यान्त्रः क्षेत्रः विद्यान्त्रः क्षेत्रः विद्यान्त्रः क्षेत्रः विद्यान्त्रः क्षेत्रः विद्यान्त्रः विद्यान्तः विद्यान्त

तर्ने मा से दाया प्रमित्राया

नित्रायर् ने असे द्राया नित्राया । वित्राय के स्था । से द्राय के से द्राय के स्था । से द

म्।)द्रेष्विचार्र्याचार्याचार्ये। प्रियम्प्ति स्वर्त्याचार्ये। विश्वस्तर्याः विश्वस्त्र स्वर्त्याः विश्वस्त्र स्वर्त्याः विश्वस्त्र स्वर्त्याः विश्वस्त्र स्वरं विश्वस्त्र स्वरं विश्वस्त्र स्वरं विश्वस्त्र स्वरं विश्वस्त्र स्वरं विश्वस्त्र स्वरं विश्वस्त स्वरं

प्राचि नहीं ।

प्राचि नहीं ।

प्राचि नहीं ।

प्राचि नहीं ।

प्राच नहीं ने स्वाप्त स्व

ત્ર્યુંત્રન્યન્ય ખેતા તેર્ત્વે ત્રાસ્ત્રન્ય પ્રસ્તિ ત્રાસ્ત્રન્ય ત્રાસ્ત્રન્

ग्रवश्याहेशन्वरः में वस्त्राया

तर्ने मा अरापति स्र्रियमा तह्या प्रम्

स्यायन्ति । स्वीयाय अप

.....भुभावयार्श्वेदावश्चराहेत्।

ने प्यर हो मान्य प्रमान प्रम प्रमान प्रम प्रमान प्र

$$\begin{split} & \alpha \hat{q}_{0} + \alpha \hat{q}_{0}$$

ण्यह्वाक्तिः विद्यान्तः श्रेण्वे त्योग्याय्या वाद्विवाक्षियः विद्यान्त्रः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः

वसम्बाधारवि साधित तुषामित्रमा विमायर्से मा

ग्रवश्याहेश:५वट:में वसूद:मा

तर्व्यान्यते र्श्नेश्रयातम्यानम् ना

ड्वा-य-वर्ष्वा-य-वर्ष्ट्र अअ-वर्ष्ट्या-य-१८-१ । य-१-यात्र अ-१-४-१ अ-१-३-३ अ-१-३-३ अ-१-३-४ अ-१-४-१ । य-१-यात्र अ-१-४-४ अ-१-३-३ अ-१-३-४ अ-१-४-४ अ-१-४ अ-१-४-४ अ-१-४ अ

तर्म्वान्यतः क्ष्रुं अत्रान्यतः विष्णान्यतः क्षेत्रान्यतः विषण्यतः विषण्यतः क्षेत्रान्यतः विषण्यतः क्ष्रिं अत्रान्यतः विषण्यतः विषणः विषण

য়ড়ৢয়য়৻৻ৼয়৻৴৸৻৻৴ঀৼয়

श्र्वायाम् स्वायाम् स्वायाम् स्वायाम् स्वायाम् स्वयाप्त स्वयाम् स्वयाप्त स्वय स्वयाप्त स्वया

तर्ने ख्रें या वालव क्षेत्राचन्न्य वाह्न प्रति स्वाधित्य स्वर्ते क्षेत्र स्वर्ते क्षेत्र स्वर्ते क्षेत्र स्वर् पर्दे अ ख्रेव तर्न म क्षेत्र प्रवादे क्षेत्र स्वर्ते प्रवि प्रति क्षेत्र स्वर्ते क्षेत्र स्वर्ते क्षेत्र स्वर् तर्दे म क्षेत्र स्वर्त क्षेत्र स्वर्ते क्षेत्र स्वर्ते क्षेत्र स्वर्ते क्षेत्र स्वर्ते क्षेत्र स्वर्ते क्षेत्र

ह्मान्तरः होरान्त्र्। हिंदान्यराश्चर्यात्वर्यात्वरान्यत्वर्यात्वर्यात्वरान्त्रः हमान्यरहोरान्त्र्। विद्यान्यरहेन्यत्वर्याः विद्यान्यरहेन्यत्वर्याः विद्यान्यरहेन्यत्वर्याः विद्यान्यरहेन्यत्वर्याः विद्यान्यरहेन्यत्वर्याः विद्यान्यर्याः विद्यान्यर्यः विद्यान्यर्याः विद्यान्यः विद्यान्यर्याः विद्यान्यर्याः विद्यान्यर्याः विद्यान्यर्याः विद्यान्यर्याः विद्यान्यत्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यर्यः विद्यान्यः विद्यान्यः

यादः चया दे रतस्य वाषा सति स्पेदः ग्री दीषा सति हो दिते दे रासी द हो यर्दे. यम। भराश्चिर् सेर्प्यामार्देर् त्य शुरू हो । वाषर मार्वा वीमा श्चिमा प्रविमा । विमा त्तृत्राच्या (श्चेत् के संवायते वे काया दे के अवाक्षे कृताया वत्वा पुः देव या वावावा वा) वत्वा कित् पुः र्तृवाया न्ग्राचर्रेयान्ग्राद्वीत्वायायन्यत्रीत्यार्येत्रायदे छित्रन्ता र्वे र्वे वे दे दे दे दे प्राप्त याधिवायते भ्रीतार्दे । दिते भ्रीतार्देवादर्वात्वाता वीषा ग्राटा श्रीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता याञ्चरषाधरादेरावर्षेषायते र्स्नेयषायहुषायक्चेदाये तुषाया र्सेर्स्नेते क्चेर्येषा वे दे श्चरमायायाधीवायते श्चिरार्से विमायम् । दिमावाययामायदा स्रमायाया स्वरास्त्रम् । तसवाबाराक्रवाबारवरुषाद्दा ध्रीराधार्यदायान्ता वेबारवाग्रीबाइयायरार्ग्वावा यद्र. ट्र्य. वाषु. जया जिटा पर्वावा ताष्ट्र क्ष्रिं अया तह वा जा क्ष्या वाष्ट्र या क्षेया वाष्ट्र या विषय विषय याधीवाने वियावबादराष्ट्रया अर्थेरार्टेग दिःयावेयावबावे तदीराअधराष्ट्रीयायवबा रादः ख्रुँश्रयाय द्वाप्तक्वराधे व्याप्त स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वय यविषायायाचे वा से दार्श्वेस्रयाय तहिवा मु से उत्तर विषया याडेबाञ्चबाचेत्रपरादशुरार्रेबिबायवत्रिं। दिबावाधेराश्चेराश्चेत्रश्चेताश्चेता यन्ता विवेषामितः स्वास्यास्य स्वास्य स चतः तर्वेवासासुनासुनासुनासुनासुनासुनासुनास्यान् चतः स्वार्थान्यः विवादिना स्टास्त्रस्य चिरःकुनःबेयबान्यतःबानुवायायव क्रमान्यायम् अस्तानुवान्यायव अस्तानुवान्यायम् अस्तानुवान्यायम् अस्तानुवान्यायम् अ यर.पर्देव.र्थे विस्तवीय.तपु.लट.शुंशया.ग्री.र्क्षेत्यत्य.पश्चेर.तपु.र्ह्यूर.तय.पह्न्य.ग्री. तर्रें द किपाया द स्था की या की या धीय हो। दे ते खेर (ब्रांट्स स्था स्था स्था से से स्था से स

सक्षेत्रश्रादह्यान्ययान् गुरश्

त्त्राम् विकासिन्द्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम्यस्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम्यस्त्रम् स्वास्त्रम् स्

प्राचित्रभेत्रत्य चित्रप्राचित्रभेत्र वित्रम् वित्रभेत्र वित्रम् वित्रभेत्र वित्रम् वित्रभेत्र वित्रम् वित्रभेत्र वित्रम् वित्रम् वित्रभेत्र वित्रम् वित्रभेत्र वित्रम् वित्र

ग्रवश्याहेशन्वराधें वसूवाया

अष्ठियः स्यान्त्रभ्यः स्यान्त्रभ्यः स्यान्त्रभ्यः स्वान्त्रभ्यः स्वान्यः स्वान्त्रभ्यः स्वान्त्रभ्य

८८.सूर.स.लुब.भू८.डुबा.सा ।श्रुस.ब्र.इ.युब्य.बुर्य.सूर्य

विक्तिः न न ने वित्तान न निक्ति के निक्ति न निक् गुर्भायायाधीताने। हेदे भ्रीरावेखा गुराह्मयासेस्यान्यवादेषान्यात्रायायराह्म येदायाद्वात्राम् व्यामी व्यामी व्यामी व्याप्त विश्वास्त्र विश्वास्त्र स्वाप्त स्वापत स्वा वशानुमाळ्नावर्षेनावर्षेनावरे सुमार्च । शुक्षान्तान्त्राने विषेत्राच्यायान्यानमाळन् सेनामान्यान्या मॅ्यामी त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्र वरःकर्भेर्भर्द्रक्षार्चेत्याची त्ये श्रेश्राभ्रद्रियास वर्षे वक्कर्त्री देवा स्वाक्षर चित्र ध्रमार्श्वे राग्री नुरानु स्थर हिरानु विहेमा हेन प्रवे व्यय ग्री माश्वर माने निर्माणीय हिरा मु.षु.पर्नर.भु.पश्चेर.ट्री वर्ष्ट्र.सषु.सबूट.स्ट.र्कर.सटमा.चुय.सम्.ट्रेस्टर्शेट.सपु. नभ्रेन्याते केंब्राचे वार्षा केंद्र वार्षा क শ্রী ব্রামার প্রিমার বিশ্বাকী বার্মানার ক্রিমানার ক্রেমার ক্রিমার বিশ্বিক দিবের বিশ্বাস্থ্য ব वश्चेर्यविः नोग्याय्याय्याय्यायः) वर्षे ग्रायाः अर्देष्यः नुः नुष्यः यः न्दः वदः वदः यदः यदः वहेषः यदेः श्चेरः देः वे राजे राजे । (अर्घर क्षें राजी नरानु वर्षोगारा नक्षेत्र न्वा नराजी नरानु ज्ञान राजे प्राये वर्षा वर्षा राजे वर्षा वर्षा वर्षा राजे वर्षा वर्ष नमः बुर्ते ब्रेशः नुसानववरः नदिः नुसानवसः नृमः विवायः ब्रेमः नश्यानः स्थूमः नः वतः नुः वश्यमः से ब्रिशः स्था।

वुनःसुँग्रयाः इस्ययानः रे ः भूतः देगाः सः शुक्षः दः स्वतिः स्वृतः सः कतः परः नश्चेतः

सक्रेस्र प्रद्रम्य प्रम्य प्रम्य

प्यू ।

प्रमुचानान्त्राचान्नी विचान्नी स्थान्न स्थान स्थान्न स्थान स्थान

र्दे व र्स्नुं अषा तहुवा शुषावार त्या चहेव या धीव वि वा

ग्रवश्याहेश:न्यर:में यसूद:मा

महिशामायदें दादराम बुम्र महेव उद्या

म्ब्रंबन्नायिक्षण्यात्त्र्वे । प्यायायिक्षण्यात्त्रे । प्यायायिक्षण्यात्रे । प्यायायिक्षण्यात्रे । प्यायायिक्षण्यात्रे । प्यायायिक्षण्यात्रे । प्यायायिक्षण्यात्रे । प्राययायिक्षण्यात्रे । प्राययायिक्षण्यात्रे । प्राययायिक्षण्यात्रे । प्राययायिक्षण्यात्रे । प्राययायिक्षण्यात्रे । प्राययायिक्षण्यात्रे । प्राययायिक्षण्याये । प्राययविक्षण्याये । प्रायये । प्राययविक्षण्याये । प्रायविक्षण्याये । प्राययविक्षण्याये । प्रायविक्षण्याये । प्रायविक्षण्याये । प्रायविक्षण्याये । प्रायविक्षण्ये । प्रायविक्षण्ये । प्रायविक्षण्याये । प्रायविक्षण्याये । प्रायविक्षण्याये । प्रायविक्षण्याये । प्रायविक्षण्याये । प्रायविक्षण्याये । प्रायविक्षण्ये ।

यश्चित्रम्भे त्राच्यम् स्वर्त्त्रम् । विश्वम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्रम्त्त्रम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्त्त्रम्त्त्रम्यत्त्रम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्त

वर्षीयानान्दार्धेन सेवे व्यन्ता ।

यदे हिरादे विकालिकारा के वार्षित कर स्वास्त्र वार्षित वार्ष वार्षित वार्षित वार्षित वार्षित वार्षित वा है। हेर्ने अन्यति धुरर्ने । १८५ विषा अन्यति र्स्ने अष्यति विष्ठा विषयि । विषयः शुः भराये हुन दिवा स्थान स्यान स्थान कुटा पकर मुटे. की अर्ट्र जब कि प्राप्त कि प्राप्त के प् षट-दट-लट-टे.पटे.पेश-टेट-क्ट्र्--टा-प्रमूचा-ता-अःश्रुंशबा-तर-पटेवो-ता-टेट-केट-चरु-ग्वयादे र्थेद दें बेया गुर्नि या प्रत्यापा है स्थाप प्रवेद प्रत्य प्रत्ये विया विवास चषु.रेब.ग्री.क्.लार.त्रालुब.जा जीब.खेवा.बेब.ग्रीट.वित्राग्री.चब.च.चषु.कै.जब.प्टरंब. हे.लूर्जान्यसाचिरायपुरस्पुराजीसाचारालरास्यरायाषुवारिःश्रीत्रायरायक्रीरास्य विराधिराश्रीया चतः वावर्षाने र्धेन र्ने विषान् चर्मा भारत्वा राहे स्वाचा चित्र नुप्तानिक विषा वाशुर्वारावे भ्रीतात्री विकाशी स्वारावे के वार्षा विकाशी स्वारावे विकाशी स्वार चयु.सै.बु.पर्टूर.तपु.सै.≇शब.शू। ।तुर.जब.चैंट.चपु.सैपु.जीब.बु.वार्चिवाबा.ग्री.विश्वया यते सु इयग र्शे ।

यानानिः तर्द्रन्यायाः विषया चे चित्रानिः श्रुः त्यावायाः त्यावायाः त्यावायाः विषयायाः विषयायः विषयः विष

धरः वर्रे र र्रे।

यर्ने श्वे प्राचि त्यवाकायते त्यायात् त्यायायात् त्यायायायात् त्यायायायात् त्यायायायायाय त्यायायायाय त्यायायायाय त्यायायाय त्यायायाय त्यायायाय त्यायायाय त्यायाय त्यायायाय त्यायाय त्यायाय त्यायायाय त्यायाय त्यायाय त्यायाय त्यायायाय त्यायाय त्यायाय त्यायायाय त्यायाय त्यायायाय त्यायाय त्यायायाय त्यायाय त्यायाय त्यायाय त्यायाय त्याय त्यायाय त्यायाय त्यायाय त्यायाय त्यायाय त्यायाय त्याय त्याय त्यायाय त्याय त्याय

 $\mp 3.74 \times 10^{12} + 3.74 \times 10^{12} \times 10^{12$

द्वाचाबार्श्व ।

इस्रावायद्वी निक्षा स्वाप्त स्वाप्त

देशवाच्चित्राव्यः विश्वाच्याव्यः विश्वाच्यः विश्वाचः विश

यश्चरात्रीयः तर्तः स्वाचान्यक्यः क्रीः सीटः सूर्यः सूर्यः तर्यः क्षेत्रः स्वाच्यः स्वाचः स्वाच्यः स्वाचः स्वाचः स्वाच्यः स्वाचः स्वचः स्वयः स्वाचः स्वयः स्व

ग्रवश्याहिशः द्यदः में वसूदः या

श्रेन्याविष्याय्यात्र स्वास्त्र स्व

द्रवाबः टीवाच्च् विच्च्यात्तवः सूत्रच त्याञ्च व्याञ्च व्याच्च्यः व्याच्यः व्याचः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्यवः व्याच्यः व्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः व्याच्यः

त्राचेर्ट्या ।

विकायिक्यात्राचिक्य

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूव:या

र्श्रुंश्रश्रान्तरत्द्वीत्तावृश्चान्नर्भ्वश्रान्तरत्वीत्तान्नर्भ्वा ।

यात्रान्तर्भवात्त्रवित्रान्नस्थ्यात्रान्तर्भवात्तर्भवा

$$\begin{split} & \underbrace{\{ \exists_{\lambda} \cdot \exists_{$$

सक्रेस्र प्रद्राप्य प्रमुद्रा

क्षूंत्रकायहैवा.धे.मध्वोबानकायदेशःचेशःबी.पट्ट्र्स्])
वाचावाबाचेशःमध्वोबानकायदेशःचेशःबी.पट्ट्र्स्])
वाचावाबाचेशःमध्वोवावाचेशःमध्वोवावाचेशःचेशःवाचेशःवीच्याचेशःविच्याचेशःवीच्याचेशःवीच्याचेशःवीच्याचेश्याचे

ब्र्वाची न्यर सं यम्

न्तुवःयःश्रेंगाःगेःन्नरःयंःन्नन्यःवी श्रेंगावेःकेःधेवःर्देन्न्यवी । इस्यन्नेशःहेवःग्नरःधेवःयर्दे॥

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूद्राया

द्री विश्वानियस्य विष्यस्य विश्वानियस्य विष्यस्य विष्यस्य विष्यस्य विष्यस्य विष्यस्य विष्यस्य विष्यस्य विष्यस्य विष्यस्य

देशः अधिवः त्रः त्वावेश्वः त्यः श्रुंचाः वीः त्वाः त्यः व्याः विश्वः श्रुंचाः याः त्याः विश्वः विश्वः त्यः विश्वः विश्व

द्याः त्र्रीत्रः श्रीत्रः त्रीत्रः त्रत्रः त्रीत्रः त्रीत्रः त्रीत्रः त्रीत्रः त्रीत्रः त्रीत्रः त्री

ल्ट्री क्रि.ज.र्चट्य. अश्रुच्य. अव. क्रि.च्यं प्रिट्य. च्यं प्रमुच्या क्रि.च्यं प्रमुच्या व्याप्त क्रि.च्यं प्रमुच्यं प्रमुच्यं

यट्ची.णुब.ट्टा क्रूट्ट्व्ब.क्री.ची.चीयश्चरत्त्विच्च.ची.ट्टा उक्क्.चीट्टा वक्क्.चीट्टा व्यक्क्.चि.त्याचीयः विविधः विविधः

गात्रा गाहिरा न्या में प्रमुद्दा या

क्रियतक्षः स्वर्त्त्व क्रियाक्षर् स्वर्त्त् । विष्याः स्वर्त्त्व स्वर्त्त् स्वर्त्त् स्वर्त्त् । विषयः स्वर्त्त् स्वर्त् स्वर्त्त् स्वर्त् स्वर्त्त् स्वर्त् स्वर्त्त् स्वर्त्त्त् स्वर्त्त् स्वर्त्त्त्त् स्वर्त्त्त् स्वर्त्त् स्वर्त्त्त् स्वर्त्त्त्त्त् स्वर्त्त्त्त्त्त्त् स्वर्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त्त

अर्कव ने द निम्दा

नक्कुन्यः अळं द छेन् वळन्य दे।

यळव हे ८ ८ वा वे हुं न ८ १ । क ८ १ वा व र १ १ वा हे १ ।

सक्रममायहमान्यमान् मुह्म

श्चेदायर चेदारे हिरास्य अपन्ते प्रतासे प्रतासे कार्या है वा प्रतास के वा कि स्वास के कार्या के कि स्वास के कि यादेवापरासून केवा तृ स्रे पाववन दवा ने सायते स्रे पवा स्रे प्या स्रे प्राची वा विषय ने पाव वा वा वा वा वा वा व चरामञ्जीराया वावनायावी तर्नाया मुनायातरा र्योदायमा देवी मुनायमा स्वापना वित्रापनि सामा वित्रापनि सामा वित्रापनि ૡદ્વાઃવાશુઆગ્રીૹઃગ્રુદઃરદઃરદઃઅઃवार्द्रवाशःचळॅलःचक्चदःचक्चुदःचक्चुदःचर्श्वेदःघर्यःअळवःवेदःचविःर्यःरेःरेःयेवदः श्चे प्रति श्चे प्रवास श्चे विष्ठ श्चे प्रवास विष्य प्रति विषय स्वास स्वास विष्य स्वास विष्य स्वास विषय स्वास स्वास विषय धीवःसमाञ्जीवः योनःर्ने । निमावः यनुमाञ्चमाञ्चाः यळवनः विनः प्रवितः यनुमाञ्चमाञ्चाः याज्ञीयायायेः अळवः केनः मूंजाबः संः जासुअः जासुअः अध्वदः पदेः अळवः केनः क्षेत्रः केन्त्रः संः संः स्वयुवः सवः अळवः केनः पदि त द्विषार्वा) हिन्दीन्द्रियार्थेते मुन्दो वित्व अर्दे त्या नवी र्श्वेन नवा वा सुरार्थे तदी न्नानित्रुत्रमञ्जूषाञ्ची अर्द्धन्ति प्रवित्रम् । विश्वअयादानित्रा न्नो र्सूदान्ना तर्षा न्या भ्री पर भर अर्देव में विदेश पर भर अर्देव में विवय राजविव र विश्वर राजिन ५.लट.भट्ट्र ब्र्.ज्याबीश्वारे हि.क्षेत्र विश्वर प्रयान्त विश्वर व र्श्वर्गी अर्दे लगा विवयमाविव र त्युर प्रते मुग्य प्रत्य विवयमा ह्वायहें व द्वावा छेट त्र्या चुराया थेट क्रें प्र चु प्रति ही र हे प्राप्ति व सार्ट त्र होया नतः इन्वग्यानिव वे

ने निवासी निवासी शासिक में

म् नित्रे मान्त्राचा वाव्यायदे वाव्यायद्भे नित्रे भ्रे नित्रायदे भ

ग्रवश्याहेश:५वट:में वसूद:मा

ने के अन्त मुन्द्रमा वेषा या यहुवा

बेश-पर्ने-वे-म-प्यार्थनश्चरम्य श्रुश-प्रम् क्री-पर्व-क्री-प्यार्थनश्चरम्य श्रुश-पर्व-क्री-प्यार्थनश्चरम्य श्रुश-पर्व-क्री-प्यार्थनश्चरम्य श्रुश-पर्व-क्री-प्यार्थनश्चरम्य श्रुश-पर्व-क्री-प्यार्थनश्चरम्य श्रुश-पर्व-क्री-प्यार्थनश्चरम्य श्रुश-पर्व-क्री-प्यार्थनश्चरम्य श्रुश-पर्व-क्री-प्यार्थनश्चरम्य श्रुश-पर्व-क्री-प्याः श्रुश-पर्व-क्री-प्यार्थनश्चरम्य श्रुश-परवि-क्री-प्यार्थनश्चरम्य श्रुश-परवि-क्री-प्याय्यः श्रुश-परवि-क्री-प्याय्यः श्रुश-परवि-क्री-प्याय्यः श्रुश-परवि-क्री-प्याय्यः श्रुश-परवि-क्री-प्याय्यः श्रुश-परवि-क्री-प्याय्यः श्रुश-प्याय्यः श्रुश-प्यायः श्रुश-प्यायः श्रुश-प्यायः श्रुश-प्यायः श्रुश-प्यायः श्र

द्रे-त्व्र्य् विविद्यः स्ट्रिक् चिक्यः स्ट्रिक् चिक्यः स्ट्रिक्यः स्ट्रिक्यः

स्वीयान्तात्त्वरात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र हो क्ष्याच्यात्त्रात्त्र्यात्त्त्यात्त्र्यात्त्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्यात्त्र्यात्त्रत्यात्त्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्रत्यात्त्र्यात्त्रत

विश्वास्य प्रति । विश्वास्य । विश्वास्य प्रति । विश्वास्य प्रति । विश्वास्य प्रति । विश्वास्य । विश्वास्य प्रति । विश्वास्य प्रति । विश्वास्य प्रति । विश्वास्य प्रति । विश्वास्य विश्वास्य । विश्वास

यर्ने. ज्यान्त्राच्यान्त्र विषयः त्राच्यान्त्र विषयः विषयः

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूद्राया

चुःचःवैःऋन् छेषाःअर्दे। दिरःहेषाःछेषःचुःचःवैःषवष्यःधःदेरःर्दे। दिषःवःऋन् छेषाःसः वै तहेग्यायाधेव पते द्वेराण्वकाया अधिव र्वे वेषा द्वापते । तिरेषाणु समूर हेग्या अधि श्चे प्राप्त श्चे स्वाप्त वे देव विवास स्वाप्त हैं। भिन्दिकायायामानवदार्धिन्यायाधिवाही वर्षेयायायया देपविवावादीमाथी त्युरा विवन रु.प्युर न रे.विवन हेरा दि.क्षे.चम न रहेमा विवास मि.वेम ही. चःश्रेःत्वन्द्रः देव्यात् वृदःचयः मःचःवे वाववः तृःत् श्रुः रः प्येवः वः भ्रानः ठेवाः यः वर्ठवाः यंः दे केंद्राम्बद्धार् त्य स्वराचित्र स्वराधित स्वर तुःश्चेत्वित्यतेः ध्वेतः र्रे | देल्वेत्याप्तादेवे ध्वेत्यादेवे देवे वे क्विवः श्वेत्यादेवः स्वादेवः स्वतः स्वादेवः स्वतः स्वादेवः स्वतः स्वादेवः वर्षाम्बुर्षायाधेवाग्रीः भ्रान् किमायावी साधिवाया ने सर्ववानीन पुरान्ति वर्षा भ्रान कुवा.ज.भाविय.त्रर.पंश्चीर.यंबापरीबा.वीबा.वी.अक्ष्य.धुर.वु.लंटार्या.त्रर.वे.कंर.बुर. यःक्कें प्रदर्भ क्केंबावबाग्यायात्वेराधेवाते। बर्देखायायद्वायावेषाव्यायात्वेरा विट.श.वैट.च.लब.एवैट.च.रेट.। वैट.वेब.विट.लट.शु.एवैट.च.एटु.वु.एटेब.वेब. ॻॖऀॱय़ख़॔ढ़ॱढ़ॖ॓ॸॱॹॖढ़ॱॿॣ॔ॴॻऻ॔ऄऀ॔ॸॴड़ढ़ॹक़ॹड़ढ़ॶॴॶॶॣॶ विवायक्त ने न प्रवेश क्रिया विवाय विवाय विवाय क्षिया विवाय क्षिया विवाय क्षिया विवाय क्षिया विवाय क्षिया विवाय वर्द्रायमार्श्चेवाबेदार्देष्परा)

ત્રાંત્રાના કુંત્રા કુંતા કુંતા કુંત્રા કુંત્રા કુંતા કુંત્રા કુંતા કુંતા કુંતા કુંતા કુંતા કુંતા કુંતા કુંતા કુંતા

सक्रेस्र प्रद्राप्य प्रमुद्रा

श्रेट्यो स्वाबाया स्वाबायाय मन्या

न्तुःसःसेटःवीःर्स्वेत्रस्यःस्विष्यःसःस्विष्टःसःह्ये। सेटःवीःर्स्वेत्रस्यःस्विष्यःसःह्ये। सिटःन्टःट्याःन्टःधिःवीदेःर्स्वयाश्रा

यर् अः अधियः तपुः श्रीः सूर् देशः तायि वी स्थान्यः तपुः श्रीः स्थान्यः त्रियः त्राः त्रियः त्राः त्रियः त्राः त्र

ग्रवश्याहेश:५वट:में वसूद:मा

ब्रैट्नाक्षर्यः तर्ह्नाः त्रित्रः क्षेत्रः विक्रायः क्षेत्रः विक्रायः क्षेत्रः विक्रायः क्षेत्रः विक्रायः क्षेत्रः विक्रायः विक्

सक्रेसरायहरान्ययान् गुरश्

યા શ્રેट. ત્રું ત્ર સ્ટ્રેન્ ક્રિટ. ફ્રેંગ જાત્વર છે તે ત્રું સ્ત્રું સે તે ત્રું ત્રાસે ત્રું ત્રું સે ત્રું ત

अर्दे श्रे राञ्चा द्या श्रेष श्रे । श्रु निरादिन श्रु राय देव त्या स्वाय स्वय स्वाय स्वाय

क्र्याग्री विराधरायम् प्राधि द्वीत्र विष्टि प्राधित्र विष्टि प्राधित्र विष्टि व

वर्त्र-प्रस्कान्त्री वित्रायर प्रवित्र प्रदेश । क्रु. सम्मुन स्वेत स्वेत

गात्रा गाहिरा प्रमार में निस्ता भा

प्रम्थन प्रम्थन । भ्रम्थन स्थान स्थित । भ्रम्थन स्थान स्थित । भ्रम्थन स्थान स्थित ।

स्री विज्ञवाकाश्चर्नियाः स्वाकायाः स्वाववायः स्वववायः स्वाववायः स्वाववायः स्वाववायः स्वाववायः स्वाववायः स्वाववायः स्वाववायः स्वावव्यायः स्वाव्यायः स्वावव्यायः स्

.....र्चितः क्यापिष्ठेश । यळ्य हे ८ क्यशः ग्राटः

र्ष्ट्रेव-यो के न्या नित्त नि

स्र्याची नित्ता के प्राप्त क्षित्र क्षित्र प्राप्त क्षित्र क्

ক্তু: ক্ট্রব্র নে প্রবাধ নি বুদে নি করা বা বিশ্ব নি বিশ্র

महिश्रासाब्दायाकुः क्रेवाय्यस्य स्वाध्यायस्य स्वाध्यायस्य स्वित्तायः स्वाध्यायः स्वध्यायः स्वाध्यायः स्वाध्या

गीय.धे.तज्ञ्.र्टर.क्ष.हुंब.टटा ।क्रै.वु.क्ष.त्य.वेब.ध.त्र्र्टा। जुर्-क्रि.ह्रंब.कुब.तव्हेट.य.रटा ।श्रेल.घध्य.घध्य.घध्र्य.घर.हेब.स.रटा।

ब्रम्भ अपन्ति । व्याम्भ अपन्ति व्याप्त विष्ट्र । व्याम विष्ट्र । व्याम विष्ट्र । व्याम विष्ट्र । व्याम विष्ट्र विष्ट्र । व्याम विष्ट्र । विष्ट्

गात्रा गाहिरा प्रचार में निस्ता

लय.जवा.वाश्वेत्रा.स्.परी.रवा.यु.लर.रवा.सपु.कै.सपु.इंब.श्व.पर्यर्था.सा.ल्येय.प्रे क्रियाः क्रीयायते क्रियः प्राप्ता वियापास्य स्वाप्ता वियापास्य स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्व तव्दाराचते कुः र्हेन पते अर्देते । क्षेत्र प्राचारा चया तदी ने पते केंग पर ख्ना था श्चीत्रियाः प्रते क्ष्यां इस्यान् द्रायाः स्वावेषाः व्याप्ते व्याप्ते । याद्रायाः स्वावेषाः स्वावेषाः स्वावेषाः कर्रायादायम् तर्वेदे द्वो चास्य प्रमान्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स पश्चरः देख्यायान्त्रे अत्यायन्त्राश्चर्या श्चर्ये । द्विष्यायान्याने याप्तान्याने याप्तान्याने याप्तान्या । अर्द्ध्रत्यायायदी वे अर्वेदाचि गावे उव ग्री द्राप्त वे या वे अर्द्ध्र या पर वे अर्द्ध्र या पर वि कुः क्रेंत्र पते अर्देते । क्रेंत्र प्राप्त वार वार्या विषय स्थान रुद्ध की शुक्र की शक्ष वार धित्र प र्टा रणायी त्यन्यार धेव राप्टा शेशनायायार धेव राप्टा र्झेव रायार धेव य'न्द्रा ने'न्वा'न्द्रहेषासुं'अधुव'यदे'दन्'चेन्'व्यद्येव'यने'व्यव्यव्यदेन् यर त्युर चर श्रे कृषा यर त्युर च द्रा श्रे द्रावत च के द्राद्र त्युर च द्रा थे द द्रा श्चीत्राचान्त्रीत्राच्यान्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्यान्त्राच्याच्यान्त्राच्यान्यान्याच्यान्याच्यान्यात्र्यात्र्यात्र्याच्यात्र्यात्र्यात्यात्राच्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्या चन्नस्य प्रति त्यम् चिम् दि प्रत्यम् वार्षि द्वार्य स्थाप्य द्वीत् स्थाप्य स्य स्थाप्य स्याप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्याप्य स्थाप्य स्याप क्रैं क्रें प्रति स्वर्ते विषय क्रियः च्रियः च क्रि. र. अपाया अविश्वास्ति क्रि. र. अर्थ्य अर्थः स्वास्त्र क्षित्र स्वास्त्र क्षि. र. गुन्ति स्वे स्व क्युंदर्। इस्रायरःश्चेत्रायते कुंविषाचित्। (कुंद्वगःनुःग्राद्याने त्वायाने वस्रायान्तरा विषया ब्रूट.ची.की.वी.द्य.बूपु.की.जा.क्षेत्र.कुचा.पटीट.च.डीपु.की.क्षेत्र.कुचा.पटीट.की.टटा टी.टाचा.ची.की.वर्ष्ट्रट्याकंत्र.बूरी <u> नुषाद्यः नृत्रः याः याः सुत्रे नृत्यः सुत्यः अवुशानृतः।</u> वृत्वः व्यास्त्रः कृतः वित्रः व्यासः सुत्रे नृत्यः गुत्रः वर्षे नृत्यः गुत्रः वर्षे नृत्यः गुत्रः वर्षे नृत्यः गुत्रः वर्षे नृत्यः । परक्षेत्रयाङ्गअरक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्र

वेदःकुःचन्दःय

र्सःस्य मान्य प्राचीता स्वर्धः स्वरं स्वरं

(रट.ज.रट.मु.मुर.त.प्वाज.तम्बा)प्यं अ.से.रट.पुट.जय.पावय.त.(५२४.मुबाअ.मुबा) चुन्यते र्दे र्वेर वावबायते खुर र्दे वावाय हे वोवाब के चुन्य रक्ष ग्रीब क्रूर हे सूर पश्चरःहे। श्रुःगुःशःर्स्रण्यःपतेः श्रुरःपर्नुयः याञ्चयः वाञ्चय्वयः योन् प्रतिः प्रतिः प्रतिः क्यु-८ हु। प्राप्त प्र प्राप्त यविषालबान्दान्ते विष्णु त्या विष्णा विष्णा विष्णु व वेदायाधिवार्वे। विवेशायावी यद्शासाम्बर्धायार्थेवाषायाद्यात्वाम्यासेदायते सुदा हे.ग्रॅट.च.इश्रब.भैज.त्र्ब.विज.रश्वी.ज.स्वीब.तब.कैवी.चर्कज.चर.श.वैब.त.ज.चर्वी. विषान्भेषाषायदे र्द्ध्या ग्रीषाय स्त्रीनायम सुषाया ने याषान्वी सी नवी निर्मा ने याषा ग्रीमा रें अ ग्री म र्बेंद ग्री तिहेवा हेव दि या त्रावा वा मा अदि ग्री सुद में ता सेवा मा सा ही दि से से से बिषाचेरार्रे ।

ग्रम्भःगहिशःन्यरःस्निम्भ्रमःम्

विश्वास्तिः क्षेत्रः त्राच्यां स्त्राच्यां स्त्राच्या

स्व रहेग तर्रीट शै. यथर ता

ख्र्वःश्र्वःक्ष्वाःत्रच्चाःत्रच्चाः व्यक्षः व्याः व्यक्षः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः

द्वंत्रत्व्यम्यत्यः अक्षव्यः विवयः अक्षवः विवयः अक्षवः विवयः अक्षवः विवयः विव

वायाने प्रवास्त्रं वात्रास्त्र स्त्राम् राष्ट्रे वात्र प्राप्ता स्त्राम् प्राप्ता स्त्र स् भ्रे नायार्भे नायायाय सुनायये सळन हेन स्यया ग्री या खून हेना प्रमुनायये स्तून से प्रमुना है। गुर-पर्दे हे समाके नदे द्वर द्वर द्वर सम्बद्ध हो हिन सहि सम्बद्ध है लेख कि न स्थान **नठरु पर्दे ।** (दे वा क्षेत्रे पर्देश चेश शंसाळे व पर्दे अक्षत्र पावे चिश्र पर्देश पित्र पर्देश परदेश पर्देश परदेश परदेश पर्देश परदेश परदे ૽૽<u>૽</u>૽ૺ૽ૄૼ૱ૹૢૢ૽૱ૹૡૡ૽૽૽ૢ૾ૢૢૢૢૢૢઌ૽ૡ૽૽ૢ૽ૺૡ૽૱૽૽ૺૡૢ૱ૹ૽૽ૺૡૢ૱૽૽૱ૡ૽ૢ૽૱૽૽૱૽૽૱૽૽૱૽૽૱૱૱૱૱૱૱૽૽૽૽ૺ૽૽૱૽૽૽૽ૺ૽૽૱૽૽ૺૡ૽૽૱૽ૺ सक्त'नाबे'न्द्र-रद्र-रद्भो'र्चेन्न्यास्त्रस्य न्त्रस्य निष्ठा प्रत्य निष्ठा निष र्सेंदे हेट मुर्धिमा मे अम्मुत्य र्से त्या दुर्देश शुम्त्राचा चुनि साम प्रमान के साम के सम्मित्त स्तर मुन्ति स | श्रेश्नार्यः श्रेश्नार्यः के त्रायह् वा'त्र्यश्चाविवा'वो विवादी विवाद रटःस्टरने सळ्त्यानि प्रस्य उट्टरने ज्ञानि प्रमुद्धा हु सेत्र है हिरानि नि स्वित हैं। नि स्वाप्य सुद्धे से से प र्शे 'बर-कु) र्श्वेट 'वर्तु द्वाद 'वर्तु देवा' प्रतुद 'वेद 'प्यतुद विद 'प्यतुद 'वर्ति 'वेद 'प्यतं वेद 'प्यतं व 'કેરઃશ્નું'નતે :શ્નું'નચ ઋંગું નિં'ન :શ્નું ન કેરઃહ્યું ન કેવા વગ્નું રાતા નું માત્ર અવદેવા મહે વદેવા મચ ઋવદેવા નિં'ન :શ્નું ન પહે ન સ र्ज्य ।

र्शत्रभाकृतान्तःकृषे र्थनाकृतान्त्रनाषुःद्दा चर्चात्त्रभाकृष्णः वश्यभाकृतान्तरान् भेभावः व्यापानः वश्यभाकृषः व्यापानः वश्यभाकृषः वश्यभाविष्यः वश्यभाविष्य

ग्रम्भःगहेशःन्यरः वे स्रुवः य

हुट्युःक्रां अहेट्राल्युं स्थान्त्र स्थान्त्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स

दें.व.श्रेश्वराग्चिः हेश्वर्याद्वत्वात्त्वे स्ट्रां विश्वर्यात्वे स्वाय्यात्वे स्वयं विश्वर्यात्वे स्वयं विश्व श्रेश्वर्यात्वे स्वयं स्वयं स्वयं विश्वर्यात्वे स्वयं स्वयं विश्वर्यात्वे स्वयं स्वयं विश्वर्यात्वे स्वयं स्वयं श्रेश्वर्याण्चे हेश्वरह् वात्त्वर्यात्वे स्वयं स्वय

ये. र्ट. श्रुका. ये. व्रेट्ट. व्या. प्रदेश. प्रदेश. प्रदेश. ये. इश्राया व्याप्त प्रवित्त प्रदेश. ये. व्याप्त प्रवित्त प्रदेश. ये. व्याप्त प्रवित्त प्रवित्त

देबाबार्याताता क्यां क्यां विवासिका में प्राप्त क्यां में प्राप्त वाशुर्यायदर के नेवाया (याया ववाया) ग्री प्राया निवाय ग्री । या प्राया निवाय विवाय व र्रा विक्चर् ग्राट अट प्रते अवत विच्चर प्राची अप की अप विक्षेत्र प्राची विक्षेत्र विक्षेत्र प्राची विक्षेत्र विक्येत्र विक्षेत्र विक्षेत चण'श्रेन्'श्र'क्रुंब्'ग्री'त्र्य्य'नु'श्रे'श्रेन्'ठेन्। श्रेन्नी'प्रते'र्क्रेष'ठव'श्र'वे'न्ष' विष्ठवास्त्रस्यस्वाम्रिवाबासः ह्रो न्यान्ता वावबासः विष्वास्तर्यस्यः र्शेन्-पते स्थिन-र्ने । (निःयान्युन्-यान्युन्-यान्युन्-यान्यो स्वान्यान्युन्-यान्यो स्वान्यान्युन्-यान्यान्यः स्वान्यान्यः स्वान्यः स्वान् पासुका इका श्चेत खें प्रदाता पुर्ने र प्रति स्वापाय प्रति इका श्चेत खें कु कि चन अर् भ्रे त्र शुराया के दिने प्रायुराया प्रमुद्र स्था श्री दार्थ प्र ८.४४.श्रै४.५२४.२.५४४.५० <u> ५८.वोश्वर, ५५.वय.चेथे वेश्वर, यानकेवाक्षेत्र, प्रवी.वाश्वर, व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व</u> इसाञ्ची वाञ्ची त्या प्राप्त वो सी द्वी पाने वा ने वा न दे.ज.मुन्यत्रम्यत्रिंद्रः विदानान्यमानिव निवेशानान्य कर्ने क्री मानसीन्य जीतामा नक्षेत्र.वु.र्ज.(पर्वर.पीय.पर्वे.नर्थे.नर्थ.पथा.मुच.त्यर.पा)न्ये.स्.न्येन्ये.त्री.र्जेय.कुत्त.पचिर. (क्षेत्रका) रूट किन् ग्री अर्कव किन् प्रवि प्रदा (रूट मी) अधुव प्रति अर्कव किन् प्रविर्दे ।

गात्रा गाहिरा प्रचार में निस्ति मा

चल्विन्त्रं लेखात्र्रं न्त्रा से स्वयात्र विष्य प्रति क्ष्या त्र स्वया क्ष्या क्ष्या त्र स्वया क्ष्य स्वया क्ष्य स्वया क्ष्य स्वया क्ष्य स्वया क्ष्य स्वया स्वया स्वया क्ष्य स्वया स्

च्ची-ची-वाक्षेक्रचान्यात्री स्वान्त्री स्वा

भ्री अ. यं. ग्री ट. क्ष्यं त्रा व्राक्ष्यं व्यक्तं त्रा क्ष्यं व्यक्तं त्रा क्ष्यं व्यक्तं व्

(दे.लट.रच.धे.वेदे.त्त.लब.चट्टेब.चलु.ल.चझ्चब.चब्च.ता.वंदव.चट्टेच.त्त.चेद्र.चट्टेच.चलु.ट्ट.वंश.चावर.

ग्रवश्याहेश:५व८:में वसूद्राया

तत्रः चाकुंबः माः अध्ये व्यतः स्ट्रेत्। ।

स्तरः चीकुंबः माः अध्यः स्वान्तः स्वरं ।

स्तरः चीकुंबः माः अध्यः स्वरं निः चीकः यस्य स्वरं चीकः चीकः यस्य स्वरं चिकः यस्य स्वरं च

तह्न क्षित्र व्याप्त क्षात्र क्षात्र

श्र.क्रिय.तपु.ब्रीय क्षे.त्य.पु.ए.एटीब्य.टी.लुय.ला.क्री.शालुय.तपूर्। प्रि.यखुय.टी.यीय.एटीट. श्र.क्रिय.तपु.ब्रीय क्षे.या.पु.व्याय.लुय.ल्य.टी.लुय.ल्य.क्षेय.कुवा.पटीट.त्य.पट.श्रक्ट्य.तय. तपु.च्य.तपु.वु.या.पू.ट्य.तपट.यट.कुट.पट्य.ट.कुट.पट.श्रय.कुवा.पटीट.तप्ट्य.त्य.कुवा.ल्य.क

ॻॱॸऀॴॹॱज़ज़ॹढ़ज़ऻॱॹऄॴॹढ़ॹढ़ज़ऒॹॗॱ**ॳऴॕॸॱॸॱॶ॔ॴॴऄॱऄॗॸॱढ़ॎढ़ऒॶॕॴॴ ढ़ॱनते त्रकानु धे तः क्रुं अः धे तः प्रें । (दे इसमा गुवः ५ क्रुं धे वः पर्मा गुवः ५ क्रुं दे क्रुं र से उद्या** या देवास-दि-त्वाभ्रायान्य अवसायाम्बर्ट् द्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य अर्वेट श्वट गृव तर्वे अपीव पा अर्द्ध दया स्वाप्त प्रताप्त करा प्रतापत्त करा विकास स्वाप्त प्रतापति । गुव तर्चेते कु लग कुराया (भूग गुव लग गुव लग्गुव लर्चेते कुंव संदर्भ से तर्द्र प्रमा) दे द्या वे यारेषाधान्त्रायाः व्याप्तायाः व्याप्तायाः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्य भे भेता) धरे भेतर ही र तहे वा से वाका ता स्वार के दे दिवा की तहा का सुरक्ष के से इअल'(गुट'र्न्नेन:बॅट्बरुक्'फेन्यक'त्रहेण'क्षेते'त्रच्यानु'फेन्यानु'केन्यानु'केन्यानु'केन्यानु'केन्यानु'केन्यानु ૡદૈવા.ઘી.કૂય.તા.ક્ષ.તદૈવા.કુદ..જેવ.કુવા.લટીદ..તાદ.વેય.તા.ક્ષ.તદૈવા.તય.ધી.સા.ફી.યા.તુ.વા.તા.ધી.સા.ફી.યા.ફી.યા. ब्र्ट्रियं छवं नाववं ग्री अर्छवं ने देश हा अर्थं कर्त ग्रीट तहे ना क्रिना से ना स्थान स्थान स्थान स्थान

पर्वेषु क्रि. तुर हो र पर क्रि. तूर पर पर विषय क्षिय विषय विषय विषय हो हैं। धेव विद्या दे द्वा वी क्षेत्र इसमा दि से सार्य से वा सार्व क्षेत्र द्वा से विश्व से विश्व से विश्व से विश्व से तर्ग्रेति क्वितर प्रेव प्रति क्विर में । इ. ध्रेव जाया श्राम्या निर्मे जाया निर्मे विषय विषय विषय विषय विषय विषय क्र्यायायाः स्वादित्र म्यूः त्राया विषया विषया । अर्द्धात्र स्वादे निष्टि वा स्वित्र वा स्वादे वा स्वादे वा स्व क्षे.चषु.क्षै.चषु.भा.जबारचींट.चषु.बु.४.२८.। पह्ना.क्ष्म्वाबाजाःक्षे.चषट.त्रक्ष्ट्याःक्षेत्रः यर्बार्निस्ग्री क्रुपिबे प्राप्ति यार्द्रिकाराये क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्थाप्ति । पर्वटाचरि:हीर-र्स् । नि:चबेब-र्-गाब-पर्वटा-अर्घट-श्वट-गाब-पर्वेदे-हेंग्य-पर्व्य-र-क्षेत्र.चयर.यह्वा.क्र्यांब्र.ज.क्षे.चयु.भीव.पर्ग्युपु.ब्री.जब.पर्यीट.चयु.ब्री.य-रटा यह्वा. ळॅवाबालाक्षाचतरादे द्वाची गावा तर्वेते क्षुः लबात चुराचते खेरावा देवा गाधिव स्वते खा धेव वें। (तहेवा क्षेत्र क्वाराविषामा धेव या वे क्षूवा यह्य अर्घर ख्रारा यहुर यह वा प्राप्त कर गुर-देते अन्तेनाय ने नुषानासुर्य पायतर दे पर्रे र स्टर्स । । सन्तेनाय सानित्नेनाय प्रानित्ने स्थाने अपन्य सानि श्रीयाः अवअग्गुवाद्यात्रीते । क्षात्रीते । क्षात्रीते । क्षात्रीता विकासी विकास शर्श्वरमः में अन्तर्भव में अन्त या. यूट्यातपु. याष्ट्रिट्यात्त्रेया. याट्यातपु. याच्यात्त्रेयाच्यात्त्रेया. याच्यात्त्रेया. याच्यात्रेया. याच्याय. र्वाणाशुक्षार्यते अळव हिन्द्रा देते अळ्ट्रा स्वाध्य हिन्द्र अळ्ट्रा हिन्द्र अळ्ट्रा स्वाध्य स्वाध्य स्वाध्य स्व क्षे.चयु.शक्ष्य.थेट.चथु.टटा ट्रे.टट.शक्ष्ट्य.तर.क्य.तपु.श्रुश्चा.श्रुश्चा.वीट.इश्चा. ग्री'यक्षव'तेन'इसम्'ग्रट'यहेवा'र्क्केवाम'य'सू'नते 'भ्रय'यत्रस्त्र'न्ट'ग्रुव' कुवारचिर्यपुर्भे ज्ञाना स्त्री जाराही वास्त्री वार्षा वार् ૡ૽ૄૢઽ੶ਜ਼ਫ਼੶ਜ਼ૄૢ੶ૡૹૠૢૢ૽੶ਜ਼ਫ਼੶ਖ਼૾ૢ૱ਜ਼ਫ਼ૢૺૹૹૢઌ૾૱૱૽ૣૼૡૺૹૡ૽૱૱ૡૡૢૼૺઽૡૢ

वृत्यन्त्रः भ्रवाक्षः त्याः क्षुः याये स्वर्षः वृत्यः क्ष्यः वृत्यः वृत

तर्-द्वाःश्वरःचेःचवःदुःञ्चर्वःयद्वादःअवरायम्वरायःधेवःयराधदःदवाःयःअः थेव वें। । तर्र र ग्रे प्राण हिंच प्राण होता है वा त्यूर परि मु थेव र पर्र ने वे ख़्व केवा पर्वे वर देश या स्वर हेवा तर्राट पाया है। स्वर हेवा तर्राट पति क्षा सामित है। सहिव पति यक्षवः कुरः इत्रम्भ क्ष्यः क्रीः स्वाप्त क्ष्यः क्ष्या प्रतिष्टः प्रति क्ष्यः स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप वेदःबरःइस्रमःग्रदःसूबःस्वाःतवृदःचदेःकुःसःधेवःदःसूःचुर्दे। । (दःयदःवुसःदःवदुषःवुसः शुः अर्क्के वःपतेः अर्क्षवः नेनः पतिः नृतः सुयः पः याचेयाः याचेयाः योः सूवः चेयाः तृत्युः स्कृः धेवः ग्रीः अर्क्षवः याविः ग्रावः नृतः अर्क्षवः 'तेन'गाव'ग्री'शेव'र्वे'श्रीर'तन्त्र'ग्राम्य'न्द्र'श्रित्'यर'तु। बोशव'ग्री'अध्वव'यते'शळव'तेन'श्रूव'ठेग'त्र्युर'यर'तन्त्र चुमान्दाक्षेश्रमान्ते स्टास्टाची सञ्चन्यते सर्वन स्वेतानी स्वेतानी स्वयुद्धा कुष्येतानी विस्तान स्वातानी स्वयुद्धा स्वातानी स्वयुद्धा स् त्रिंदरागुवार्श्चेदाचारविवार्वे । अहावारविवारवे अळवारीन्द्राचारवे त्रिवारवे त्रिवारवे त्रिवारवे वार्षे वार्ये वार्षे वार् क्वुं ब्रेब के दे द्वा क्वा क्या केंद्र दा तह दा केंद्र वार्षिया वीका दर्दका खु चु पर चु दे ब्रेब का राप्त बेद की विदार बुद खुर खुर खु चिवाबाञ्च दे:रू.र्चा स्वाबाह्य प्रचार प्रच प्रचार प र्दराचमान्द्री प्रवास्थ्रवास्थ्रवास्थ्रवास्थ्रवास्य स्थान्य विषयामान्त्रवास्य स्थ्रवास्य स्थ्य स्थ्रवास्य स्थ्य स्थ्रवास्य स्थ्रवास्य स्थ्रवास्य स्थ्रवास्य स्थ्रवास्य स्थ्य स्थ्रवास्य स्थ्रवास्य स्थ्रवास्य स्थ्रवास्य स्थ्रवास्य स्थापित स्थापित स्थ्य स्थ्रवास्य स्थापित स्याप स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स त्युट कुः धेव हे पार्ठपाः क्रे व पावव इसम् ग्राट देश पर क्रेश शाया है पाया विवास सम्माण्य सम्माण स्वास क्रिया र्शे वराया दे रेताया ये दारे पुराविवा श्वेंदार्सवाया येदायायां । द्वाया यदि सेवा व्यति सेवा व्यति सेवाया द्वार विचात्त्रचूरायरात्रचूराक्तुः बेदाने विचायादे वे विदायुद्धार्मा विचाया केवा त्या विचाया प्याला) ह्रिन प्रान्द हिन मुद्री केंग इसमान्द्र पर्देन प्रान्न वा सुवाया प्रान्त है । या स्वाया प्रान्त वा स्व स्यान्जुन्देयायनः भ्रेत्राक्षेत्राक्षेत्राच्यायेतः)नान्ता नयसामान्त्रः चनासेन्योः स्था य-द्या-यी-र्श्वेद-त्युव-(दे-व्यव-यम्ब-दे-)अ-यार्द्रियाचा-या-क्युत्र-चुक्य-यदी-याचुवाका-ध्यक्ष-रुद-रूद-

ग्रवश्याहेशन्यरः में यसूत्राम्

मीत्रमुट्यान्यान्याक्ष्याक्ष्यात्रमुट्याय्याक्ष्याक्ष्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्य मीत्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्

अर्ने इंग्यने स्नुन रहेगा त्युत्त प्राप्त स्नुन रहेगा त्युत्त प्राप्त स्नुन रहेगा त्युत्त प्राप्त स्नुन रहेगा त्युत्त रात्र स्नुन रहेगा त्युत्त रात्र स्नुन रहेगा त्युत्त रात्र रात्र राष्ट्र राष्ट्र रात्र राष्ट्र राष्ट्र

श्रेतायवयाग्री कु प्रमुदाया

अष्यासहस्य कुःदे तर नर्द्र। वाश्याम अष्य सहस्य कुः

सक्रेसरायहरान्ययान् गुरश्

(ट्यायः अवाश्चरः अपिट्यार्टाट्स् श्रुयः तं ग्रीयः प्रायये प्रायदे लूर्ट्स् ।)

श्चर् ग्रीः अपिट्याः ये प्रायदे स्थाप्ताः अपियाः श्रीः श्वीः प्रायः अश्चेः प्रायः प्रायदे प्रायदे स्थापः अपिट्याः ये प्रायदे स्थापः ये प्रा

रट:र्म्यायायायर्ष्य्यूर्म्यः श्रीयात्र्यया।

त्राच्या व्यवस्थिते दे त्यावस्था स्वर्णा स्वरास्य वाश्चवाया ग्री अवस्था विकास स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य विकास स्वरास्य स्वरास्य विकास स्वरास्य स्

ग्रव्याम्बर्धियः द्वरः में न्यस्त्रः म

व्यवसङ्गीतबात्पर्श्वतुः त्रावः स्वान्तः मुद्रि भ्रिः यात्रकात्रे त्रकामुः र्सेवाकार्से । व्रदः यात्रेवा मुद्राद्रीया वी रसेवाकार्से । वि यदः वायका मुद्रार्थिया व त्त्रेत्राचे त्त्र्वापते त्युत्पत्ता इसम्याण्यात् सार्वेत्यापते त्युत्तापते स्यूत्याम्यात् स्यूत्राम्यात् स्यूत्याम्यात् स्यूत्राम्यात् स्यूत्याम्यात् स्यूत्राम्यात् स्यूत्यात् स्यूत्राम्यात् स्यूत्राम्यात् स्यूत्राम्यात् स्यूत्राम्यात् स्यूत्राम्यात् स्यूत्राप्यात् स्यूत्राप्यात् स्यूत्राप्यात् स्यूत्रस्यात् स्यूत्रस्यात् स्यूत्रस्यात् स्यूत्रस्यात् स्यूत्रस्यात यन्दर्भः भीषायाद्मस्यात्री त्री विद्यात्री स्थान्तर्भा स्थान्य स्थान्त्र स्थान्तर्भा स्थान्य स्थान्तर्भा स्थानितर्भा स्थानितर्भा स्थानितर्भा स्थानितर्भा स्थान्तर्भा स्थानितर्भा स्थानित्रस्भा स्थानितर्भा स्थानित्रस्भा स्थानितर्भा स्थानितर्भा स्थानित्रस्भा स्थानित्रस्भा स्थानित्रस्भानित्रस्भा स्थानित्रस्था स्थानित्रस्भा स्थानितर्भा स्थानितर्भा स्थानितर्भा स्थानित्रस्भानित्रस्भानित्रस्भा स् तज्ञन्तुःकृत्येत्रयतेःष्ठेरःर्से । (न्यःहेः) सःर्वेदन्यःसन्यःसर्वेदन्यःसः न्द्रे न्ये व्याये न्ये व्याये बे व नगे नते सन्मरम् मुरान्य स्थान के रामा विस्तान के निर्माणका के निर क्रूयःक्रुःधेवःर्दे। दिःक्ष्ररःवः तद्यायः इस्रयःवेः तद्यायः दरः दः द्वरः चः इस्रयः ग्रीः धेव वें। १८८४ पर ५८ देन विषय वा इसमानि सम्मानि धरानुरे लेगार नुरारे ।

प्राचित्राचार्यात्राच

स्विकारायर वी कार्याक्षाकारायर वी विकाराय के क्षेत्र कार्याकाराय के क्षेत्र कार्याकार के कार्याकार के कार्याकार के कार्याकार कार्याकार

र्त् न भ्रापायन्याम् म्हार्याम् वर्षः व

वनानक्षात्माने प्रस्ताने विद्यान से न्या के न

क्षेत्रःश्चित्रः विद्यान्तरः विद्यान्तरः

गात्रा गाहिरा प्रमार में निस्ता

श्चिर्न् मुह्मार्वे अपि विदेश्येव विश्वा विश्वाप्त विश्वाप्त विश्वाप्त विश्वाप्त विश्वाप्त विश्वाप्त विश्वाप्त

षर्श्वरम्भवःग्रीः श्रुः प्रम्दःया

नवे पायर्द्धर्यास्व मे मुन्ते।

यर्द्धरयाः स्व क्षुः वे से सम्प्राप्ता प्रमा । यो सम्य क्षुर्रः हेव स्व द्धर्यः उव क्ष्या स्वा

गुव तर्वेदे कु प्रम् रा

क्र.स.भीय.त्ज्र्यूत्.क्री.थ्री

त्रावाद्याः विश्वाद्याः विश्वाद्यात्र विश्वाद्य विश्वाद्यात्र विश्वाद्य विश्वाद व

ग्रवशमित्रश्वरम्

क्रि. वीच. तस्तुत्वः क्रि. त्रीच. तस्तुः चे स्थान्य क्षेत्राः क्री. क्री. या त्राच्याः क्षेत्रः कषेत्रः कष

इय्रायर क्षेत्र यदे कु प्रमृत्या

क्यःश्चेत् कुः वे से प्रमे प्रमा । प्रमे पा वा प्रमा प्रमा वि वा।

द्रभःश्चैवःपत्नेवःतप्तः त्यानः देवः द्रभःश्चैवः क्रीः श्चैत्यः क्ष्यः त्यान्तः व्यान्तः व्यान्यः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्यः व्यान्तः व्याः व्यान्तः व्यान्तः व्यानः व्यान्यः व्यान्तः व्यान्यः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्यः व्यान्यः

याशुक्षःयः क्रुः दे 'द्या'वी 'दें व' पश्चुं प'वी।

गुरु दर्शे अत्य अहस रु अ महिसमा । मासुस में दमा दे रु अ मासुस मा।

त्र्यानु प्रमृत्या

गहिसारायम्बरामु नभू र पाने

दर्भानुभान्यानस्भादन्भानुःधेद्या

वर्षासाग्चर्यायाने प्रवासेन्।

च.ज.चुव्यक्ष.ज्ञ.च्य.च्युं (ज्ञक्ष.च्यच्यक्ष.ज्ञ), चे.क्ये.च्युं च्युं च्युं

यानुषावी कुरदाषायन्ग्रवाषायायाधिव वि

र्दे व तर्रामानी दे दे देवा की वीट हो हो है ।

म्याश्चेत्रप्रम्यासहस्रागुन्दर्भे निन्नास्त्रियन् माहेस्राग्चे पिहा

वर्ष्य सुरने न्या (वी सक्त केन्) या र वि स

यक्षतः चर्यः क्षेत्रं भूर्य्य्यः यथ्यात्राय्यं व्यव्याय्यः वर्ष्यः वर्षः वर्ष्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्ष्यः वर्षः वर्

र्जून चीर मा स्थित स्थि

ग्रीभाग्नाराय्ह्रवासाने हो हो अपर्हेन सम्बुर्धि । कु.ने हो त्य्यभागु त्या क्षेत्रे भागुदे ग्रीन सान्दर व नदे भ्रे र भ्रे अरत् ने दार भ्रे भ्रम भेर में विकास दिन विवास के निकास के न | त्रे प्यत्। त्रिक्ति के त्री के त्री के त्री के त्री के त्र के त्रा कर त्र त्री के त्र के त भ्रुभावाचेन्वम्भवः) अर्देन्यस्ति म्यून्यते सेस्याचीस्याचीस्याचीस्याचीन्यते हिन्दे वहित्रन्। वहिना हेत्रः के अप्यक्रिया में रहे अप्युप्त अर्थेट प्यस्य यहाट प्राप्त अर्थ प्राप्त स्था के वा प्रमुट प्राप्त हैं। त्रभारच्रभार्त्युः त्र्युः प्रदेश्युं । (नममानिह्नुः मेममाने माने माने माने समाने सम र्वे र र्षे व रायायवर भ्रे अ रावे र भ्रु व र्वे द्वारा विव र्वे । दे रायायार अर्थे र श्वर अर अर या वे रवस्तायार अवर राष्ट्री अर पाये र श्रे अर पाये र यः दरः चयः वच्च अः महिशः मा दरः। कवा अः चयः क्षेत्रः वच्चें देः क्षेत्रः चः चेदः वच्यः विं द्वेष्।) विः से मा दे ने केंद्रः परिः क्षुः यशःग्रदःश्रुभःतुःग्रेदःपदेःदन्भःतुःदग्रुदःश्रेःवेदःभःत्रस्यशःग्रेभःवेदःर्वेषःभःतुद्। विभःवेदः है। यदे सूर्यत्वर्यातु वस्र रहत्या क्षेत्रेयातु हो दि स्थाप्त्र स्थाप्त्र स्थाप्त्र स्थाप्त्र स्थाप्त्र स्थाप्त व्यक्षत्मु द्वासेन्द्रास्यानसम् वास्त्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस् ৢ৴ৼ৾ৢয়৽য়৽য়৽ৼৼ৾ঀৢয়৽য়ৢৼ৽য়৾**ৢয়য়য়৽ঽ৴৾ৡ৾৽৻৴ৢয়৽য়ৢয়৽য়য়য়৽ঽ৴৾য়ৢ৽য়৴য়৽য়৾ঀ৾৽৻য়য়ৢয়৽য়ৢ৽ড়৾**য় र्दे। । (वर्षायान्त्रयावावन्ययान्तावह्रवानान्दाञ्चेवायवे यम्भा) वर्ष्यायान्यानान्त्रयान्त्ययान्त्रयान्त्रयान्त्ययान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्यस्ययान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्यस्ययान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्ययान्त्रयान्त्ययान्त्ययान्त्रयान्त्ययान्त्रयान्त्ययान्त्ययान्त्ययान्त्ययान्त्ययान्त्ययान्त्रयान्त्रयान्त्य वित्रावेशः श्रीभाषाये वित्रा श्रीभाष्ठा हो निष्ठा हो निष नावबरपारा)भ्रेभान्। में भान् हो रायह्य अते वहाँ सम्मादी वहाँ भ्रेभान् हो राया दर्ग वहाँ भान्य वहाँ भान्य वहाँ भान्य वहाँ भान्य हो साम गान्दा श्रुवायात्र्यशाद्वीयस्यात्र्वात्र्यस्यात्र्वात्र्यस्यात्र्यस्यात्र्यस्यात्र्यस्यात्र्यस्यात्र्यस्यात्र् लव.की.विवरकी.वी.वी.वी.विवर्धां विवर्धां वस्थाक्त से स्रोत्ता मान्या मान्या स्रोत्ता । विश्वापत्ति । विश्वापत्ति । विश्वापत्ति । विश्वापत्ति । नन्ना तन्न अंतर व्यान्य र त्यु र नगर्गु न न्त्र ना अर्थे वित्र ग्राट निर्मा तन्न अर्थे ही रिट

गान्द्र हैं हैं ज्ञा भेद हैं।

क्रिशायव्यात्रामीन्यादे स्वादी

न्त्रः क्रीः न्तः व्यवश्यः प्रः न्या । याद्येयाः वेः त्यः प्रः व्यव्यवः प्रः व्यव्याः । याद्येयाः वेः विष्यः व भ्रः स्रः नः भ्रः व्यवश्यः प्रः विष्यः । याद्येयः वेः विषयः विषयः विषयः । याद्येयः विषयः विषयः ।

चेन् कु प्यमानावद परि कु कृ में नि क्रमान दे प्रवस्य नि (मर्मेद द्या) तु मार्य कु पान् प्ट्रेंत्रामाध्येत्रार्दे । (व्ययान्याव्ह्रेंद्रामान्याव्ययान्याः भ्रेत्रामायात्राम्यम् व्ययान्यायायायाः विवया बुन्दर्भकुन्यदे।) यन्भन्यते (वाबन्धेवन्यवा) ज्ञानायवावायायते स्वेन्न्या अर्देन्याया ज्ञाना सःभ्रेश्वास्त्रे स्विरः न्दा होत् कुंदेः (५१%रावादेशः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्व मदे श्रेम् तुर्भाम उत्तु सामाई दादी विश्व भारत है श्रेम प्रतित विश्व श्रेत है ना प्रति सामा प्रति स्व सर्थ्र-अ.र्जेच.मी.मी.योश्रेश.यु.पर्यश्चरी.पह्नय.पन्नीय.पीय.श्वरायश्चरायश्चरायायायायायायायायायायायायायायायायाया क्यः) रु: र्नाः ए: द्वीतः सर्वेरः सवरः धोतः वेति । देः त्यः द्वीतः सन्तेः श्कीरः सः श्केः श्कुः दरः रु यः यहवा र् त्यंत्र ते भेरे र ते के भावा यह रूप हो। र हिर ही है र र तर्य सह है या वर्ष या परि है र यां ते भ्राया अव्याप्तर प्राचिति कु प्रवाणी याहि। प्राव्या वित्र प्राची वार्ष प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र हुःदर्चेद्रायाधेदाया दन्याययाद्वेदायादे नरार्केन्यान्याधेदार्ग्वे न्यायक्यायादे सेन्ने विने दिवा वि क्षु स्म श्रुव की विश्व स्मानु क्षेत्र पार्थिव व नि वि के निवास विद्यास की निवास विवेद मदे हो र में विकाद प्रदेर प्राचिक स्वादेश महिका हो हु प्राचिक स्वादेश महिका हो है का है। प्राचिक स्वादेश स्वाद ऍन्द्रमानेद्रासुननिष्ट्री सुन्द्रिंपद्देन्यासीपदीन्यानेद्रान्यानेद्रमान्द्रिंप्यान्यानेद्रमान्याने याद्रमाञ्जानमाञ्चना अर्थे । नाते नायादे माञ्चे नायाने नायाने नायाने नायाने माञ्चा मान्याने नायाने नायाने नायान

र्थायक्ष्यास्त्रम् अत्यत्त्रक्षेत्रस्ते कुण्यक्षेत्रस्त्रक्ष्यास्त्रम् । इस्रायम्भ्याः

क्रिंश्च्याः त्रिंश्च्याः विश्वेष्ठाः विश्वेष्ठेष्ठाः विश्वेष्ठाः विश्वेष्ठाः विश्वेष्ठाः विश्वेष्ठाः

स्यःश्चेत्रःगुत्रःवर्शेत्रेयःत्र्यः श्चेत्रःश्चेत्रः । श्चित्यः प्रदेशः यात्रेत्रः व्यवायः देयः विवा।
स्यः श्चेत्रः गुत्रः वर्शेतः श्चेत्रः श्चेत्रः । श्चित्यः प्रदेशः यात्रेत्रः व्यवायः देयः यविवा।
स्यः श्चेतः गुत्रः विवा यो याः यव्यवः श्चेत्रः । श्चित्यः यद्यव्यायः वर्षेत्रः । श्चेत्रः यद्यव्यायः स्थेतः श्चेत्रः । श्चित्यः यद्यः वर्षेत्रः वर्षेत्रः । श्चित्यः यद्यः वर्षेत्रः । श्चित्यः यद्यः वर्षेत्रः । श्चित्यः यद्यः वर्षेत्रः वर्षेत्रः । श्चित्यः यद्यः वर्षेत्रः । श्चित्यः । श्चित्यः । श्चित्यः । श्चित्यः । श्चेत्रः । श्चित्यः । श्चेत्रः । श्चेत्यः । श्चेत्रः । श्वेत्रः । श्चेत्रः । श्वेतः । श्चेत्रः । श्वेतः । श्वेतः । श्वेतः । श्वेतः । श

स्ति स्वास्त्र स्वस्ति स्वस्त

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूदःश

याचीत्रायत्राचीत्रायात्र्यात्रायत्राचीत्रायात्र्याच्यात्राचीत्राय्याः भ्रम् । विद्याञ्चीत्रायत्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राचीत्राच्यात्राचीत्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राच्यात्राचीत्राच्यात्राचीत्राच्यात्राच्य

शेससः न्दः शेससः वसः शुहः नः धेत्।। सर्द्धः सः वृह्दः सः वृह्दि वसः विद्या

च्याचा, क्र्यान्तर्थः अक्ष्यः कुर्यः ज्ञान्यान्य प्राप्तः प्रस्ति । विषयः प्रचान्त्रः अक्ष्यः अव्यान्तरः अक्ष्यः विष्यः प्रच्याः विष्यः प्रचान्त्रः विष्यः प्रचान्त्रः विष्यः प्रचान्त्रः विष्यः प्रचान्त्रः विष्यः विषयः वि

मुेव'यश्र'या

मुन्देन्दे निवानि निवासी निवासी स्वासी निवासी निवास विन निमा प्रमार्थिते मुक्ति विषाण्यस्यार्थे । विस्ति निमा स्वीता मुक्ति मुक्ति । विराधरावारावे वा वाकेवावारात्राम् अस्यावारावारावे वार्षावारा विराधरावारावे वार्षावारा विराधरावारा विराधरावारा यन्ता वज्ञमनुःवासुदार्श्वराधेदायन्तासुदार्श्वराधेदानीः क्षेत्रवास्वरावर्षेत्वासानिः रेश्रासासूरादे मित्रेषाधेवार्वे विषाचेरायाद्या तृगाचेदादमाणीषाण्याता के प्रायति मेन्द्रा वै कुः धेव वें। ।रेट पवे क्रेव कें व धेव वें। ।गवव प्राप्त रे क्रेप पर हे पर पवे कुर्ते। मिनुवादी द्वीयायायार्थं अपनुप्तादी वियानी स्पर्ते वियानी स्पर्वायायार्थे यात्रायायार्थे वियानी स्पर्वायायार्थे वियानी स्पर्वायायार्थे वियानी स्पर्वायायाः वियानी स्वर्वे स्पर्वायायाः वियानी स्वर्वायायाः वियानी स्वर्वे स्वरं स्वर्वे स्वरं स ग्री'तिर्राची'ज्ञान'तृःश्चान'ते त्रिंगवेषाश्चीर'वी'क्या व्याप्यात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्या तर्रेन्ने। त्रिःगार्नेवःपाययायया क्युः इस्रयः न्नः क्रीवः इस्रयः याष्ट्रनः यनः के विपार्थेन् के व। श्रुषाया द्वराचराग्रम् येरादी यदे सूरावर्ष्य स्वायन्य ग्रीषा श्रुपाविषा दरानेवा यविषान्ते । यदि ५८। वरःवीः र्द्ध्यः प्रतिवर्षिदः यः चेदः विषः यः ५८। ५वीः र्द्धेरः ५वाः श्रेवाः वेः क्यः ५८। चठना मुक्र-दरःचठना गविःदरःचठनाराधिवःर्वे । द्वोःर्स्टर्गःश्रेवाःवीः मुक्रेवे गदः धेवा

मुव व नाम धिवा विवेशियाम धिव विवेशियाम धिव विवेशियाम धिव विवेशियाम स्थापनी स्यापनी स्थापनी स्यापनी स्थापनी स्थापनी स्थापनी स्थापनी स्थापनी स्थापनी स्थापनी स्य

गात्रा गाहिरा प्रमार में निस्ता

मुेव मुबायर प्रम्

र्ट्रा विद्रेन्द्रस्थायक्ष्ट्रस्थायदेः द्वेन्द्रस्थायाः वेशः विश्वः स्थायः वेशः स्थायः विश्वः स्थायः विद्रम्यः स्थायः स्यायः स्थायः स्यायः स्थायः स्थाय

स्तिवीर-य-यनुष्युं । निकानुर्यू ।

स्वित्र-य-यनुष्युं । निकानुर्यू ।

स्वित्र-य-यनुष्युं । निकानुर्यू ।

स्वित्र-य-यनुष्युं । निकानुर्युं । निकानुर्यूं ।

स्वित्र-य-यनुष्युं । निकानुष्युं । निकानुष्युं निकानुष्युं । निकानुष्य

ग्रव्याम्बर्धः प्रवर्धः प्रश्रवः य

देते खेर स्वरं निविद्या है। (क्ष्या प्रति क्षेत्र स्वरं स्वरं क्षेत्र स

यात्राचे स्याद्र स्थाना स्थान् स्थान्य स्थान्

होत्तर्स् । यद्भान्ने अध्यास्त्रभावत्य स्थान्न स्थान्य स्थान्

क्रियान्तर्ने स्वास्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वस्त्र स्वस्त स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र स्वस्त्र

ग्रवश्याहेश:५व८:धें वसूदःश

सु'नवि'म'ते'सेसस'सेन्'ग्री'र्स्रेसस'प्रह्मा'ग्रिस'ग्री'सून्'ठेम्'स'म्रिस'प्र'सेंग्स'

श्रेश्रभःश्चीः त्राच्याः संव्याः संव्य स्टाः से स्राण्याः श्रेष्ट्रे स्राण्याः स्रित्यः स्राण्याः स्रित्यः स्राण्यः स्रित्यः स्रितः स्रि

*য়ु*ॱनते'नाहेशनादे'र्केशनाद'द्वा'शेशशक्ती'शक्द्रश्यन'दे'श्यवा'रा'ठद'धेद'रा'दे' द्वाः र्श्वे स्व सः वहुवाः वाहे सः श्रीः देः सः श्वाः पः उदः स्पदः स्व द्वाः विः द्वाः वदः स्व द्वाः विः वसः स सु-दर्भे ते सूँस्थायद्वा पहिता ही भूद के वास दर्भे दर्भ से स्था दर वक्षा प्रदे पात्र स ५८.मुभभाविराद्ये.भाविरायास्मभाते। दे.र्याद्ये.सुभाराक्षरायाश्चरायाश्चरायां भारत्ये यःगहिषात्वेषायः प्राप्ता प्रति प्राप्तेष्र राष्ट्र स्रोधिषा ग्री स्राप्तेष्र स्राप्तेष्र स्राप्तेष्र स्राप्तेष् वह्ना नहिना धोद प्राया सेसमा ग्री सर्ह् द्रमाया है साम्रमा मेह्न ग्री मान से हे प्राया से साम्रमा साम्रम साम्रमा साम्रम साम्रमा साम्रम साम्रम यदे ही र दर्। ये सम्मूर सदे हे या शुः भूद हे वा सावाबन ही सानर द्रास हिंद पर दे साम्मूर *ঢ়ৢ*৽য়ৢ৴৽য়৾৾৻য়৻ড়ৢ৾৾ৼয়৽ড়ৢ৾য়৽ড়য়য়৽য়ৢ৽য়৻ড়ৼয়৽য়৽ঢ়৾৽য়৽য়য়ৢঢ়৽য়য়ৢ৾ঢ়৽য়৾য়৽য়য়ৣঢ়৽য়য়৽ড়ৢ৾য়৽ शेसर्भाग्री सर्ह्यत्रामाने साम्यामान्य हत्ते पीदाया श्रूस्य पद्वामाने साम्रीमान्य स्त्रामान र्श्वेस्ररायह्वायित्रात्रीः सून् देवासान्दर्शे त्यास्वेस्ररायह्वायीः सून् देवासा र्श्वेस्थायह्वा विदेशभून हेवा सावाब्द क्वेश नरानु सार्केन पर र्थे दानु से राज से नाय हे स र्भ।

ग्रवश्याहिशः द्यदः में वसूदः या

शुःनशुःश्वाराविःशेश्वराधेःश्वेश्वराधेःश्वेश्वराधेःश्वेश्वराधेःश्वराधेःश्वेशः विद्वार्षःश्वराधेःश्वराधिःश्वराधेःश्वराधेःश्वराधेःश्वराधेःश्वराधेःश्वराधेःश्वर्यःश्वरे

दे 'क्षेत्र'व 'श्रु'चिं क्षेत्र'चिं क्षेत

सद्दे, श्रास्त्रचा कुथ कुथ स्थ्री र सर त्रूर्ट् म् । स्राप्ता श्रूच शास्त्रच स्थ्र स्य स्थ्र स्थ्य स्थ्र स्थ्र स्थ्र स्य स्थ्र स्थ्य स्थ्र स्थ्य स्थ्र स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ

यात्रान्ते अभ्यास्त्री विश्वास्त्र स्त्री स्त्रान्ते स्त्राने स्त्रान्ते स्त

न्ध्रेग्रथः सदेः क्रेवःदी

ग्रवश्याहेश:५व८:में वसूद:या

न्भेग्रायःकेंशः इस्रायस्य स्वर्गः उन्ने।

श्रेणाची इस्रामेश्वराया सेंपाया पार्रारार्रा स्टामी इस्रामेश्वरास्य स्वराद्रा पठ्या च'क्रब्रब्र'भेक्'या भेद'ग्री'क्रब्रम्भेष'ग्री'द्रबेषाष'म्रोक्व'वे'चण'चरुष'चण'बेद'ग्री'र्केष' रुषाम्बुसान्दरनुषामुषासार्ध्वराम् (भ्यानु उत्तरमः) वस्य वर्षास्तर्भे विषयः ने स्वास्तर्भात्रः थः र्सेवाबायान्वायाः इस्रानेबाकी बासी निर्माति । स्वाप्तानिक विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या तशुरावे व दश्चेमार्थाया सुमार्थाया सम्मार्थाया सम्मार्थाया व स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स र्रः अळ्व ने ने त्र प्रति में प्रति चीबासान्त्रीयाबान्तान्त्रान्त्रवादात्वेवान्त्रीबाबान्त्रते हीन्त्रम् विन्ध्रे क्रिंबाह्यस्य स्टन् धेन् ग्री :इंअप्नेषा ग्री :न्क्षेपाषा मुक्ते खेव :वं त्र्वा अप्याप्त विषय । विष्युः । विष्युः । विष्युः । विष्यु वतरात्त्वासानुकान्देवार्धेरात्यूराने। तन्नवानुःक्केन्यतार्देवानेन्त्वायते ने ग्री र्देव ग्राप्त ने प्ता मी बार हा बार हु हो है न पत्या धराव वया धराव वया धराव वया धराव वया धराव हो हो न यर त्युर है। ह्वा यते द्रें वर्षर विवासित स्वासित स्वा भ्रेन्यान्त्रे त्रेषात्वाताचाधेन्यते भ्रेन्यायरात्यूरार्रे लेषान्चायते भ्रेन्यायरात्यूरार्रे लेषान्चायते भ्रेन्यायरात्यूरार् देशवाद्यात्रम्याच्याचे दिः र्वे सेदायते चित्रप्ते चित्रप्ते प्रमायते प्रमायते प्रमायते स्वर्था स्वर्था चित्रप् क्किन्यते क्रिवादी साधिवादीं विषान् प्राप्तर तर्देन सादिन सेवाबाय धिवादीं।

ब्रेन्कुःबेश्वः ब्राचन्याः सॅरः यस्या

सक्रेस्र प्रद्राप्य प्रमुद्रा

त्रियायायाः स्त्रेत् स्त्रेत् स्त्रात् स्त्रेत् स्त्रात् स्त्रात् स्त्रेत् स्त्रात् स्त्रेत् स्त्रात् स्त्रेत् स्त्रेत् स्त्रात् स्त्रेत् स्त्रेत्

चलवःत्राद्धः भ्रेवः त्रिवः त्रिः त्रिवः त्रिः त्रिवः त्रवः त्रिवः त्रवः त्रव

मुव मुबादाबानु क्री दायते स्वा

मुन्योगयन्यम्यः मुन्यतः स्वा

श्चे त्याद्व न्याया विष्या विषया विषया

देश्चित्रायान् स्वेन्त्रायान् स्वान्त्राच्यान् स्वान्त्रायान् स्वान्त्राच्यान् स्वान्त्रायान् स्वान्त्रायान्त्रयान्त्रायान्त्रयान

देश्चे मुंचे लाग्ने चार स्वाका साम्याले से विकास मान्य स्वाका स्

गात्रा गाहिरा प्रमार में निस्ता

त्रायाः स्त्रेन्त्रायः स्त्रेन्त्रयः स्त्रयः स्त्रेन्त्रयः स्त्रयः स्त्यः स्त्रयः स्त्यः स्त्रयः स्त्यः स्त्रयः स्त्यः स्त्रयः स्त्यः स्त्रयः स्त्यः स्त्रयः स्त्यः स्त्रयः स्त्यः स्त्रयः स्त्य

> বরি'ড়য়'য়য়য়য়ৼৼয়য়য়৸য়ৢৼয়য়৸॥ য়য়ৢয়'য়ৢয়য়য়য়ৼৼয়য়৸

कृत्वत्वत्वत्व्व्या) यदे त्यासद्धर्यस्य दे साम्याक्ति है स्थ्रिस्य स्वत्वत्व्य विद्या स्वत्वत्व्य विद्या स्वत्य स

सक्रेस्र प्रद्राप्य प्रमुद्रा

|देवे:ब्रेर:ब्र्रॅंब्रब्य:वहुना:वदे:न्निक्ष्य:ब्रेब्य:ब्रेंब्य:वद्दे:ब्रेट्य:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:ब्रेंव्य:वदे:ब्रेट्य:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:ब्रेंड्य:व्यक्ष:ब्यक्ष:व्यक्यक्ष:व्यक्ष:व्यक्ष:व्यक्ष:व्यक्ष:व्यक्ष:व्यक्ष:व्यक्ष:व्यक्ष:व्यक

देशन् ने न्यान्ति ने स्वान्ति स्वानि स्व

ग्वित् ते ग्वेश से द्वा त्यश हो।

अञ्चर्यात्रेव अञ्चर्या विवादि क्षेत्र स्थाप निर्म्भ व क्ष्र्य स्थाप निर्म्भ व क्ष्रिया स्थाप विवादि क्ष्रिया स्थाप विवाद क्ष्रिया स्थाप क्ष्रिया स्थाप विवाद क्ष्रिया स्थाप विवाद क्ष्रिया स्थाप विवाद क्ष्रिया स्थाप क्ष्रिय स्थाप क्ष्य स्था स्थाप क्ष्य स्याप क्ष्य स्थाप क्ष्य स्थाप क्ष्य स्थाप स्थाप क्ष्य स्थाप क्ष्य स्थाप स्थाप क्ष्य स्थाप स्थाप स्थाप क्ष्य स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप

ग्रवश्याहेश:५व८:में वसूदःग

बन्नेन्य्या) श्रे. श्रे-प्रांति वित्तं स्त्रे स्त्राची स्त्रे स्त्रे स्त्राची स्त्रे स्त्रे स्त्राची स्त्रे स्त्रे स्त्राची स्त्रे स्त्रे

त्वा विकासिक्ष्यान्त्राच्यान्त्रच्याच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्याच्यान्त्याच्यान्त्रच्याच्यान्त्रच्याच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्याच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्याच्यान्त्रच्यान्त्याच्यान्त्याच्यान्त्याच्याच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्त्याच्यान्त्रच्यान्त्रच्यान्यत्याच्यान्यत्याच्याच्याच्याच्याच्याच्य

यः तर्दे द्वाःश्चेश्वः तः श्चेशः विश्वः द्वाः स्वाः तः त्वाः विश्वः विश

सक्रेसमायहसान्ययान् ग्रुट्या

द्रिय्तःकुरि-रियटः क्रियाः ज्ञान्तः त्याः ज्ञान्तः त्यायः क्षेत्रः त्याः व्यावायः त्यायः क्षेत्रः त्याः व्यावायः त्यायः क्षेत्रः व्यावायः व्यावः व्यावायः व्यावः व्यावायः व्यावः व्यावायः व्यावः वयः व्यावः विष्यः व्यावः व्यावः विष्यः व्यावः विष्यः व्यावः विष्यः व्यावः विष्यः व्यावः व्यावः विष्यः व्यावः विष्यः व्यावः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष

कुते के व के ज्ञान कि व के कि

क्रुंदे:क्रेंत्र(द्यानिहेशर्य:र्नायश्चेंत्र)त्रे:यन्, हिंत्यन् रत्येः

रुष्टि कि. दर्वीट. य. क्षारा याष्ट्रेश विर्वीट त्या स्वीर सप्ट स्थारा जी।

गात्रा गाहिरा प्रचार में निस्ता

चःद्वाःवीबात्ववूदःचःत्यबायुरःपदेःवात्ववाषः(वद्वाःक्वेबःव्यः)श्चेदःवःवेदःक्वेदःक्विदेःक्विदेःक्विः वःइस्रायासः चेतः द्वी ।इस्रायासः वे त्वोतायात्रात्रा क्रीतः चेत्रः हेवः चेत्रः ववसः चेतः त्रा र्ह्रेव.तपु.ह्रीय.टेट.पत्रजानीट.ह्रीय.बुबात.टेट.। वट.ह्येज.बुबादेपु.क्रुवामट.त.र्ह्या यविषायाम्भरषाते। क्रीप्टाइषाअद्यवाहेवप्टादी क्रुवाकीकप्टादायवेयापायषा वाशिटबारे। यञ्चबारीयुःवाञ्चवाबार्ज्ञरायाचाबरारीःश्चेरातपुःश्चेरार्या श्चेता र्नेव लगर्सेन अल्प्र क्रीय प्रति क्रिय इस्त्र होता स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व श्रे किन्यते कुं ध्येव प्रते छेर निर्म केंद्र विषय किन्यते छेर देश यानविवानु भेषायर मुर्ते । दे स्वय्णण्यान नश्चिया सुर्वा सु वावबायान्ता वावबायात्रवेवाचरान्त्रेन्यते क्वावबुद्धान्त्रव्यूरार्ने विप्तूरावाद्वया त.र्ज.रू.ट्र.ट्रेच.धु.वुट.क्रिय.वु.व्या.लुच.तपु.क्षुर.पवुट.च.क्षब्य.ग्रीब.धु.पवीट.च.लब. युर्यये चेत्रपते कु चेत्रये ज्ञान्त्र विषये विषये के अध्यापाये अध्यापाय विषये पर्विट.लट.सर्व.क्ष्ये.क्वै.पर्च्यात्रालुय.त.र्टटा भीय.पर्ज्य.लुय.त.रटा अर्क्षट्य.तर्रः श्चे व्यवस्य प्राप्त विष्टुर प्राप्त वा वि दियो से प्राप्त वि स्व प्राप्त वि स्व प्राप्त वि स्व प्राप्त वि स्व

वर्श्वराश्चराह्म अवाध्यायवार्द्धवार्।।

ळव.जा.श्र्वायान्त्र अ.अधिय.क्रं.याच्याची)चु.शा.लीच.चूं। अपा.श्रव्याचीन्त्र.क्रंच्याचीन्त्रच्याचित्रच्याचीन्त्रच्याचीन्त्रच्याचीन्त्रच्याचीन्त्रच्याचीन्त्रच्याचीन्त्रच्याचीन्त्रच्याचित्रच्याचित्रच्याचित्रच्याचित्रच्याचित्यचित्रच्याचित्यच्याचित्रच्या

सक्रेस्र प्रद्राप्य प्रमुद्रा

वर्त्वुद्रःचः इस्रश्रः ग्रीः दे द्वसः ग्रेग्।

दे अ वर्ष के वर्ष सम्प्रम्य

दे'याधणानुवानुवानुवास्य सम्बन्धान्य वि

यर्देर्धिर्द्रवोद्धः स्वोद्धः । विश्वेत्रश्चः स्वाद्धः स्वाद्धः स्वाद्धः स्वाद्धः स्वाद्धः स्वाद्धः स्वाद्धः स यात्वय्ययः स्वाद्धः स्वाद्धः स्वाद्धः । विश्वेत्रसः स्वाद्धः स्वाद्धः स्वाद्धः स्वाद्धः स्वाद्धः स्वाद्धः स्वाद

यर्देन् प्रदेशियम् अर्थेन् प्रेस्त्र स्थान्य स्थान्त स्थान स्था

नात्रानाहेश-५नटः में नसूत्रा

वन्याग्री सेस्यावस्या उन् क्सामान दुः महिसासु वन् सार्थे ।

द्रश्चा ।

प्रकारम् ।

प्रकार

स्वाराधायह्नासदेळे वित्राह्मा स्वार्धात्राह्मा स्वर्धात्राह्मा स्वार्धात्राह्मा स्वार्धात्राह्मा स्वर्धात्राह्मा स्वार्धात्राह्मा स्वर्धात्राह्मा स्वर्यात्राह्मा स्वार्यात्राह्मा स्वर्यात्राह्मा स्वर्यात्राह्मा स्वर्धात्राह्मा स्वर्यात्राह्मा

युष्ठेशःसमुः कृटःशुष्ठश्वःच्याः कृष्टं शूट्रशःखः कृष्णेश्वः वृद्धः स्वयः स्वय

कृत्यस्य अध्ययः श्रुं रावि स्त्रे । विष्यां) वे प्यक्षे श्रुं त्य स्वर्य श्रुं रावि स्वर्य श्रुं रावि स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वर

यात्रायाहेशः द्वरः में वसूत्राया

क्रं मच्चर्रं नुवाक्ष्यं क्रं महिकाक्ष्यं महिकाक्ष्यं

र्ने तर्ने र्ना क्वें त्यानविषा दश्ये अअयान स्वी हे अ क्वें न शुः श्रे अअयान स्व हु स्वा श्वें द्वा स्वी

वर्रे दः से सस द्वी च वस्त से सस द्वा।

यात्रक्षत्र विद्यात्र क्षेत्र स्थात्र क्षेत्र क्षेत्र स्थात्र क्षेत्र स्थात्य क्षेत्र स्थात्र क्षेत्र स्थात्र क्षेत्र स्थात्र क्षेत्र स्थात्य

देवे भ्री स्वावाया ग्री से स्वया स्वावाया ग्री से स्वया स्वावाया ग्री से स्वया स्वय

गात्रा गाहिरा प्रमार में निस्ता भा

द्वार्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्य द्वार्यात्राच्याः स्वार्याच्यात्रच्यात्रच्यात्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्या

ने दे नकुन में किंदा यथा।

भ्री-न्यो-नादी-नादु-न्या-प्यमा । ने-प्यम-नादी-भ्री-नादीन्या

पर्ट्राचित्रेश्चर्वाचित्रेश्चर्वाचेश्चर्वाचेश्चर्वाचेश्चर्वाचेश्चर्येश्चर्याचेश्चर्याचेश्चर्याचेश्चर्येश्चर्याचेश्चर्येश

पर्ट्ना क्रिन्ज्ञानिह्ना न्यतः स्राध्यस्य स्वाप्तः स्वापतः स्वाप्तः स्वापतः स्वापतः

यन्त्रीनराम्त्रेन्यम्पर्मा दिख्यस्यह्मार्चेष्यस्यस्यन्त्र्र्त्

श्रुणः श्रेस्रश्यात्र श्रुपः त्रान्त स्टानीः स्टान्त स्टान्त स्टान्त स्टानीः स्टानीः

ग्रवश्याहेशन्यरमें यसूत्रम्

स्ति । विदेश्व स्त्राची से स्वर् ने स्

ग्राह्म मार्थित स्थान दे मार्थित हिन्दी स्थान स्थान

नञ्चेनसम्पन्तमुन्यसन्यसन्

याच्चायात्रः श्रुं न्यादे त्रश्चे त्रयात्रः व्याक्षेत्रः याच्याय्यात्रः व्याक्षेत्रः याच्याय्याः याच्याय्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्यायः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्यायः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्याः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याय्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यायः याच्याय्यः याच्याय्यायः याय्याय्यः याय्याय्यायः याय्याय्यायः याय्याय्यः याय्याय्यायः याय्याय्यः याय्याय्यायः याय्याय्यायः या

ग्रवश्याहेश:५वट:में वसूद:मा

नःगिर्देशःगाःवज्ञुदःनवेःध्रेरःर्देश गाल्वनःन्गाःशेःवज्ञुदःनवेःश्रःसःनवेदार्देशः

अ'नङ्क्षेत्रर्भ'त'ते'त्राह्युर्भ'व्यर्भ'र्ह्या | दे'त्यर्भ'तुत्रा'ह्रे'''''''''

.....ग्रुग्रास्टि । देखेख्यार्वे

सक्रेस्र १८६ स. ८५१ स. ८५१

त्वीट.तथ.४८.वी.थ.त.वोश्वेश.क्षे.वैवो.व्र्.वे.पवीट.तथ.क्षे.रे.वी.व्र्यो।

याञ्चयात्राञ्चर्यात्राच्यात्रा वहुवयायावियार्वरावियार्वरावया)स्रेस्रयात्र्वाप्त्रवापत्रवाप्त्रवापत्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवाप्त्रवापत्रवाप्त्रवापत्रवापत्रवाप्त्रवापत् यायर्द्धत्यायान् नियापित्रेयाम् । त्यापित्रायान् वित्रायान् वित्रायान् वित्रायान् वित्रायान् वित्रायान् वित्राय चबार्याची बाया वाबुआद्या बूँ अबायर तहुवाया व बूँ र वृत्यित व वावा अदा पितृषान्ता (वण्येनःश्चिंनःयःवैःश्चिंयःयस्याः) श्वेंस्रवायम् पित्रायस्याः विवायस्य वि व'म्बिम्बाबाबाद्येद'ग्री'द्यो'प'क्षेत्र्वार्थेप'वि'व'त्यब'दर्देद'पदि'र्वेव'र्वेदबार्खन्वावेष'द्रद्र' चःचानेन्यःस्व रह्नं वः न्या वास्त्रह्मं वास्त्र वास्त् पञ्चीत्रयास्त्रअञ्चीत्रञ्जेतात्रयान्। पञ्चीत्रयास्त्रअञ्चीत्रञ्जेतात्रयान्। पञ्चीत्रयास्त्रअञ्चीत्रज्ञेतात्र्यान्। ब्रूँशबात्र-प्रदेवात्र-वार्यवाय्वायाः ग्री-देवात्र-ब्रीन् श्रीट्र-प्रिवः लबाव्यवायः श्रेनः

नश्चेनश्रास्थ्यान्त्राने ने ने निवा

गात्रा गाहिरा प्राप्त स्वा

यद्धीर्स् ।

यद्धीरस् ।

यद्धीरस् ।

यद्धीरस् ।

यद्धिर्याय्याद्धेय्यस्य ।

यद्धिर्याय्यस्य ।

यद्धिर्यस्यस्य ।

यद्धिर्यस्य ।

यद्धिर्यस्यस्य ।

यद्धिर्यस्य ।

यद्धिर्यस्यस्य ।

यद्धिर्यस्य ।

यद्धिर्यस्य ।

यद्धिर्यस्

र्सेन मन्त्रे यम में यम खा

भ्रे क्रिंच माने क

सक्रेस्र प्रत्य प्रत्य प्रत्य

য়ৢवॱয়ৢ৾ॱळे: (बर्षेबलब्बाक्षक्षें) चर्षेबत्वक्ष्में) श्रें र्श्वेयः प्रत्ति । व्याप्ति व्यापति व्याप्ति व्यापति विष्यति व्यापति व्यापति

त्या.चु.चु.चुत्रश्रव.व्यक्त.व

श्रेश्रवादीः श्री प्रमित्राया

(अञ्चर्षे भु त्यम् प्रायान्यु अर्थन्तर्ति दे वि

यहःयहिश्यःने न्याः हे स्वरः यहिश्यः विश्वः । विश्वः श्चेतः श्चेतः स्वरः यहः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः

ग्रवश्यादेशः द्वरः से वसूत्रः य

यदःशेसशःनदुःगहेशःरीःदेःदगःवेःहेःत्रःयदःनत्रःदी ।देःसूरःग्रुशःवयःनेःवा विश्वश्वात्रीश्वर्यं देवो च देश्वर्यायात्रेशः (विष्टेशः)श्वः देशः (वर्षः ह्या) वर्षट्याये हिर्द्यः विश्वर्यः चर-चर-श्चेन⁻हेन-सळसमार्श्चेन-चदे-ळे-वर्षन-च। नाड्यम्भासेन-सु-श्चे-श्चेन-सळसमार्श्चेन-चदे-ळे-र्षन-चर्वा स्ट्वेन-सून-वै.क्वें रामार्ग्यभग्नमार्वमाराक्ष्यामार्थभामार्थभावे सेनामार्था) क्वें रामायार्था वि.सं.मार्थभामार्यभामार्थभामार्यभामार्थभामार्थभामार्थभामार्थभामार्थभामार्थभामार्यभामार्थभामार्थभामार्यभामार्थभामार्यभामार यशसेन्दें लेवा व्हेन्यवे विस्रायन्त्री निर्मायन्त्री निर्मायन्त्रीत् सेन्या उत्तु सुरायस्त्र निर्माया यम्भैयश्राख्यात्रायसूत्राची श्रेस्यात्रायत्वेराष्ट्री (द्यावहावच्चराळ्या) यदे ख्रीरार्ट्रा विते खे ग्राम् वे व्याप्य भ्रीत्राय्य भ्रीयाय प्राप्ति (वर्षे क्ष्य स्वायः) र्से द्रायस्य प्राप्ति वर्षेत्रे यविश्वाद्य (श्रुवाद्य श्रेष्य) श्रुवाद्य श्रेष्य श्रेष र्दे वे त्र म् न्याया के प्रायम् व वर्षे देशे स्थाया महिन्या प्रायम् स्थाया महिन्या व स्थाया स्थाय के स्था के स्थाय के स्था के स्थाय के स् [दे:द्र:पर्वेद:श्रेश्नश्रद:दे:दे] (म्बयःश्चद्रायः द्रःम्बरःयः श्वेष्यश्यः विद्यश्रवः विद्यश्यः विद्यश्यः विद्य लुब्राचामावर्षयम्भात्रमान्त्रमान्यान्यान्या । यमुद्राच्या । यमुद्राच । यमुद्राच्या । यमुद्राच । यमुद्राच्या । यमुद्राच्या । यमुद्राच्या । यमुद्राच्या । यमुद व वे श्रें दायमान दरश्राया से समा ग्राम से दाय हो ता सुन से से से साम से मार्थित हो । देवे यशन्तर्ने वर्ते रावे प्रो मो सरानसायहे ग्रस्स सम्बन्ध स्त्री ।

न् स्वर्त्ता विक्रास्त्रम् स्वत्वविक्षेत्रम् स्वर्त्त्वे स्वर्त्वे स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्रम्यः स्वर्त्त्रम् स्वर्त्रम् स्वर्त्त्रम् स्वर्त्त्रम्यः

सक्रेस्र १८६ स. ८५१ स. ८५१

स्वक्चर्-र्ट-कुं-ले्स्।)

स्वक्चर्-र्ट-कुं-ले्स्।)

स्वक्चर्-र्ट-कुं-ले्स्।)

स्वक्चर्-र्ट-कुं-ले्स्।)

स्वक्चर्-र्ट-कुं-ले्स्।)

स्वक्चर्-र्ट-कुं-ले्स्।)

स्वक्चर्-र्ट-कुं-ले्स्।)

स्वक्चर-र्ट-कुं-ले्स्।)

कुं.ल्-स्बुं.चतः-तुं स्यस्वुं.वस्यस्युं, त्यस्यस्य कुं.स्वे स्वस्यस्य कुं.स्वे स्वस्य स्वस्य कुं.स्वे स्वस्य कुं.स्वे स्वस्य कुं.स्वे स्वस्य कुं.स्वे स्वस्य कुं.स्व स्वस्

(नक्षणहेशन्द्रके सुन्द्रके सुन्द्रक

गात्रा गाहिरा प्राप्त स्वा

स्त्रित्तं स्वार्म् स्वार्म स्वार्म

बेबबाचडुःग्रेबाग्रीःहेन्यायम्न

स्रेसस्य न्युः मृहेस्य ग्रीः ह्रेन्य न्यन्य प्राप्ती। विस्रस्य मुस्य स्था न्युः मृहेस्य स्था न्युः म्यान्य स्था न्युः मृहेस्य स्था न्युः स्था न्युः स्था स्था स्था स

क्ट्रंट्रा र्श्नेस्थान्यस्य विषयः विषयः विषयः विषयः स्वाप्तः स्वयः स्वय

वर्ने सूर वर्ने न विस्र सार्श क्षुर र्से वा रावे के वर्ने न रावे रहें वा से रावे रहें वा से रावे रावे रावे रावे नश्चेनअपने अंअअपनि प्यतः सुदः नः विवा अर्देव प्राक्तु नः विदेश सेंद्र अपने प्रवेश निविधान (वर्र्-पवेः)न्ने नः भ्रे अः र्वे नः ग्रे : र्वे नः मः त्रु नः दे । वर्रे नः विस्तरा सुः न्ने : रू नः द्वो'च'भ्रुअ'र्झेच'ग्री'र्झेच'स'द्वुद'च'द्रद' दर्देद'सदे'स्री'द्वो'चर्याद्वर्शययात्र्यस्य दावस्थान्त्रियान्त्रेयान्त्रेयान्त्रेयान्त्रेयान्त्रम् क्षेत्रम् क्षेत्रम् क्षेत्रम् क्षेत्रम् क्षेत्रम् क्षेत्रम् श्ची र पर्दे द परि हिंद से दश उद श्ची से समासदि द शुम्र द से समा हुना नी हिंदा पासूर से प्यूद मायमानामाना मार्थित हो। सर्देव दु ह्यूरामाने साधिव हो। (दे प्यम् दुना गारे ना उराहेदा मार्थित <u>भृपामक्रेपमा न्वो सक्तापद्रिप्यदे में क्षेयाकृत्यं स्थापत्र</u> स्थापत्र स्थापत्य स्थापत्र स्थापत्य स्थापत्र स्थापत्र स्य `र्वेन'ग्रे'र्वेन'म'नाशन'र,'ह्रेन'र्ने । विंत्रसमित्रेश'त्रश्चर्यात्रेश'त्रमासुं त्रवर'ने'हेन'नाशन'र,'ह्रेन'ने'शून'वर्देन'मत्रे'नेन' यांत्रे वॉदः नुःश्चेश्वायश्यायन्द्रात्रस्था । वाञ्चवाश्वायश्चेत्रस्य श्चेत्रस्य स्वत्यायन्त्रस्य स्वत्यायन्त्र ॻः पर्दे प्राये केंद्र सेंद्र अठद विदेश विदेश वाया स्टर् हो दि । परे प्यान पर से प्राप्त हो । वा स्वाय से प्राय यरः भ्रे_. प्रते : कें प्रतः श्रेन पा बुवाया की 'र्वे दार्थे रूप एक प्रतः प्रते प्रते कें द्रायि कें प्रतः प्रते कें प्रते के प्रते हेन्द्री । वर्देन् प्रवे से प्रवो प्रायदेव पुःशुरु वया प्रवापकेंस व्यापका कृत्रकार प्रायसका वाह्य सामित केंद्र रान्द्र्भ्यायदे क्रिं प्रवट्यायम् प्रमुक्ति प्रवट्या । वर्षेत्रयदे क्रिं स्थाउत्ये प्रवी प्रायमित्रया वर्षे वर्षे प्रवि वर्षे वर्षे

ग्रवश्याहेशन्यरः में प्रसूदः या

याक्षेत्र। बनासेन्र्सून्यन्त्र्न्त्वामी र्बेन्यः न्याया स्ट्रास्त्रः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स

ब्रह्म्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यम्।)

विद्वावस्यक्षयक्षय्यम्।)

विद्वावस्यक्षयक्षय्यम्।)

विद्वावस्यक्षयक्षय्यम्।

विद्वावस्यक्षयक्षयः

विद्वावस्यक्षयक्षयः

विद्वावस्यक्षयः

विद्वावस्यक्यक्षयः

विद्वावस्यक्षयः

विद्वावस्यक्यवस्यक्यवस्यक्यक्षयः

विद्वावस्यक्षयः

विद्वाव

ग्रा व्याया क्षेत्र अप्ताया स्थाया स्थाय

র্মুব'ঘ'অ'বন্ধি''''''

र्श्चित्र प्रते स्रोधिक स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्

सक्रेस्र प्रद्राप्य प्रमुद्र श

.....अवात्यःने॥

(विवास्त्रं निवाने) स्विवास्य (वर्ते निवास्त्रं निवास्

नात्रानाहेश-न्नर में नसूत्राम

पश्चित्तः संक्ष्यं स्वास्त्र प्राप्त स्वास्त्र स्वास्त्

न्नर-र्यः इस्रमः न्रायः स्वाध्यः स्वाधः स्वाधः

सक्रेस्य प्रस्य प्राप्य प्रमुद्रश

च्यान्त्रं नश्चर्यः विश्वः च्यान्त्रं व्याप्तः विश्वः विश

र्स्य अर्देव प्रते अर्दे प्रते प्रवेश प्रते प्रवेश प्रते स्वर् स्वरं स्

धीमार्चे र-प्र- त्यूना धें प्रके प्रवेषान मान्य त्य प्राप्त हैं वे प्र- द्वार में वर्षे शानु कें मा

5 គ្នាទ្ធក្ស marjamson618@gmail.com